देश विदेश की लोक कथाऐं — एशिया–चीन–दंत कथाऐं–1 ः

चीनः दंत कथाऐं और विश्वास–1

अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Cheen: Dant Kathayen Aur Vishwas-1 (China: myths and beliefs-1)
Cover Page picture: The Great Wall of China
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of China

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

चीनः दंत कथाऐं और विश्वास–1 7

1 पान कू की रचना 9

2 दस लाल कौए 12

3 नू वा ने आसमान की मरम्मत की 15

4 बच्चा जिसे कोई नहीं चाहता था 22

5 स्वर्ग से चावल 31

6 पहला बिल्ला 39

7 समुद्र खारा क्यों 49

8 पानी का भूत और मछियारा 58

9 सौदागर का बदला 77

10 ज़ोर से बोलने वाली स्त्री 91

11 चूहे की शादी 102

12 धब्बे वाला हिरन और चीता 112

13 कुआन यिन की भविष्यवाणी 121

14 कुआन यिन 134

15 चॉग कू लाओ का इम्तिहान 147

16 बादशाह के हुक्म 154

17 गधे की ताकतें 165

18 सूरज और चॉद झील 172

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

चीनः दंत कथाऐं और विश्वास–1

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा। इस तरह एशिया संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसको सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते है जनसंख्या में दो देश – चीन और भारत और क्षेत्रफल में रूस। चीन अकेले की जनसंख्या **1355** मिलियन से ज़्यादा है।

इस देश की सभ्यता भी दूसरी सभ्यताओं, जैसे भारत की मोहनजोदड़ो सभ्यता, यूरोप की रोमन सभ्यता, दक्षिण अमेरिका की माया सभ्यता आदि की तरह बहुत पुरानी है। चीन की मुख्य नदी ह्वॉग हो[1] है और चीन की सभ्यता यहीं से शुरू होती है। इसको यहॉ की "पीली नदी" भी कहते हैं। इसमें हर साल बाढ़ आती हे और उस बाढ़ में बहुत सारे लोग मारे जाते हैं। चीन का मुख्य खाना चावल है शायद इसी लिये वहॉ चावल से सम्बधित कई लोक कथाऐं हैं। इस पुस्तक में भी चावल की एक दंत कथा शामिल की जा रही हैं जो यह बताती है कि चावल चीन में कैसे आया। चीन के मुख्य उद्योग रेशम और चीनी मिट्टी के बर्तन हैं।

चीन का साहित्य भी बहुत पुराना लिखा हुआ है। इनकी लोक कथाऐं और दंत कथाऐं तो **2000** साल से भी ज़्यादा पुरानी हैं। उनकी कथाऐं लिखे और कहे रूप में तब से अभी तक चली आ रही हैं जब पिरैमिड की खबर बहुत नयी थी और ब्रिटेन के स्टोनहैन्ज[2] का तो तभी हाल ही में पता चला था। चीन के साहित्य में ये कथाऐं बहुत मिल जाती हैं। चीन का पुराना साहित्य वहॉ के राजाओं के समय का है। वहॉ के शुरू के लोग, ताओ और बौद्ध लोग[3], कहानियों के जरिये ही अपनी बातों को फैलाना ज़्यादा ठीक समझते थे।

इससे पहले हमने चीन की लोक कथाओं की एक पुस्तक प्रकाशित की थी – "चीन की लोक कथाऐं" जिसमें वहॉ की कुछ लोक कथाऐं दी गयी थीं। इस पुस्तक में हम वहॉ की कुछ दंत कथाऐं और विश्वासों की कहानियॉ दे रहे हैं। वहॉ की कहानियों में भूत, मरे हुए और स्वर्ग के जीव हमेशा से ही रहे हैं। इनमें सब कथाऐं अंग्रेजी की एक पुस्तक[4] से ली गयी हैं। उस पुस्तक में सैंतीस कहानियॉ हैं। उसमें से अठारह कहानियॉ "चीनः दंत कथाऐं और विश्वास–1" में प्रकाशित की जा रही हैं और शेष उन्नीस कहानियॉ इस पुस्तक के दूसरे भाग में प्रकाशित की जायेंगी।

आशा है कि चीन देश की ये दंत कथाऐं अपने हिन्दी भाषा भाषियों को चीन के विश्वासों के बारे में काफी जानकारी देंगी।

---

[1] Hwang Ho – it is the 6th largest river of the world. It is called "Yellow River" also. Since every year it brings flood in it, it is also known as "The Sorrow of China".

[2] Pyramids of Egypt and Stonehenge of Great Britain

[3] Tao people and Bauddh people

[4] "Chinese Myths and Legends", translated by Kwok Man Ho, 2011. Available in English at the Web Site : https://www.scribd.com/doc/57934877/Chinese-Myths-and-Legends

संसार के सात महाद्वीप

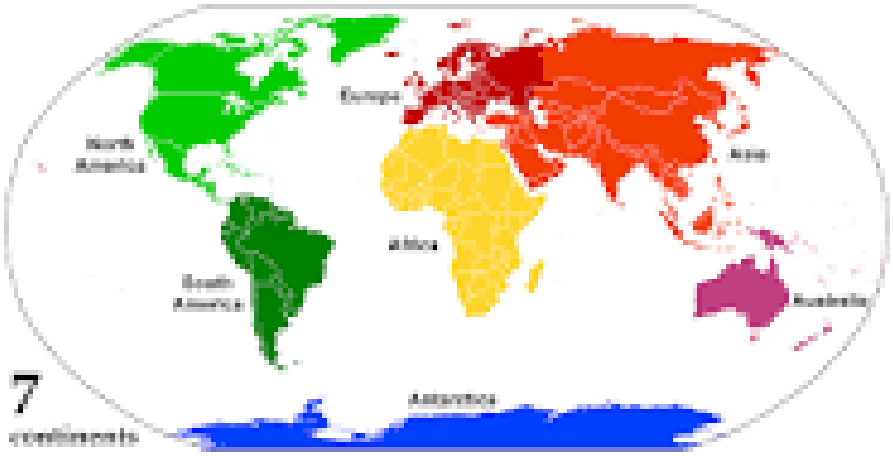

Some terms used in Chinese folktales –

-- Cheng Huang -- the District god

--Crab Guard – these crabs are the guards of the Sea Dragon King who lives in the Sea

--Eastern Sea

--Jade – a semi-precious stone mostly found in South-eastern countries of Asia

--Jade Emperor – the Emperor of Sky

--Sea Dragon King – the King of the Eastern Sea

--Yen Lo Wan – The Emperor of the Sea

--Yangtzi River –

A famous and the longest river in Asia flowing in one country. It is the third longest river of the world after Nile of Africa and Amazon of South America.

--China's Great Wall –

The Great Wall of China is counted among 8 man-made wonders of the world because of being the longest structure ever built by humans. Rather than being one long continuous wall, the Great Wall of China is made up of a number of different sections. These sections were built by various dynasties over a long period of time from stone and other materials. Its main purpose was protection against attacks and invasions from the North. It stretches around 3,915 miles (6,300 kms) in length. If you measure the length of all the different sections of wall, the distance is more like 13,670 miles (22,000 kms).

Its widest section is around 30 ft (9 mtrs) wide and its highest point is around 26 ft (8 mtrs) high. Its first parts were built over 2000 years ago. A large number of workers lost their lives while building the wall. Major rebuilding of the Great Wall took place during the Ming Dynasty that began in the 14th century. Earlier sections of the wall were made from stone, wood and compacted earth. Rumours that astronauts can see the Great Wall from the Moon with the naked eye are a lie.

1 पान कू की रचना[5]

जब समय शुरू शुरू ही हुआ था तो वह एक बहुत बड़ा अंडा था – इतना बड़ा अंडा कि उसके साइज़ के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। उसका कोई आकार नहीं था। उसके अन्दर अँधेरा ही अँधेरा था और उसके अन्दर बहुत ही उथल पुथल हो रही थी।

उस अंडे के अन्दर ही पान कू[6] था। पान कू जो सारे आदमियों का पुरखा था – यानी पहला आदमी। वह उस उथल पुथल से ही पैदा हुआ था और अँधेरा खा कर ही उस आकारहीन अंडे के अन्दर बड़ा हो रहा था। बिना बाहर की ज़िन्दगी के बारे में कुछ जाने बूझे वह उस काले कूकून के अन्दर अठारह हजार साल तक रहा।

एक दिन अचानक से लगे एक झटके से वह जाग गया पर वहाँ अँधेरे की वजह से उसे कुछ भी दिखायी नहीं पड़ रहा था। उस अंडे में फँसे रहने पर उसको शुरू शुरू में तो डर लगा पर फिर उसको गुस्सा आ गया।

गुस्से में आ कर वह अपनी मुट्ठियाँ इधर उधर फेंकता हुआ उस हलचल में से हो कर दौड़ा तो उसने उस अंडे का काला सख्त छिलका तोड़ दिया।

---

[5] Pan Ku's Creation – a myth from China, Asia
[My Note: This story is about the Creation of the world.]
[6] Pan Ku – the first man according to Chinese Mythology

अंडे का छिलका टूटते ही उसमें से पान कू को वह रोशनी दिखायी दी जो कितने समय से उसने नहीं देखी थी। उस अंडे के टूटते ही उसमें से वह सब कुछ जो कीचड़ और काला था ऊपर की तरफ उठ कर नीचे धरती पर गिर पड़ा।

उसी समय से धरती और आसमान दोनों बिल्कुल अलग अलग हो गये। पर पान कू को यह विश्वास नहीं था कि रोशनी और अँधेरा दोनों उस हलचल में एक साथ नहीं रह सकते थे जहाँ से उन दोनों का जन्म हुआ था।

इसलिये उसने अपने सिर से आसमान को ऊपर टिके रहने के लिये सहारा दिया और धरती को अपने पैरों के नीचे दबा कर रखा ताकि वे आपस में मिल न जायें।

जैसे जैसे हर साल निकलता गया धरती और आसमान और ज़्यादा दूर होते गये और पान कू का शरीर भी उनकी दूरी के अनुसार उनको उनकी जगह पर रखने के लिये खिंचता चला गया।

जब अठारह हजार साल बीत गये तो आसमान का सबसे ऊपर का हिस्सा और धरती का तला दोनों ही दिखायी देना बन्द हो गये पर पान कू उन दोनों को बिना थके अपने हाथों पर और पैरों के नीचे दबा कर रखे रहा ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह हलचल फिर से वापस आ जाये।

फिर हजारों साल गुजर गये और वह हर चीज़ जो चमकीली थी और साफ थी वह सब चीज़ें तो हमेशा के लिये आसमान में रह गयीं

और जो कीचड़ वाली और अँधेरी चीज़ें थीं वे सब चीज़ें धरती पर रह गयीं। यह देख कर कि दुनियॉ अब सुरक्षित थी पान कू थकान की वजह से गिर पड़ा और मरने लगा।

उसकी आखिरी सॉस हवा और बादल बन गये। उसकी आवाज बिजली की कड़क बन गयी। उसकी बॉयी ऑख आसमान में उड़ गयी और सूरज बन गयी। उसकी दॉयी ऑख भी उसकी बॉयी ऑख के पीछे पीछे आसमान में उड़ गयी और चॉद बन गयी।

पान कू के मरे हुए शरीर का ऊपरी भाग और जोड़ चौरस मैदान और चट्टानी पहाड़ बन गये। उसका खून तुरन्त ही नदियों के रूप में बह निकला। उसके शरीर के दूसरे हिस्से सड़कें बन गये और उसकी मॉस पेशियॉ मिट्टी बन गयीं।

उसके घने सफेद बाल और दाढ़ी तारे बन गये। उसकी खाल और रोंए जमीन पर गिर पडे जो घास और फूल बन कर बढ़ने लगे। उसकी हड्डी और दॉत जमीन पर गिरे तो लाल और जेड[7] जैसे खनिज पदार्थ बन गये। उसके शरीर का पसीना ओस और बारिश बन कर गिरे।

इस तरह पान कू ने अपना सारा शरीर दुनियॉ को दे दिया जिससे और दूसरे लोगों को ज़िन्दगी मिली।

[7] Ruby and Jade – Ruby is a precious stone and Jade is a kind of semi-precious stone. See the picture of Jade above

2 दस लाल कौए[8]

सबसे पहले यह दुनियॉ अँधेरे में थी। जो लोग पूर्वीय शहतूत के पेड़[9] के साये में रहते थे उन्होंने तो कभी रोशनी देखी ही नहीं थी। इसलिये वे तो सोच भी नहीं सकते थे कि रोशनी होती क्या है।

सो दस लाल कौओं ने मिल कर जिनके सबके तीन तीन पंजे थे इस अँधेरी दुनियॉ में रोशनी लाने के लिये अपनी खतरे से भरी यात्रा शुरू की।

वे एक खतरे वाले और बिल्कुल ही ऊबने वाले रास्ते पर बहुत दूर तक उड़ते रहे। काफी देर बाद उन्होंने अँधेरे में कुछ चमकता हुआ देखा।

वे अब देवताओं के राज्य में आ गये थे जहॉ बहुत चमकीली रोशनी थी और गर्मी थी। वे लाल कौए अपनी इस नये राज्य की खोज पर बहुत खुश थे।

वे रोशनी और गर्मी के बारे में जानने के लिये वहॉ बहुत दिन तक रहे। जैसे जैसे उनकी उस राज्य के बारे में जानकारी बढ़ती

---

[8] Ten Red Crows – a myth from China, Asia. Adapted from the Web Site: http://americanfolklore.net/folklore/2012/07/ten_red_crows.html
Adopted, retold and written by SE Schlossler

[9] Translated for the word “Mulberry tree” - In Hindi it is called Shahatoot. Silk worms live on this tree (of white mulberry tree) subsisting on its leaves. Its tree can go up to 50 feet high. It has three color 2-3 cms long fruits – black, red and white. Sometimes it has long fruits also. Surprisingly its both male and female trees grow separately. See its picture above.

गयी उनके शरीर भी बदलते गये। अब उनके शरीरों में से कई रंग की चमकीली रोशनी निकलने लगी थी, साथ ही गर्मी भी।

जब उनको इस राज्य के सारे राज़ मालूम हो गये तो वे दसों लाल कौए धरती की तरफ चले। वे सब ऐसे चमकीले थे जैसे तारे। उनके शरीरों से निकलती हुई गर्मी भी बहुत तेज़ थी।

जो लोग पूर्वीय शहतूत के पेड़ के साये में रहते थे उन्होंने उनके आने के बारे में सबसे पहले तब जाना जब उनको दूर धरती और आसमान मिलने की जगह पर उनकी थोड़ी सी चमक दिखायी दी।

और उसके बाद तो बस सारी दुनियॉ ही नीले आसमान के सामने बहुत सारे रंगों की रोशनी से चमक गयी।

पर जैसे जैसे वे कौए पास आते गये वह रोशनी नीली सफेद होती गयी और उसके साथ ही उनकी गर्मी भी बहुत ज़्यादा हो गयी। वह गर्मी इतनी ज़्यादा थी कि वह जिस किसी को भी छूती वह चीज़ जल जाती।

जब वे दस कौए उस शहतूत के पेड़ पर बैठे तो सारी धरती सूखने लगी और चारों तरफ गर्मी फैलने लगी। जो उस पेड़ के साये में रह रहे थे वे सब भी इस गर्मी से डरने लगे।

वे सब उन दस लाल कौओं की रोशनी और गर्मी न सह सकने की वजह से दर्द से अपनी ऑखें बन्द करते हुए हरी हरी घास पर लोटते हुए चिल्लाये — "हमें बचाओ, हमें बचाओ।"।

तीर चलाने में होशियार यी[10] ने उनकी पुकार सुनी और देखा कि वे दस लाल कौए तो उनके लिये रोशनी की बजाय मौत ले कर आये हैं सो उसने अपनी कमान उठायी, उस पर नौ तीर रखे और एक के बाद एक कर के नौ कौओं को मार दिया।

हर कौआ नीले आसमान से नीचे गिर गया और मर कर अँधेरे में गायब हो गया। पर यी ने दसवें कौए को छोड़ दिया ताकि दुनियॉ से रोशनी और गर्मी बिल्कुल ही गायब न हो जाये।

आज भी वह दसवॉ लाल कौआ रोज पूर्वीय शहतूत के पेड़ से उठता है, सारी दुनियॉ का उड़ते हुए एक चक्कर लगाता है और फिर लौट कर उसी पेड़ पर बैठ जाता है।

इस तरह से वह दसवॉ कौआ अब सूरज के रूप आसमान में रहता है और दुनियॉ को रोशनी और गर्मी देता है।

[10] Yi

3 नू वा ने आसमान की मरम्मत की[11]

यह बहुत पहले की बात है जब धरती और आसमान एक हुआ करते थे। उस समय न कोई सूरज था न कोई चॉद। हवा, बारिश और बिजली भी तब तक बनाये नहीं गये थे। पहाड़, नदी, पेड़ भी तब तक कहीं नहीं थे।

पहले आदमी पान कू[12] ने इस दुनियॉ में जान डाली और इस धरती पर सारी चीज़ें पैदा कीं। जैसे ही धरती और आकाश पैदा हुए वे अलग अलग हो गये। और अठारह हजार साल के बाद तो वे इतने अलग हो गये कि वे मुश्किल से ही दिखायी देते थे।

पान कू ने आसमान की चाल को ध्यान से देखा तो वह यह देख कर डर गया कि यह आसमान तो किसी भी दिन धरती पर गिर पड़ेगा।

सो उसने एक पेड़ से उसके रेशे निकाल कर उसकी एक रस्सी बनायी और उसके चार टुकड़े कर के आसमान के चारों कोनों में बॉध दिये।

फिर उसने उन रस्सियों को इतना खींचा इतना खींचा जिससे वह आसमान बिल्कुल सीधा सपाट चौरस हो गया और फिर उसने उन रस्सियों को दुनियॉ के चारों कोनों से बॉध दिया।

---

[11] Nu Wa Repairs the Sky – a myth from China, Asia.

[12] Pan Ku – the first man according to Chinese Mythology

और ज़्यादा पक्का करने के लिये कि कहीं आसमान धरती के ऊपर न गिर पड़े उसने लकड़ी के चार मोटे मोटे लट्ठे जमीन में गाड़ कर उनको आसमान के चारों कोनों के नीचे भी लगा दिया।

उस समय केवल स्वर्ग, धरती और पान कू ही थे। जब पान कू मर गया तो सूरज चॉद, पहाड़ नदी, बारिश धूप और सब चीज़ें उसी के शरीर और सॉस से बनायी गयीं।

पान कू ने आखीर में नू वा नाम की एक स्त्री[13] को पैदा किया जो धरती पर एक अकेली स्त्री थी। वह बहुत सुन्दर थी। उसके बाल बहुत काले थे। उसका शरीर दो काले ऐंठे हुए सॉपों का बना हुआ था।

उसका काम धरती पर खून और मॉस के आदमी बनाना था न कि उसके अपने जैसा कोई आदमी बनाना।

वह रोज नदी की कीचड़ और पानी मिलाती और उसकी मिट्टी से आदमी और स्त्रियों की शक्लें बनाती। जैसे ही उसकी गर्म सॉस उन शक्लों को छूती वे शक्लें ज़िन्दा हो जातीं। इस तरह से वह धरती पर आदमी बना रही थी।

एक दिन नू वा नदी के किनारे आराम कर रही थी तो उसको सरकंडे[14] के खेत में एक रस्सी का टुकड़ा दिखायी दे गया। उसने उसको उठा

[13] Nu Wa named woman – the first woman on the Earth according to Chinese Mythology. See her picture above.

[14] Translated for the word “Reed”. See its picture above.

लिया और अपने पास वाले कीचड़ वाले पानी में डुबो दिया। कुछ पल बाद उसने उसको पानी में से निकाल लिया और हिला हिला कर सुखा लिया।

उस रस्सी को हिलाने से उसके पानी की बूँदें इधर उधर घास पर जा गिरीं। पानी की हर बूँद जो भी घास पर गिरी एक पल के लिये तो वह जवाहरात की तरह चमकी पर फिर वह एक आदमी में बदल गयी।

आदमी बनाने का यह आसान तरीका देख कर नू वा ने उसी शाम सैंकड़ों आदमी बना दिये। इस तरीके से आदमी को बनाने ने नू वा की ज़िन्दगी बहुत आसान कर दी। फिर अगले कई सालों में तो उसने वैसी ही पानी के बूँदों से लाखों करोड़ों आदमी और स्त्रियॉ पैदा कर दीं।

पर जो भी आदमी उसके हाथ से पैदा हुए थे वे तो सब बहुत अक्लमन्द, हिम्मत वाले और अमीर थे जबकि जो आदमी इन पानी के बूँदों से पैदा हुए थे वे सब कमजोर थे।

पहले तो नू वा अपने इस काम से सन्तुष्ट थी कि उसने इस धरती पर काफी लोग पैदा कर दिये थे पर बाद में उसको यह महसूस हुआ कि इन सबका ज़िन्दा रहना कितना मुश्किल था।

क्योंकि धरती पर बहुत सारे ज्वालामुखी थे। जंगलों में बहुत सारे जंगली जानवर हो गये थे। नदियॉ खतरनाक मछलियों की बहुतायत से रुक गयी थीं।

हालॉकि नू वा भी अब बूढ़ी और कमजोर हो गयी थी फिर भी उसने उन सबको बुलाया जिनको उसने अपने हाथ से बनाया था।

उसने उनको चाकू और भाले दिये। वे सब उन चाकू और भालों को ले कर धरती के कोने कोने में गये। उन जंगली जानवरों को मारा, ज्वालामुखियों को शान्त किया और नदियों और जंगलों की सफाई की।

उन्होंने धरती को उन कमजोर लोगों को रहने के काबिल बनाया जो खुद अपनी रक्षा नहीं कर सकते थे।

वे लाखों करोड़ों आदमी जो नू वा ने बनाये थे उन आदमियों में उसने देखा कि दो आदमी – चुआन सू और कुंग कुंग[15] सबसे ज़्यादा हिम्मत वाले थे। वे दोनों ही बहुत अच्छे लड़ने वाले थे और वे बहुत साल तक आपस में लड़ते भी रहे।

हालॉकि नू वा को यह देख कर बहुत दुख होता था कि उनकी लड़ाई में यह धरती कितनी खराब हो गयी थी और कमजोर लोग भी बहुत मारे गये थे पर फिर भी वह उनकी लड़ाई को बड़े चाव से देखती थी।

एक शाम चुआन सू और कुंग कुंग दोनों एक दूसरे के सामने आये और आपस में इतने ज़ोर से लड़ना शुरू किया कि जो भी पेड़ उनके रास्ते में आया उनकी तलवार से उसके दो टुकड़े हो गये।

[15] Chuan Hsu and Kung Kung

इसके अलावा रात तक उन दोनों के घावों से इतना सारा खून बह निकला कि जिसकी एक बहुत बड़ी झील बन गयी।

इसके बाद कुंग कुंग अपनी तलवार को और ज़्यादा न चला पाया और इसकी वजह से हार कर अपने घुटनों पर बैठ गया। कुंग कुंग का घमंड चूर हो गया था। वह अब अपने शहर में किसी को अपना मुँह दिखाने के लायक भी नहीं रह गया था।

सो वह अकेला ही चीन के उत्तर पश्चिमी पहाड़ों की तरफ चल दिया। वह वहाँ के दूर दूर के गाँवों में भी पहचान तो लिया गया पर वहाँ के लोगों ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया।

यह सब देख कर अब उसके पास अपनी जान लेने के अलावा और कोई चारा नहीं रहा। सो वह पू चू शान पहाड़[16] से बनी खाई में कूद पड़ा और नीचे गिरते ही मर गया।

जब वह नीचे गिरा तो उसके गिरने से वह सारा का सारा पहाड़ हिल गया। पहाड़ के हिलने से पहाड़ टूट गया और उसके बड़े बड़े पत्थर उस खाई में गिर पड़े।

इससे बहुत सारे पेड़ भी टूट टूट कर गिर पड़े। वे पत्थर और पेड़ इतने सारे थे कि वे गिर कर वहाँ तक पहुँच गये जहाँ तक धरती के उत्तरी और पश्चिमी किनारे पर आसमान को सहारा देने वाले लकड़ी के खम्भे खड़े थे।

[16] Pou Chou Shan Mountain in China

वे पेड़ जा कर लकड़ी के उन खम्भों से जा टकराये जो आसमान से रस्सियों से बॅधे हुए थे। इससे रस्सियॉ टूट गयीं और आसमान उन्हें तोड़ते हुए नीचे गिरने लगा। सूरज भी नष्ट हो गया और दुनियॉ अॅधेरे में डूब गयी। यह सब देख कर स्वर्ग में पान कू बहुत दुखी हुआ।

धरती पर नू वा भी बहुत दुखी थी कि जिन लोगों को उसने अपने हाथ से बनाया था वे शान्ति से नहीं रह सके। वह यह देख कर और भी बहुत दुखी थी कि उसका अपना घर भी सब गर्म हो गया था।

हालॉकि किसी और को बदलने के लिये तो अब बहुत देर हो चुकी थी पर कम से कम धरती को बचाने के लिये आसमान की मरम्मत करने के लिये अभी बहुत देर नहीं हुई थी।

नू वा ने एक कछुआ[17] पकड़ा, उसको मारा और उसके चारों पैर धरती के चारों कोनों में रख दिये ताकि वह खुद और दूसरे लोग भी हमेशा यह जान सकें कि वे किस दिशा में इशारा कर रहे थे।

फिर उसने एक काला ड्रैगन[18] मारा और उसके शरीर को आसमान के अन्दर जो झिरी खुल गयी थी और उसमें से जो पानी निकल रहा था उसको रोकने के लिये उसे तब तक इस्तेमाल किया

[17] Turtle – turtle lives both on land and in water. See its picture above.

[18] Dragon - a mythical monster generally represented as a huge, winged reptile with crested head and enormous claws and teeth, and often spitting fire.

जब तक उसको एक ऐसा पत्थर नहीं मिल गया जो उसमें ठीक से लग सके।

वह ऐसे पत्थर को चीन में चारों तरफ कई महीनों तक ढूँढती रही जिसको वह वहाँ आसमान में लगा सके पर उसको वैसा पत्थर कहीं मिल ही नहीं रहा था। जैसे जैसे दिन बीतते जा रहे थे ड्रैगन का शरीर पानी के बोझ से नीचे लटकता जा रहा था। इस बीच आसमान से बारिश भी होने लगी।

आखिर उसको पहाड़ की एक गुफा के अन्दर जा कर वैसा पत्थर मिला जैसा वह चाहती थी। उसको देखते ही वह पहचान गयी कि वही वह पत्थर है जो हमेशा के लिये आसमान की मरम्मत कर सकता था। उसने वह पत्थर ऊपर तक उठाया और पानी को रोकते हुए उसको ठीक जगह पर लगा दिया।

बारिश रुक गयी और आसमान में एक बार फिर से सूरज निकल आया। नू वा जानती थी कि अब उसका मरने का समय आ गया था सो उसने धरती पर एक सबसे बहादुर और सबसे ज़्यादा मजबूत आदमी को ढूँढने की कोशिश की तो उसकी नजर चुआन सू पर ही पड़ी।

अपने मरने से पहले उसने उसको अपना वारिस और बादशाह बना दिया। उस समय के बाद से चीन के बादशाह को यह कहा गया कि वह स्वर्ग और धरती पर रहते हुए लोगों में मेल जोल रखे।

4 बच्चा जिसे कोई नहीं चाहता था[19]

यह हजारों साल पहले की बात है जब चीन में लोग हल चलाना या खेती करना नहीं जानते थे। उन दिनों वे लोग केवल शिकार पर ही ज़िन्दा रहते थे।

हर गर्मी के मौसम में वे शिकार की पार्टियॉ बनाते और जंगलों और पहाड़ों पर शिकार करने का हफ्ते भर का प्रोग्राम बनाते। अगर उस समय में उनके ये प्रोग्राम अच्छे रहते और काम करते तो उस शिकार से उनकी सारी बरसात और सारे जाड़े निकल जाते।

उनका यह भी विश्वास था कि उनकी किस्मत स्वर्ग के देवता पर निर्भर करती थी इसलिये वे सुबह शाम स्वर्ग के देवता की पूजा जरूर करते थे।

उस समय बादशाह की राजकुमारी दस साल की थी जिसका नाम था चिऑग युआन[20]। वह बहुत होशियार थी, मेहनती थी और अपना काम बहुत ध्यान से करती थी।

एक सुबह जब वह जंगली बंजर पहाड़ी के पास स्वर्ग के देवता की पूजा कर रही थी तो उसने वहॉ पैरों के कुछ निशान देखे जो वहॉ तक जा रहे थे जहॉ तक उसकी नजर जाती थी।

[19] The Child No One Wanted – a myth from China, Asia.

[20] Chiang Yuan – name of the Princess

पैरों के उन निशानों की बहुत बड़ी लम्बाई और चौड़ाई देख कर उसको बहुत आश्चर्य हुआ कि इतनी बड़ी क्या चीज़ हो सकती थी जिसके पैरों के निशान इतने बड़े हों।

उसने झुक कर उन पैरों के साइज़ की अपने छोटे छोटे पैरों के साइज़ से तुलना की तो उसका तो पूरा का पूरा पैर उस पैर के निशान के केवल अँगूठे में ही आ गया।

यह देख कर वह कुछ घबरा तो गयी पर डरी नहीं। उसने उन निशानों के पीछे पीछे चलना शुरू किया तो वे पहाड़ के ऊपर जा रहे थे फिर वहाँ से उतर कर नीचे घाटी में जा रहे थे।

वे निशान अचानक एक अकेली पड़ी चट्टान पर आ कर रुक गये जिस पर जंगली घास उगी हुई थी। उसने वहाँ किसी ऐसी छिपने की जगह ढूँढने की कोशिश की जहाँ उसको कोई देख न सके पर वहाँ उसको कोई भी ऐसी जगह दिखायी ही नहीं दी जहाँ वह छिप सकती। फिर भी वह एक जगह छिप कर खड़ी हो गयी।

जब वह सन्तुष्ट हो गयी कि वहाँ वह सुरक्षित थी तो वह उस चट्टान के सहारे बैठ गयी और सो गयी। पर एक बहुत ही साफ सपना देख कर वह जल्दी से उठ भी गयी।

उस सपने में एक हिरन उससे कह रहा था — "मैं स्वर्ग का देवता हूँ। मैंने हर सुबह और हर शाम तुम्हारी प्रार्थनाओं को सुना है। तुम बहुत छोटी हो पर तुम्हारे अन्दर उतनी हिम्मत है कि जो काम मैं तुमको देने वाला हूँ वह तुम ठीक से कर पाओगी।"

सपने में ही चिऑग युआन उसके सामने झुक गयी और स्वर्ग के देवता से पूछा कि वह उससे क्या कहना चाहते हैं।

देवता ने कहा — "तुमको जल्दी ही पता चल जायेगा।"

और यह कह कर वह देवता गायब हो गये। चिऑग युआन ने देवता की एक झलक देखने की कोशिश भी की पर वह केवल उनकी छाया ही देख सकी क्योंकि वह बहुत चमकदार थे।

उनकी बहुत चमकीली रोशनी से अपनी ऑखों को बचाने के लिये उसको अपनी ऑखों पर हाथ रखने पड़े। उसने उनको पुकारा भी पर वह चले गये थे।

वह जब जागी तब भी उसके हाथ उसकी ऑखों पर उनको रोशनी से बचाने के लिये रखे हुए थे।

अब तक अँधेरा होने वाला हो रहा था। जहॉ वह लेटी हुई थी वहॉ ठंडी हवा उसके शरीर को काटती हुई चल रही थी। वह वहॉ से पैरों के उन बड़े बड़े निशानों के सहारे सहारे तारों की रोशनी में रास्ता देखती हुई वापस घर चल दी।

उस सपने के बाद से वह अपने अन्दर एक नयी ताकत महसूस करने लगी थी। और आगे आने वाले दिनों में तो वह सपना बजाय धुँधला पड़ने के और भी ज़्यादा साफ होता गया।

देवता के उससे बात करने के ठीक नौ महीने बाद उसने एक बेटे को जन्म दिया। पर क्योंकि उसने महल में अभी तक किसी से

भी शादी नहीं की थी बादशाह से ले कर नौकर तक सभी ने इसको एक बुरा शकुन समझा।

इस बच्चे को बुरा समझा गया और राजकुमारी के अलावा कोई और दूसरा इस बच्चे को छूने को भी तैयार नहीं था क्योंकि उनका विश्वास था वह बच्चा जरूर ही उनके ऊपर कोई आफत ले कर आयेगा।

चिऑग युआन अपने बच्चे के लिये लड़ने के लिये अभी बहुत छोटी थी और बादशाह को उसको छोड़ने के लिये मना भी नहीं कर सकी।

उसके परिवार वाले बच्चे को ले कर एक ठंडे और एक ऐसी जगह चले गये जहॉ कोई नहीं रहता था। और उस बच्चे को वहॉ छोड़ कर वे लोग घर चले आये।

वहॉ उसको मरने के लिये छोड़ने से पहले उन्होंने उसका नाम ची[21] रख दिया। ची एक ऐसा नाम है जो चीन में किसी ऐसी बहुत ही बेकार की चीज़ को दिया जाता है जिसको फेंक देना चाहिये।

उनको नहीं मालूम था कि जहॉ उन्होंने उस बच्चे को छोड़ा था वहीं पास में जानवरों का एक झुंड चर रहा था।

जब ची वहॉ अपनी पहली रात को उस ठंड में लेटा हुआ था तो कुछ बैल उसके पास उसको ठंड से बचाने के लिये आ कर लेट गये और गायों ने उसको दूध पिलाया।

[21] Chi – a Chinese name

चार दिन के बाद महल से शिकारियों का एक झुंड वहॉ शिकार करने के लिये आया तो उन्होंने एक बच्चे की रोने की आवाज सुनी। उन्होंने जा कर देखा तो उनको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जो बच्चा उनके राज्य पर आफत लाने वाला था वह तो वहीं पर पड़ा था और अभी तक ज़िन्दा था।

उन्होंने सोचा कि वे उसको मार कर ही रहेंगे सो उन्होंने उसको एक चमड़े के थैले में रखा और उसको इतने घने जंगल में ले गये जहॉ पर सूरज की रोशनी वहॉ के पेड़ों के पत्तों में से भी छन कर नहीं आ सकती थी।

वहॉ उन्होंने ची को नम पत्तों पर लिटा दिया जहॉ जहरीले सॉपों के आने की उम्मीद बहुत ज़्यादा थी क्योंकि वे सॉप सड़ी हुई पत्तियों पर ही ज़िन्दा रहते थे।

स्वर्ग के देवता ने ची की देखभाल की। उस जंगल के किनारे पर ही एक लकड़हारा लकड़ी काट रहा था। उसने किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनी तो वह तेल का लैम्प लाने के लिये तुरन्त ही घर दौड़ा गया और जब उसे ले कर वह वापस आया तो वहॉ उसने एक खोखले पेड़ के पास एक बच्चा लेटा हुआ देखा।

वह बच्चे को उठाने के लिये बढ़ा ही था कि उसके उस बच्चे को उठाने से पहले ही उस पेड़ पर से एक अजगर उतरा और उस बच्चे की तरफ लालची निगाहों से देखने

लगा। वह अपनी लपलपाती जीभ बार बार उस बच्चे की तरफ बढ़ा रहा था।

वह अजगर करीब करीब पन्द्रह मिनट तक उस बच्चे पर हमला करने के लिये उसको धमकाता रहा पर कोई अनजानी ताकत उस बच्चे को बचाती रही और वह अजगर उससे दूर ही रहा।

इसी समय एक चीता वहॉ आया तो वह अजगर कुंडली मार कर एक शाख पर बैठ गया। पर अब चीते की बारी थी।

भूखा चीता भी उस बच्चे की तरफ भूखी नजरों से देखता रहा और अपने होठ चाटता रहा पर उसकी भी बच्चे की तरफ बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई। आखिर वह भी वहॉ से खाने की खोज में कहीं और चला गया।

इस सारे समय में वह लकड़हारा झाड़ियों में छिपा रहा और चुपचाप सब देखता रहा। अब वहॉ कोई जानवर नहीं था और जंगल भी शान्त था तो वह बच्चे की तरफ बढ़ा, उसे उठा कर अपने बुने हुए कम्बल में लपेटा और उसे घर ले गया।

पर उस लकड़हारे के घर में भी बच्चा खतरे से बाहर नहीं था।

इस अजीब बच्चे की खबर बादशाह तक भी पहुॅची। बादशाह को बच्चे के बारे में अभी भी यही विश्वास था कि वह बच्चा उनके लिये ठीक नहीं है सो उसने अपने सिपाहियों को उस लकड़हारे के घर भेजा कि वे उस बच्चे को वहॉ से उसके पास ले आयें।

बादशाह के चौकीदार बच्चे को मारने से डरते थे कि कहीं ऐसा न हो कि उन पर कोई बुरा जादू पड़ जाये या उन पर कोई आफत आ जाये सो अबकी बार उन्होंने उसको एक बहुत ही ठंडी नदी के किनारे छोड़ दिया। उनको यकीन था कि रात होने से पहले पहले तो वह वहॉ जम ही जायेगा।

नदी के पास रहने वाली चिड़ियें और जानवर सभी ठंड से बचने के लिये अपने अपने घरों में दुबके बैठे थे। और वहॉ और भी कोई ऐसा आदमी नहीं था जो उस बच्चे की देखभाल करता। सो एक बार फिर स्वर्ग के देवता ने ही उसकी देखभाल की।

समुद्री चिड़ियों[22] का एक झुंड वहॉ उड़ता हुआ आया जहॉ वह बच्चा लेटा हुआ था। हालॉकि उस बच्चे की सफेद पोशाक बर्फ के रंग में बिल्कुल मिल रही थी फिर भी उन चिड़ियों की तेज़ आखों ने ची को देख ही लिया।

वे चिड़ियें उड़ कर नीचे आ गयीं और अपने पंखों से उसको ढक लिया। सारी रात वे उसको अपने पंखों के नीचे गर्मी देती रहीं।

वे तो उसके पास दूसरी रात भी रहने के लिये तैयार थीं पर वे एक तीर से डर गयीं जो एक शिकारी ने उनकी तरफ चला दिया

[22] Translated for the words “Sea Gulls”. See their picture above.

था। यह देख कर कि उनको कोई आसानी से मार सकता था वे वहॉ से उड़ कर दूसरी जगह चली गयीं।

जब वे समुद्री चिड़ियें वहॉ से चली गयीं तो हवा बहुत ज़ोर से चलने लगी और ची को ठंड लगने लगी। वह बहुत ज़ोर से रोने लगा।

जिस शिकारी ने उन समुद्री चिड़ियों पर तीर चलाया था उसने बच्चे के रोने की आवाज सुनी तो वह वहॉ आया जहॉ बच्चा लेटा हुआ था। उसने देखा कि वहॉ तो वाकई एक बहुत ही छोटा बच्चा बर्फ में लेटा हुआ है।

उसको लगा कि किसी ने उस बच्चे को वहॉ मरने के लिये छोड़ दिया है सो उसने उसको उठाया और वह भी उसको अपने घर ले गया।

उसने राजकुमारी के उस बच्चे के बुरे शकुन के बारे में कुछ भी नहीं सुना था सो वह बच्चा उसके घर में रह कर उसके अपने बच्चों के साथ उसके अपने बच्चे की तरह से पलने बढ़ने लगा।

बहुत साल बाद ची जब बड़ा हो गया तो वह अपने गॉव के आस पास की तेज़ हवा से भरी पहाड़ियों पर और खाली घाटियों में अकेला काम करता था। अपने तजुर्बे से उसको पता था कि वहॉ के कौन से पौधे जहरीले थे और कौन से नहीं।

उसने वहॉ बीज बोना और फसल उगाना भी सीखा। उसको पता था कि कब बीज बोना चाहिये और कब जमीन को ऐसे ही

छोड़ देना चाहिये। इस तरह से कई साल काम करने के बाद उसने वहॉ की खाली जमीन को हरी भरी लहलहाती जमीन में बदल दिया।

वहॉ का हर आदमी चाहे वह अक्लमन्द हो या बूढ़ा सभी ची से इस खेती को सीखने के लिये उसके पास आने लगा। उसकी यह जानकारी एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक फैलने लगी और बहुत जल्दी ही सारे प्रान्तों में दालें, चावल, मटर, गेहूँ और तरबूज आदि होने लगे।

ची से यह सब सीखने के लिये लोग हफ्तों तक चलने के लिये तैयार थे। जल्दी ही वह स्वर्ग और धरती के बीच की एक कड़ी के नाम से मशहूर हो गया।

अब रोज ही गॉव के लोग स्वर्ग के देवता की पूजा करने लगे और उनको भेंट चढ़ाने लगे। जब वे चावल उबालते तो स्वर्ग के देवता को धन्यवाद देने के रूप में उसकी भाप को आसमान तक जाने देते।

बाद में ची ने अपना गॉव छोड़ दिया और देश में खेती करते हुए, पढ़ाते हुए और अपना परिवार बनाते हुए घूमने लगा।

और कई साल बाद चीन में जब चू साम्राज्य[23] आया तो हर साल ची की देखभाल में वहॉ बहुत अच्छी फसलें उगने लगीं।

[23] Chu Empire – 1030 BC–223 BC

5 स्वर्ग से चावल[24]

यह बहुत पहले की बात है जब कुछ लिखा नहीं जाता था और चीन की जमीन जंगलों से भरी हुई थी। वहॉ चावल का कोई खेत नहीं था, कोई दूकान नहीं थी, कोई बाजार नहीं थे और कोई सड़कें भी नहीं थीं।

बस सब जगह जंगलों में खानाबदोश और जानवर घूमते रहते थे। वे भी केवल फल और बैरीज़[25] खा कर ही अपना पेट भरते थे जो जंगलों में बहुतायत से उगती थीं।

एक बार वसन्त के आखीर में हर बार की तरह से बारिश का मौसम शुरू तो हुआ, पर हर बार की तरह से वह खत्म नहीं हुआ जैसा कि लोग उम्मीद कर रहे थे। बल्कि बारिश रुकी ही नहीं, चलती रही और चलती रही और वह दो महीनों से भी ज़्यादा चलती रही।

खानाबदोशों ने पानी से घबरा कर पहाड़ों में बनी हुई गुफाओं में शरण ले ली। जंगल बरबाद हो गये और बहुत सारे जानवर उस पानी में डूब गये।

[24] Rice from Heaven – a myth from China, Asia.

[25] Berries are the small fruits, with or without stones in them... See their picture above,

किसी तरह से धीरे धीरे पानी बरसना रुका। पेड़ दिखायी देने लगे और खानाबदोश भी गुफाओं से निकल कर बाहर आ गये। जानवर जिन्होंने ऊँची जगह शरण ले ली थी वे भी अब दिखायी देने लगे।

सबसे पहले खरगोश दिखायी दिये, फिर गिलहरियॉ और फिर चीते। सब उस गर्म जमीन पर खाने की तलाश में थे पर चीते वहॉ बहुत सारे थे और वे सारे में दिखायी देते थे।

वे जो कुछ भी उनको दिखायी दे जाता था या जो उनके रास्ते में आ जाता था उसी का शिकार कर लेते थे और वही खा जाते थे।

आदमियों को अपना खाना ढूँढने के लिये पहाड़ों की गुफाओं में से निकलना पड़ता था पर सारे जंगल में चीतों के घूमने की वजह से वे बाहर भी सुरक्षित नहीं थे। यहॉ से बहुत दूर पूर्वीय समुद्र[26] में

एक टापू था जिस पर जेड बादशाह[27] का राज्य था। देवता और अमर लोग जो इस टापू पर रहते थे वे आदमियों की मुश्किलों को देख रहे थे। उनको उन लोगों पर दया आ गयी सो उन्होंने एक मीटिंग बुलायी।

[26] Eastern Sea

[27] Jade Emperor – the God of Sky. A picture of his is given above.

सबसे पहले जेड बादशाह बोला — "तुम लोग देख ही रहे हो कि धरती पर क्या हो रहा है। हमको इन आदमियों की सहायता करनी चाहिये। इस बारे में किसकी क्या सलाह है?"

पॉच अन्न का देवता[28] उठा और बोला — "मेरे पास एक सलाह है। मैं चाहता हूॅ कि आप उस पर विचार करें। क्यों न हम आदमियों को चावल उगाना सिखायें?

हम लोग तो जबसे यह दुनियॉ बनी है तभी से उसका फायदा उठा रहे हैं। देवताओं की उस खेती का आनन्द उठाने की अब इन आदमियों की बारी है। इसके बाद उनको जंगल में खाना लेने के लिये जानवरों से लड़ने झगड़ने की फिर कभी जरूरत ही नहीं पड़ेगी।"

उस मीटिंग में बैठे सभी लोगों में हॉ की लहर दौड़ गयी और फू सी शी देवता[29] ज़ोर से बोला — "हम लोग इससे भी ज़्यादा कर सकते हैं। क्यों न हम उनके बीच में अपने कुछ नौकर भी भेज दें ताकि उनको आगे भी कोई परेशानी न हो।"

एक बार फिर देवताओं ने हॉ में फुसफुसाया तो जेड बादशाह बोला — "मैं उनके लिये एक घोड़ा, एक गाय, एक भेड़, एक कुत्ता, एक मुर्गा और एक सूअर भेजने के लिये सोचता हूॅ।

[28] God of Five Grains
[29] Fu Hsi Shih god

घोड़ा और गाय आदमी को हल चलाने में, गाड़ी खींचने में और चावल तोड़ने में सहायता करेंगे। भेड़ उनको दूध देगी। मुर्गा उनको रोज सुबह सुबह जगाया करेगा। और कुत्ता उनके घर की रखवाली किया करेगा।

सूअर को वहाँ कोई काम करने की जरूरत नहीं है। वह वहाँ जितना चाहे खा सकता है और जितना चाहे सो सकता है। पर उसको आदमी के खाने के लिये अपने आपको बलिदान करना पड़ेगा।"

रात होने से पहले पहले सब कुछ तैयार कर लिया गया पर जैसे ही सारे जानवर वहाँ से जाने के लिये तैयार हुए तो जेड बादशाह ने सबको रुक जाने के लिये कहा और बोला — "यह सब तो ठीक है कि तुम सब जाने के लिये तैयार हो पर हम चावल के खेत के बारे में तो भूल ही गये। हम चावल के खेत उनको इस समुद्र के पार कैसे भेजेंगे?"

देवताओं की जमीन पर तो चावल के खेत बहुतायत में थे और चावल का हर पौधा जड़ से ले कर चोटी तक बहुत सारे चावल से लदा हुआ था। पर उनको आदमियों की जमीन पर कैसे भेजें।

उनको गट्ठर में बाँध कर समुद्र में तैरा कर वहाँ भेजने का तो कोई मतलब ही नहीं था क्योंकि वे तेज़ लहरों में बह कर किसी दूसरी दिशा में भी जा सकते थे। तो फिर वह चावल भेजा कैसे जाये।

सो वह पॉच अन्न वाला देवता एक बार फिर बोला — "क्यों न हम कुछ चावल किसी जानवर की पीठ से बॉध दें और वह जानवर उनको वहॉ ले जाये।"

सब देवताओं को यह बात ठीक लगी तो जेड बादशाह ने सबसे पहले गाय से पूछा कि क्या वह चावल ले जा सकती थी पर गाय ने एक लम्बी सॉस भरी और मना कर दिया — "मुझे मालूम है कि मुझे बहुत सारी ताकत दी गयी है और बहुत सुन्दर शरीर भी, पर मैं इस काम में ज़्यादा अच्छी नहीं हूॅ। मुझे लगता है कि आपको घोड़े से पूछना चाहिये।"

पर इससे पहले कि जेड बादशाह घोड़े से कुछ पूछते घोड़े ने भी ज़ोर से बोल कर मना कर दिया — "मैं इस काम के लिये बहुत खराब हूॅ। मेरे बाल इतने अच्छे और मुलायम हैं कि चावल के दाने मेरे बालों पर से फिसल जायेंगे। आप लोग मुर्गे से क्यों नहीं पूछते?"

सो जेड बादशाह ने मुर्गे की तरफ देखा पर मुर्गे ने तो चावल न ले जाने की पहले से ही तरकीब सोच रखी थी। वह बोला — "योर हाईनैस, मुझे ज़रा देखिये तो, मैं तो बहुत ही छोटा सा हूॅ और कमजोर भी। मैं तो शायद उसका बोझा भी नहीं उठा पाऊॅगा।"

इस समय तक भेड़ और सूअर ने भी चावल न ले जाने की अपनी अपनी तरकीबें सोच ली थीं। अब तक कुत्ता बिना कुछ बोले सबको बोलते सुन रहा था।

यह सब सुनने के बाद वह जेड बादशाह से बोला — "मुझे मालूम है कि आदमी लोग सब इस समय बहुत ही खराब हालत में हैं इसलिये उनके लिये चावल पूर्वीय समुद्र पार कर के मैं ले कर जाऊँगा।"

कुत्ते को वहाँ के तालाब में नहलाया गया और फिर उसको अनाजघर भेजा गया ताकि वहाँ वह चावल के दानों को अपने शरीर पर चिपका सके। जब वह उस अनाजघर में से बाहर निकला तो उसकी आँखों को छोड़ कर उसके पूरे शरीर पर चावल के दाने लगे हुए थे।

सारे जानवर समुद्र के किनारे इकट्ठे हुए और फिर जमीन पर जाने के लिये एक एक कर के समुद्र में कूद पड़े। कुत्ते ने लहरों से बचने के लिये और तैरने के लिये अपनी पूरी ताकत और होशियारी लगा दी पर फिर भी जब तक सारे जानवर जमीन पर पहुँचे वह तब भी समुद्र में जमीन से बहुत दूर था।

जेड बादशाह ने पूर्वीय समुद्र का एक राजकुमार भी उसकी सहायता के लिये भेजा पर वह भी उसके शरीर पर लगे चावल के दाने समुद्र में बहने से न बचा सका।

क्योंकि समुद्र की जो भी लहर आती वह उसके शरीर से कम से कम एक मुट्ठी भर चावल के दाने तो बहा कर ले ही जाती। जेड बादशाह अपने चावल के दाने समुद्र में बहते देख कर बहुत दुखी हो रहे थे।

आखिर जब कुत्ता थका हारा जमीन के किनारे पहुँचा तो उसके शरीर पर केवल वही चावल के दाने बचे थे जो उसकी पूँछ पर लगे हुए थे। और वे दाने जमीन के केवल एक छोटे से टुकड़े में बोने के लिये ही काफी थे।

खेत में हल चलाया गया और धरती के लोगों ने उसमें चावल बोया पर देवताओं ने देखा कि धरती पर ज़िन्दगी आसान नहीं थी क्योंकि चावल के पौधे वहाँ उतना चावल नहीं दे रहे थे जितना कि वे देवताओं की जमीन पर देते थे।

वहाँ उन पौधों के केवल ऊपर की तरफ ही चावल के दाने लगे हुए थे। इसलिये लोगों को चावल की फसल निकालने के लिये दोगुनी मेहनत करनी पड़ती थी।

उस समय के बाद से चावल ही चीन के लोगों का मुख्य खाना हो गया और उसके बाद उनको खाने के लिये जानवरों का शिकार नहीं करना पड़ा।

सारे जानवर जो धरती तक तैर कर आये थे वे सब आदमी के लिये काम करने लगे पर कुत्ता उन सबमें आदमी का सबसे अच्छा साथी रहा क्योंकि वही तो उनके लिये स्वर्ग से चावल ले कर आया था।

शुरू शुरू में उसने आदमी की जो सेवा की थी उसके बदले में आज भी उसको कभी कभी चावल खिलाया जाता है। चीन के कुछ

प्रान्तों में तो चावल की नयी फसल बाजार में बेचने के लिये ले जाने से पहले कुत्तों को खिलायी जाती है।

पर घोड़े गाय भेड़ों को केवल उसकी डंडियॉ ही खिलायी जाती हैं और मुर्गों और सूअरों को तो केवल उसका भूसा ही मिलता है।

6 पहला बिल्ला[30]

यह बहुत पहले की बात है जब दुनियॉ बनी ही बनी थी तब यहॉ हजारों जानवर रहते थे पर आदमी केवल दो ही थे – एक पति पत्नी और साथ में एक शैतान था।

दोनों आदमी दिन में सारे दिन खाना उगाने का काम करते ताकि वे अपने लिये काफी खाना उगा सकें। जब रात होती तो वे अपने घर चले जाते। उस समय वहॉ जंगली जानवरों को शिकार करने का मौका भी मिल जाता।

दूसरी तरफ शैतान को दिन अच्छा नहीं लगता था सो वह शाम होने तक अपनी सीली हुई अॅधेरी गुफा में छिपा रहता। वह वहॉ से रात होने पर ही निकलता और फिर सुबह होने तक उससे जितना हंगामा मचाया जा सकता था मचाता और फिर अपनी सीली हुई अॅधेरी गुफा में चला जाता।

आदमी उस शैतान के इन कामों से नफरत करते। पेड़ पौधे भी उससे डरते। यहॉ तक कि देवता भी उससे डरते और उसके सामने

नहीं आते थे। पर शैतान को इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी कि बाकी की दुनियॉ उसके बारे में क्या सोचती थी क्योंकि उसके पास बुरे चूहों की पूरी की पूरी एक फौज थी।

[30] The First Cat – a myth from China, Asia.

और वह यह भी अच्छी तरह जानता था कि कोई भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता था, यहॉ तक कि स्वर्ग की ताकत भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी।

एक दिन जब पौधों पर खूब फूल लदे हुए थे और दुनियॉ में सब जगह शान्ति ही शान्ति थी शैतान ने कुछ करने के इरादे से अपनी गुफा के दरवाजे से बाहर झॉका। जैसे ही उसने बाहर झॉका तो उसकी नजर उस जगह पर पड़ी जहॉ आसमान धरती से मिलता था, यानी क्षितिज पर[31]।

बस उसके दिमाग में तुरन्त ही एक प्लान घूम गया। उसको मालूम था कि क्षितिज स्वर्ग के देवता ने बनाया था ताकि धरती और आसमान एक साथ मिल कर रहें।

उसने आदमियों को यह भी कहते सुना था कि अगर यह क्षितिज नहीं रहा तो आसमान ऊपर उड़ जायेगा और यह धरती उलटी हो जायेगी और एक ऐसे समय में लुढ़क जायेगी जिसका कोई अन्त ही नहीं होगा।

इससे उसके दिमाग में आया कि देखा जाये कि अगर यह क्षितिज नष्ट कर दिया जाये तो वाकई में क्या होगा। सो जब रात हुई तो शैतान ने अपनी चूहों की फौज को बुलाया और उनके साथ एक मीटिंग की।

[31] Translated for the word “Horizon”.

जब वे सब आ गये तो वे सब शैतान की बात को ध्यान से सुनने के लिये अपने अपने पिछले पैरों पर खड़े हो गये।

शैतान बोला — "मैंने तुम लोगों से पहले भी कई काम लिये हैं और वे काम तुम लोगों ने बहुत अच्छी तरह से किये हैं। पर अबकी बार का मेरा यह काम सबसे ज़्यादा गमी फैलाने वाला काम है। तुमको इसे बहुत अच्छी तरीके से करना पड़ेगा।"

फिर उसने क्षितिज की तरफ इशारा किया जो चॉद की रोशनी में धुँधला सा दिखायी दे रहा था और फिर एक चालाकी भरी मुस्कुराहट से बोला — "मैं चाहता हूँ कि सुबह होने से पहले पहले ही तुम सब लोग मिल कर उस जोड़ को काट दो।

सुबह के सूरज निकलने से पहले ही वह पूरी तरीके से गर्म हो जाना चाहिये। समझ में आ गया? जाओ और जा कर अपने काम पर लग जाओ।"

चूहों ने खुशी से किलकारी मारी और दूर क्षितिज की तरफ दौड़ गये। वे वहॉ सुबह होने से तीन घंटे पहले ही पहुँव गये और तेज़ी से अपने काम में लग गये।

हालॉकि उन चूहों के मुँह तो छोटे छोटे थे पर उनके दॉत बहुत तेज़ थे। सुबह तक आसमान और धरती केवल बहुत ही पतले आधे कुतरे हुए धागों से जुड़े रह गये। बाकी सब धागे चूहों ने काट दिये थे।

सुबह होते ही चूहे अपनी रक्षा के लिये भागे और एक सीली हुई गुफा में जा कर घुस गये।

आदमी और स्त्री अगले दिन धरती के ज़रा से हिलने की वजह से और दिनों से जल्दी जाग गये। वे अपने अपने बिस्तरों से उठ कर बाहर की तरफ भागे तो उन्होंने देखा कि धरती तो आसमान से अलग होती जा रही थी।

एक पल के लिये तो वे कुछ बोल ही नहीं सके क्योंकि उनको लग रहा था वे किसी समय भी मर जायेंगे पर फिर उनको लगा कि अब तो यह काम उन्हीं का था कि वे दुनियॉ को बचायें।

आदमी लोहे की मोटी मोटी सुइयॉ और इतना मजबूत धागा जो समुद्र के अन्दर तूफानों में भी ठहर सके लाने के लिये घर के अन्दर भागा। उनको ले कर वे दोनों क्षितिज के पास पहॅुचे और क्षितिज की मरम्मत करनी शुरू करने में लग गये।

इस काम में उनको सारा दिन लग गया। हालॉकि वह पूरी तरीके से मजबूती से नहीं सिला गया था फिर भी उन्होंने जितना उनसे हो सकता था उतनी अच्छी तरीके से उसको सिलने की कोशिश की और उनकी इस कोशिश से आसमान और धरती एक बार फिर से आपस में एक दूसरे से बॅध गये थे।

सारा दिन काम कर के वे थके हारे घर लौटे पर जैसे ही वे घर लौटे तो उन्होंने अपने घर के भंडारघर से चीं चीं की और फड़ फड़ की आवाजें सुनी।

उनके आसमान और धरती की मरम्मत करने से गुस्सा हो कर शैतान ने कुछ चूहे उस आदमी के घर के भंडारघर में रखे खाने के सामान को नष्ट करने के लिये भेज दिये थे यह उसी की आवाज थी।

उन चूहों को इस तरह अपना खाने का सामान खराब करते देख कर वह आदमी बहुत गुस्सा हुआ।

उसने एक बहुत मोटी डंडी उठा ली और स्त्री ने लोहे का एक फावड़ा उठा लिया और उन दोनों ने निडर हो कर उन चूहों को मारना शुरू कर दिया। कुछ चूहे तो बहुत जल्दी भाग गये पर कुछ फर्श पर ही गिर पड़े।

दोनों पति पत्नी क्षितिज की सिलाई के काम से बहुत थके हुए थे सो उन्होंने उन चूहों को तो वहीं फर्श पर छोड़ दिया और दोनों जा कर सो गये। और बहुत गहरी नींद सो गये।

जब वे सुबह सवेरे उठे तो यह देखने के लिये खिड़की की तरफ दौड़े गये कि आसमान अपनी जगह पर था कि नहीं। उन्होंने यह देख कर सन्तोष की सॉस ली कि वह वहीं अपनी जगह पर ही था।

पर अपने चावल का खेत देख कर उनका दिल डूब गया क्योंकि रात भर में चूहों ने उनकी चावल की सारी फसल खा ली थी। अब अगर उन्होंने थोड़ी बहुत सब्जियॉ न बचायी होतीं तो वे

तो तभी मर जाते क्योंकि उनके खाने के लिये तो और कुछ था ही नहीं।

यह देख कर उन्होंने क्षितिज के देवता से सहायता मॉगी। उनके घर के मन्दिर में क्षितिज के देवता की एक मूर्ति थी। उन्होंने उस मूर्ति के सामने उनके लिये जौस की डंडियॉ[32] जलायीं उनको फलों की टोकरियॉ भेंट में दीं। उन्होंने उनके सामने घुटनों टेक कर प्रार्थना की और उनसे सहायता मॉगी।

धीरे से एक कोहरा उनके मन्दिर में छा गया और उसमें से एक आवाज आयी — "मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था कि तुम मेरे पास आओगे। मेरी मरम्मत करने के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। अब उसको कोई नष्ट नहीं कर सकेगा।

और तुमको अब उन चूहों की भी चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि मुझे मालूम है कि उनको कैसे काबू में रखना है।

तुम एक बिल्ला ढूँढो। जब तुमको एक बिल्ला मिल जाये तो तुम उसको अपने घर में और खेत पर रख लो। फिर तुमको कोई चूहा कभी परेशान नहीं करेगा।"

"पर यह बिल्ला क्या होता है और यह हमको कब, कहॉ और कैसे मिलेगा?"

[32] Joss sticks – incense sticks burned in Chinese temples

क्षितिज के देवता पहले तो कुछ हिचकिचाये फिर बोले — "मुझे मालूम है कि एक बिल्ला स्वर्ग में तो है पर मैं यह नहीं बता सकता कि धरती पर तुमको बिल्ला कहॉ मिलेगा।

मुझे यह भी मालूम है कि चीता धरती के सारे जानवरों को जानता है। शायद वह तुम्हारी कुछ सहायता कर सके। मेरी दुआऐं तुम्हारे साथ हैं।"

कमरे में से देवता की आवाज धीमी पड़ती गयी और उसके बाद तो मन्दिर से कोहरा भी छॅट गया।

आदमी और स्त्री को मालूम था कि एक चीता उनके घर के पास ही एक गुफा में रहता था पर वे हमेशा उससे दूर ही रहते थे। उसने भी उनको कभी परेशान नहीं किया था।

इस बार वे पहली बार एक इतने ताकतवर और इज़्ज़तदार जानवर से बात करने जा रहे थे इसलिये वे बड़ी हिचक के साथ उसकी गुफा तक गये।

जब वे वहॉ पहुॅचे तो चीता अपनी गुफा के बाहर ही बैठा धूप सेक रहा था। जब वे उसके पास तक पहुॅचे तो उसने अपना सिर भी नहीं उठाया और अपने पंजे के इशारे से उनको अपने सामने बैठने के लिये कहा।

दोनों बड़ी नम्रता के साथ उसके सामने उसके इतने पास जमीन पर बैठ गये कि वे अपनी परछाईं तक उसकी बड़ी बड़ी पीली ऑखों में देख सकते थे।

चीता गुर्रा कर बोला — "बोलो मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ?"

आदमी बोला — "हमको आपको परेशान करने के लिये बहुत अफसोस है पर शैतान के चूहे हम लोगों को भूखा मारने पर तुले हुए हैं इसलिये हमको एक बिल्ला चाहिये। इसी लिये हम आपके पास आये हैं।"

अपने आपसे बोलते हुए चीता बोला — "एक बिल्ला? तुम लोग बिल्ला ढूँढ रहे हो? मेरे पास यहाँ कोई बिल्ला विल्ला नहीं है पर हाँ मैं एक बिल्ला बना सकता हूँ। अगर तुम कुछ देर इन्तजार करो तो मैं एक बिल्ला पैदा कर सकता हूँ।"

कह कर चीते ने अपने काले तीखे पंजों से अपने शरीर के एक तरफ का हिस्सा खुजाया और वह वहाँ जब तक खुजाता रहा जब तक कि उसके शरीर में इतना गहरा छेद नहीं हो गया कि उसमें से उसका जिगर नहीं दिखायी देने लगा।

फिर चीता सिकुड़ कर लेट गया और उसने अपना जिगर निकाल कर उस आदमी और स्त्री के सामने रख दिया। फिर उसने अपने शरीर का वह छेद मोम से बन्द कर दिया।

वह जिगर उनको दे कर वह बोला — "तुम लोग इस जिगर को ले जाओ यही तुम्हारा बिल्ला है।"

पति ने आश्चर्य से कहा — "आपका बहुत बहुत धन्यवाद। मैंने बिल्ला पहले कभी नहीं देखा था पर अगर आप यह कह रहे हैं कि यह बिल्ला है तो मैं उस पर विश्वास किये लेता हूँ।

पर एक जिगर की शक्ल का बिल्ला चूहों को कैसे भगा सकता है? बजाय इसके कि यह चूहे को खाये चूहा तो खुद ही इस जिगर को खा जायेगा।"

चीता गुस्से से गुर्रा कर बोला — "तुम मेरा विश्वास करो यही बिल्ला है। तुम इसको घर ले जाओ और फिर चूहे तुमको कभी परेशान नहीं करेंगे। अब तुम जाओ और मुझे आराम करने दो।"

वह आदमी और स्त्री उसका कहा न मानने की हिम्मत नहीं कर सके सो उन्होंने उस जिगर को एक तिनकों की बनी चटाई में लपेटा और गुफा से जितनी जल्दी चल सकते थे चल दिये।

रास्ते में वे बात करते आ रहे थे कि अब उनको क्या करना चाहिये। क्या यह जिगर वही बिल्ला था जिसके बारे में क्षितिज के देवता ने कहा था? जब वे बात कर रहे थे तो स्त्री ने उस चटाई में कुछ हिलता हुआ महसूस किया।

उसने वह चटाई जमीन पर रख कर खोली तो उसमें से एक कत्थई रंग का पीले धब्बे वाला बिल्ला निकला। वह उनकी टाँगों से लिपट गया और प्यार से आवाजें निकालने लगा।

आदमी खुश हो कर बोला — "यही बिल्ला होना चाहिये। जल्दी करो इसको घर ले चलो ताकि हम यह देख सकें कि चूहे इसके बारे में क्या सोचते हैं।"

जब वे अपने घर के पास अपने चावल के खेत में पहुँचे तो वह बिल्ला उस स्त्री के हाथों में से निकल कर खुश खुश म्याऊँ म्याऊँ करता हुआ खेत के उस पार भाग गया। उसको वहाँ चूहे मिलने लगे तो वह उनको हवा में उछालता और फिर अपने पंजों में पकड़ लेता।

डर के मारे चूहे वहाँ से भागने लगे। बहुत जल्दी ही यह बात शैतान की फौज में फैल गयी कि कोई पुराना जानवर आदमी और स्त्री के घर में उनका इन्तजार कर रहा है।

इसलिये चूहे ऐसे घरों से दूर ही रहते हैं जहाँ बिल्ले रहते हैं। और यह कहानी यह भी बताती है कि बिल्ला चीते जैसा क्यों लगता है।

7 समुद्र खारा क्यों[33]

यह हजारों साल पुरानी बात है कि चीन में पूर्वीय समुद्र[34] के किनारे दो भाई रहा करते थे। बड़े भाई का नाम आह बौंग था और वह बहुत ही आलसी था। छोटे भाई का नाम आह डौंग[35] था पर वह बहुत ही मेहनती, दयावान और ज़िन्दगी को आसानी से लेने वाला आदमी था।

आह बौंग तो अपना दिन बिस्तर में लेट कर गुजारता था जब कि आह डौंग अपनी जमीन पर काम करता था और शाम को शाम का खाना बनाने के लिये घर लौट कर आ जाता था।

एक दिन सुबह सवेरे आह डौंग दोपहर के खाने के लिये अपने चावल ले कर पास की एक पहाड़ी पर लकड़ी काटने के लिये गया। जैसे ही वह अपनी कुल्हाड़ी पहली बार एक पेड़ में मारने ही वाला था कि उस पेड़ के पीछे से एक बूढ़ा बौना निकल पड़ा।

आह डौंग ने अपनी कुल्हाड़ी नीचे कर ली और उस बौने की तरफ बढ़ा कि शायद वह उसकी कुछ सहायता कर सके। उस बूढ़े बौने ने आह डौंग का हाथ अपने हाथ में लिया और प्रार्थना भरी

[33] Why the Sea is Salty – a myth from China, Asia.
[34] Eastern Sea
[35] Ah Bong and Ah Dong – names of the two Chinese brothers

निगाहों से उसको देखता हुआ बोला — "मैंने कई दिनों से खाना नहीं खाया है। क्या तुम मुझे थोड़ा सा खाना दोगे?"

आह डौंग के लिये यह बहुत मुश्किल काम था कि वह उस भूखे बूढ़े बौने को खाने के लिये मना कर देता क्योंकि उस बौने को तो देखने से ही लग रहा था कि वह शायद एक महीने से न तो नहाया है और न ही उसने कुछ खाया है।

आह डौंग ने तुरन्त ही अपने बन्दगोभी के पत्ते खोले जिसमें उसके चावल लिपटे थे। उसने उनको दो हिस्सों में बॉटा और उसमें से एक हिस्सा उस बौने को दे दिया। बौने ने तुरन्त ही उन चावलों को अपनी छोटी छोटी उँगलियों में पकड़ लिया और जितनी जल्दी उन्हें खा सकता था खा लिया।

अभी उसने अपना पूरा चावल खत्म भी नहीं किया था और उसके मुँह में भी अभी चावल भरा ही था कि उसने अपनी उँगलियॉ चाटीं और आह डौंग से उसका बचा हुआ चावल और मॉगा।

आह डौंग थोड़ा हिचकिचाया क्योंकि यह बचा हुआ चावल उसके दोपहर के खाने के लिये था जो उसको शाम तक काम करने के लिये ठीक रखता पर वह बौना इतना बूढ़ा और दया के लायक था कि वह उसको मना नहीं कर सका और उसने अपना वह बचा हुआ खाना भी उसको दे दिया।

उस बौने ने उसका दिया यह खाना भी उतनी ही जल्दी खा लिया जितना पहले वाला खाना खाया था और खुशी से एक पेड़ के सहारे बैठ गया।

वह बोला — "तुम एक बहुत ही अच्छे आदमी हो। मैं जानता हूँ कि बहुत कम लोग ऐसे होते है जो अपना आखिरी कौर भी किसी अजनबी को खाने के लिये दे देते हैं। अपनी इस दया के बदले में तुम मेरी एक भेंट स्वीकार करो।"

कह कर उस बौने ने एक बहुत ही पुराना पत्थर का बक्सा निकाला और उसका ढक्कन खोला। उस बक्से में से उसने एक बहुत ही ऊबड़ खाबड़ बनी हुई पत्थर की एक चक्की निकाली और आह डौंग को दे कर बोला।

"लो यह लो। यह एक बहुत ही बढ़िया पीसने वाला पत्थर है। बस तुमको इसको केवल पीसने के लिये कहना है और यह तुमको वह हर चीज़ दे देगा जो भी तुम चाहोगे।

और जब तुमको इसको रोकना हो बस तुमको यह कहना है "चक्की चक्की, तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।" और फिर यह तुरन्त ही अपने आप रुक जायेगी।"

आह डौंग ने उसकी यह इतनी बढ़िया भेंट स्वीकार कर ली और उसको इसके लिये बहुत धन्यवाद दिया। हालॉकि उस चक्की की ताकत को बारे में उसके मन में कुछ शक था फिर भी... ।

उसके बाद उस बौने ने बहुत नीचे तक झुक कर आह डौंग का धन्यवाद किया और उसको वहीं छोड़ कर चला गया।

आह डौंग ने वह बक्सा वहीं पास में उगी घास पर रख दिया और अपनी लकड़ी काटने में लग गया। दोपहर तक उसको भूख लग आयी थी सो उसने उस चक्की को जॉचने का निश्चय किया।

उस चक्की को उसने बड़ी सावधानी से अपने हाथ में पकड़ा और जैसे उस बौने ने उसको कहने के लिये बताया था कहा — "चक्की चक्की मुझे थोड़ा चावल दो।"

उसके कहने की देर थी कि वह चक्की हिली और उसने पके हुए चावल के छोटे छोटे ढेर लगाने शुरू कर दिये। डौंग ने उस चक्की को रुकने के लिये कहा पर चक्की ने सुना नहीं और वह चावल के ढेर पर ढेर निकाल कर जमीन पर लगाती रही।

बाद में उसको उस चक्की रोकने का ठीक वाक्य याद आया और वह बोला — "चक्की चक्की तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।" तब कहीं जा कर वह चक्की रुकी। आह डौंग ने उस चक्की को फिर से बहुत सॅभाल कर उसी बक्से में रख दिया।

जितना चावल उस चक्की ने बना कर उसको दिया था उसमें से एक ढेर को छोड़ कर बाकी सब चावल उसने अपने एक तिनकों से बने थैले में रख लिये।

उन चावलों में से बहुत अच्छी खुशबू आ रही थी और ऐसे चावल तो उसने पहले कभी खाये ही नहीं थे। वे बहुत ही बढ़िया

उबले हुए थे और उसमें फल, मूँगफली और मिर्च पड़ी हुई थीं। उन चावलों का केवल एक ढेर ही उसको शाम तक के लिये काम करने के लिये ताकत देने के लिये काफी था। शाम को वह चावल, चक्की, कुल्हाड़ी और लकड़ी ले कर घर वापस लौट आया।

जब आह डौंग शाम को घर वापस लौटा तो आह बौंग तभी जागा था और रसोईघर में कुछ खाने के लिये ढूँढ रहा था। जैसे ही आह डौंग घर में घुसा तो उसको उस बढ़िया चावल की खुशबू आयी।

बिना कुछ कहे सुने उसने अपने छोटे भाई से उसका वह तिनकों का थैला छीन लिया जिसमें उसके चक्की से निकले हुए चावल रखे हुए थे और उनको खाने लगा। वह उन चावलों को तब तक खाता रहा जब तक वह उनका दूसरा दाना नहीं खा सका।

जब आह बौंग खाना खा रहा था तो आह डौंग ने उसको उस बौने और उसकी दी हुई चक्की के बारे में बताया। और जब आह डौंग अपने बड़े भाई को चक्की के बारे में बता रहा था तो आह बौंग ने वह चक्की निकाली और उसको ले कर रसोईघर में भागा और उसको शाम का खाना बनाने के लिये कहा।

उस चक्की ने उसका हुक्म मान कर बढ़िया स्वादिष्ट खाने की प्लेटों पर प्लेटें निकालनी शुरू कर दीं। जब आह बौंग उन खाने की प्लेटों से सन्तुष्ट हो गया तो उसने चक्की को रुक जाने के लिये

कहा पर उसने उससे नम्रता से नहीं कहा सो वह चक्की खाने की प्लेटों पर प्लेटें निकालती ही रही।

आह बौंग यह देख कर परेशान हो गया तभी उसका भाई रसोईघर में घुसा और बौने का सिखाया हुआ वाक्य बोल कर उस चक्की को खाना की प्लेटों को निकालने से रोका।

सारे खाना खाने के समय आह बौंग अपने भाई को तरकीबें सुझाता रहा कि वे उस चक्की को किस तरह अक्लमन्दी से इस्तेमाल कर सकते थे पर आह डौंग ने जब तक अपना खाना खत्म नहीं कर लिया वह नहीं बोला।

खाना खा कर आह डौंग बोला — "हमको इस चक्की के बारे में सावधानी बर्तने की जरूरत ही क्या है यह तो हमको सभी कुछ देने वाली है।"

आह बौंग बोला — "मुझे मालूम है। पर हम इससे और भी तो पैसा कमा सकते हैं। चलो हम इसको एक गाड़ी भर कर नमक देने के लिये कहते हैं। किसको पता कि नमक बेच बेच कर ही हम लोग चीन के सबसे अमीर आदमी बन जायें।"

आह डौंग बोला — "हम इस बारे में कल सुबह बात करेंगे अब रात हो गयी है चलो चल कर सोते हैं।" और वह रात को सोने के लिये अपने भूसों के गद्दे बिछाने के लिये चला गया।

जब आह डौंग चला गया तब भी आह बौंग उस चक्की से अमीर बनने की तरकीबें सोचता रहा। उसने सोचा कि जब वह

अमीर बन जायेगा तो वह अपनी दौलत अपने भाई को बिल्कुल भी नहीं देगा।

आह बौंग ने अपना सामान भी बॉधने की कोशिश नहीं की। बस उसने वह चक्की अपनी बगल में दबायी और महीनों में पहली बार वह घर छोड़ कर निकल पड़ा।

दौड़ा दौड़ा वह बन्दरगाह पर पहुॅचा जहॉ एक सौदागर का जहाज़ दक्षिण चीन की तरफ जा रहा था। वह वहॉ से वह एक ऐसी गुप्त और दूर जगह चले जाना चाहता था जहॉ उसका भाई उस तक पहुॅच ही न सके। जहॉ वह अपनी सारी उम्र एक अमीर और इज़्ज़तदार आदमी बन कर गुजार सके।

वह उस जहाज़ पर चढ़ गया। जहाज़ का लंगर उठा लिया गया और जहाज़ खुले समुद्र की तरफ चल दिया। आह बौंग ने उस चक्की को जहाज़ के एक कोने में रख दिया और उससे कहा कि वह नमक देना शुरू करे।

उस चक्की ने उसका हुक्म मान कर नमक देना शुरू कर दिया और आह बौंग ने उस नमक को थैलों में भरना शुरू कर दिया। पर आह बौंग के नमक को थैले में भरने की रफ्तार चक्की के नमक बनाने की रफ्तार से बहुत कम थी।

वह चक्की बहुत ही जल्दी जल्दी नमक बना रही थी सो वह नमक पहले आह बौंग के पैरों पर, फिर जहाज़ के फर्श पर, फिर जहाज़ के डैक पर इकट्ठा होना शुरू हो गया।

यह देख कर आह बौंग को डर लगा कि लोगों को कहीं उसके इस भेद का पता न लग जाये कि इतना सारा नमक कहॉ से आ रहा था सो उसने चक्की को रुकने के लिये कहा पर चक्की तो रुकी नहीं। उसने उसको फिर रुक जाने के लिये कहा पर वह तो फिर भी नहीं रुकी।

वह तो बस नमक निकाले जा रही थी निकाले जा रही थी रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। अब नमक इतना सारा हो गया था कि वह चक्की खुद भी उसमें ढक जाने वाली थी।

असल में आह बौंग उसको "धन्यवाद" और "मेहरबानी कर के" जैसे शब्द कहना भूल गया था और चक्की इन शब्दों को सुने बिना तो रुकने वाली थी नहीं।

नमक का ढेर बढ़ता ही जा रहा था। आह बौंग उस चक्की को बार बार रोकने की कोशिश करता रहा पर क्योंकि वह उसको रोकने के असली शब्दों को नहीं कह पा रहा था इसलिये वह चक्की भी रुक नहीं पा रही थी।

नमक का ढेर बढ़ता ही जा रहा था। अब तो उससे वह चक्की भी ढक गयी थी पर फिर भी वह चक्की नमक निकाले जा रही थी।

अब तक जहाज़ चलाने वाले लोगों को भी इस बात का पता चल गया था कि उनके जहाज़ पर नमक बड़ी तेज़ी से बन रहा था सो वे जहाज़ को उससे डूबने से बचाने के लिये उसको समुद्र में फेंकने में लग गये थे।

पर चक्की के नमक बनाने और उनके नमक को समुद्र में फेंकने की रफ्तार का भी कोई मुकाबला नहीं था। चक्की के नमक बनाने की रफ्तार बहुत तेज़ थी।

जहाज़ के लोग घबरा गये। उनमें से कुछ अपनी जान बचाने के लिये समुद्र में कूद गये। बाद में जहाज़ चलाने वालों ने भी यही सोचा और उन्होंने भी वह जहाज़ छोड़ दिया।

अब केवल आह बौंग ही उस जहाज़ पर रह गया था। वह अपनी उस कीमती चीज़ का साथ छोड़ने को तैयार नहीं था। और चक्की अभी भी नमक बनाये जा रही थी।

नमक अब आह बौंग की गर्दन तक पहुँच रहा था। अब किसी भी समय जहाज़ डूब सकता था। बस देखते ही देखते समुद्र की एक ज़ोर की लहर आयी और दस मिनट के अन्दर अन्दर वह पूरा जहाज़ समुद्र में डूब गया।

आह बौंग और वह चक्की भी उस जहाज के साथ साथ समुद्र में डूब गये पर उस चक्की ने नमक बनाना नहीं छोड़ा क्योंकि जब तक उसको कोई रुकने के लिये कहेगा नहीं तब तक वह रुकेगी नहीं। और उसको रुकने के लिये कहता कौन?

वह चक्की आज भी उस पूर्वीय समुद्र के अन्दर पड़ी पड़ी नमक बना रही है और उसको रोकने वाला कोई नहीं है इसीलिये आज सारे समुद्र का पानी खारा है।

8 पानी का भूत और मछियारा[36]

पानी के भूत चीन में हर नदी और समुद्र में रहते हैं। वे भूत उन बदकिस्मत आदमियों, मछियारों और मल्लाहों की आत्माऐं हैं जो या तो नदी या समुद्र में डूब गये थे या फिर उनके सबसे गहरे और काले पानी की तली में चले गये थे।

वे वहॉ तब तक रहते थे जब तक कि उनको कोई दूसरा आदमी ऐसा न मिल जाये जो वहॉ उनकी जगह ले ले।

जब किसी आदमी को या तो वे खुद मार लेते थे या फिर उनको खुद ही मरा हुआ कोई आदमी मिल जाता था तो वे भूत उस आदमी की जगह आदमी के रूप में पैदा हो जाते थे।

कुछ पानी के भूत किस्मत वाले होते थे क्योंकि उनके समुद्र इतने तूफानी और खतरनाक होते थे कि वहॉ लोग मरते ही रहते थे और इस तरह से वे भूत फिर से आदमी के रूप में पैदा होते ही रहते थे।

उनका यह नियम था कि जैसे ही कोई पानी का भूत किसी आदमी को मारता था और उसको पानी की तली में ले जाता था वह भूत फिर से एक नयी आत्मा के साथ आदमी के रूप में पैदा हो सकता था।

[36] The Water Ghost and the Fisherman – a myth from China, Asia.

ऐसा ही पानी का एक भूत हुंग माओ पी[37] गॉव के पास से बहती हुई नदी के पानी में रहता था। वह वहॉ बहुत ही अकेला महसूस करता था। जहॉ तक उसको याद पड़ता था वह वहॉ का अकेला ही भूत था।

पर वह गॉव इतना छोटा था कि वहॉ के बहुत कम लोग उस नदी पर जाते थे। और जब भी वे जाते थे तो वह भूत हमेशा ही उनको खींच कर डुबोने का मौका खो देता था इसलिये वह कभी आदमी बन कर पैदा ही नहीं हो पा रहा था।

कई सालों से वह भूत फुंग ही[38] को डुबोने का प्लान बना रहा था। फुंग ही उस गॉव का एक बहुत ही होशियार और हॅसमुख मछियारा था और वह उस भूत के क्षेत्र में से हफ्ते में कम से कम चार बार तो गुजरता ही था।

पानी के उस भूत ने कई बार पानी में तूफान उठाये, उस मछियारे का जाल फाड़ दिया, उसकी नाव में छेद कर दिया पर फुंग मछियारा ही बहुत ही होशियार था और वह भूत उसको किसी भी तरह पकड़ नहीं पा रहा था।

एक दिन उसने उस मछियारे के जाल के आस पास की मछलियों को हटाने में दस घंटे खर्च किये ताकि वह उस मछियारे को रात को मछली पकड़ने पर मजबूर कर सके। उसने ऐसा ही किया।

[37] Hung Mao Pei – name of the Ghost
[38] Fung Hei – name of the fisherman

जैसे ही चॉद घने बादलों के पीछे छिपा पानी का भूत फुंग ही की नाव पर चढ़ गया और उसके किनारे के पास एक अॅधेरे कोने में जा कर छिप कर बैठ गया। वहॉ बैठ कर वह उस मछियारे को मारने के समय का इन्तजार करने लगा।

उस समय फुंग ही चुपचाप पानी की तरफ देख रहा था। पानी के भूत ने सुना कि वह चुपचाप भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि वह उसको कम से कम कुछ मछलियॉ दे दे चाहे वह उसको थोड़ी सी ही मछलियॉ ही क्यों न दे पर दे दे।

फिर उस पानी के भूत ने देखा कि फुंग ही ने अपने लकड़ी के कटोरे में से अपने आखिरी चावल खा कर खत्म किये।

आखीर में पानी के भूत ने उसको पकड़ने की उम्मीद छोड़ दी और वह वहॉ से जाने ही वाला था कि तभी उसने देखा कि उसी समय वह मछियारा नदी में से अपना जाल समेटने के लिये अपनी नाव के एक तरफ को झुका।

बस उस भूत को मौका मिल गया और उसने फुंग ही को काले और अॅधेरे पानी में धक्का दे दिया।

दो मिनट तो फुंग ही पानी के भूत की पकड़ से लड़ा पर फिर बेहोश हो गया। यह देख कर पानी का भूत बहुत खुश हुआ। उसको लगा कि वह मछियारा मर गया और वह खुशी खुशी उस मछियारे के शरीर को नदी के किनारे खींच लाया।

वहॉ उसने नदी की कीचड़ उसके चेहरे पर मली और भूत की एक गोली उसकी जबान पर रख दी। उस मछियारे के शरीर को भूतों की दुनियॉ में ले जाने के लिये तैयार करने के बाद वह भूत अपने इस कारनामे को समुद्र के बादशाह येन लो वान[39] को बताने के लिये वहॉ से जितनी तेज़ी से उड़ सकता था उड़ गया।

पर पानी के भूत ने अपनी कामयाबी का ज़रा ज़्यादा जल्दी ही अन्दाज लगा लिया क्योंकि वह मछियारा अभी मरा नहीं था वह तो अभी केवल बेहोश ही हुआ था। अपनी कामयाबी की खुशी में उत्सुक पानी के भूत को उसके दिल की धीमी धीमी धड़कन सुनायी ही नहीं दी।

वह मछियारा कुछ देर तक वहीं नदी के किनारे बिना हिले डुले पड़ा रहा और यह देखता रहा कि पानी का भूत वहॉ से गायब हो गया कि नहीं।

यह पक्का करने के बाद कि वह पानी का भूत वहॉ से चला गया उसने वह भूत की गोली अपने मुॅह में से निकाल कर अपनी जेब में रख ली, अपने चेहरे की कीचड़ नदी के पानी से साफ की और अपने घर भाग गया। घर जा कर उसने अपने घर का दरवाजा बन्द कर लिया और जा कर सो गया।

[39] Yen Lo Wan – the Emperor of the Sea

जब यह सब यहॉ धरती पर हो रहा था तो समुद्र का बादशाह येन लो वान उस पानी के भूत से उसके उस मछियारे के पकड़ने का हाल सुन रहा था।

मछियारे के पकड़ने का हाल सुना कर पानी का भूत अब समुद्र के बादशाह से प्रार्थना कर रहा था कि अब तो वह उसको आदमी के रूप में पैदा कर दे।

येन लो वान अपने शानदार सोने के सिंहासन से उठा, उसने पास में रखी मूँगे[40] की मेज पर से "ज़िन्दा और मुर्दा लोगों की किताब"[41] उठायी और उसके पन्ने पलट कर उस पन्ने पर गया जहॉ समुद्र में अभी अभी मरे हुए लोगों के नाम लिखे थे।

काफी देर तक इधर उधर देखने के बाद भी उसको उस किताब में उस मछियारे का नाम नहीं मिला जिसके मारने का जिक्र वह पानी का भूत कर रहा था।

यह देख कर येन लो वान ने पानी के उस भूत से पूछा — "क्या तुमको पूरा यकीन है कि वह मछियारा मर गया था?"

---

[40] Coral – Coral is normally found in tropical seas throughout the world. It is basically a limestone formation or reefs. It comes in many colors. It gets its color from the algae it hosts. See its picture above.

[41] Book of the Living and Dead

पानी का भूत परेशान सा ज़ोर से चिल्लाया — "हॉ मुझे पूरा यकीन है कि वह मछियारा मर गया था। धरती का कोई भी आदमी आपके पानी में तीन मिनट से ज़्यादा ज़िन्दा कैसे रह सकता है?"

समुद्र का बादशाह गरजा — "तुम्हें पता है कि यह तुम मेरे पास आज किसी मरे हुए की कहानी ले कर चौथी बार आये हो और आज तुम फिर बेवकूफ बन गये हो।

वह मछियारा अभी मरा नहीं है। मेरे लिखने वाले इस किताब में नाम लिखने में गलती नहीं कर सकते।

जाओ जल्दी नदी में वापस चले जाओ और इससे पहले कि तुम हमेशा के लिये आदमी बन कर जीने का मौका खो बैठो उस आदमी के मुॅह में से वह भूत की गोली वापस निकाल लो।"

समुद्र के बादशाह ने अपने केंकड़े[42] चौकीदारों को बुलवाया और उनसे कहा कि वे उस दुखी पानी के भूत को धरती तक वापस ले जायें ताकि वह उस मछियारे के मुॅह में से भूत वाली गोली निकाल सके।

राजा का हुक्म मान कर वे उसको धरती तक छोड़ आये।

वहॉ से वह पानी का भूत नदी के किनारे तक दौड़ा गया जहॉ उसने उस मछियारे के शरीर को छोड़ा था पर वहॉ तो केवल उसके शरीर का निशान ही मौजूद था और कुछ नहीं। मछियारा तो वहॉ से गायब हो चुका था।

[42] Translated for the word "Crab". See its picture above.

बदकिस्मत पानी का भूत उस मछियारे को ढूँढने को लिये पागलों की तरह से गॉव का घर घर झॉकता रहा – कभी उन घरों की खिड़कियों में से तो कभी उन घरों में बनी झिरियों में से।

फिर कभी वह उनका दरवाजा खटखटाता और जैसे ही घर का मालिक दरवाजा खोलता तो उस मछियारे को न पा कर वह वहॉ से गायब हो जाता।

आधी रात से पहले पहले वह एक घंटे तक ऐसे ही उस मछियारे को ढूँढता रहा पर वह उसको कहीं नहीं मिला। आखीर में उसको उस मछियारे का लकड़ी का बना घर मिल ही गया।

वह उस मछियारे के घर का दरवाजा तब तक खटखटाता रहा जब तक कि वह अपने बिस्तर से उठ कर यह देखने पर मजबूर नहीं हो गया कि वहॉ क्या हो रहा था। कौन उसका दरवाजा खटखटा रहा था।

आधे सोते हुए मछियारे ने अपने दरवाजे को बहुत थोड़ा सा खोल कर उसमें से बाहर झॉका पर बाहर बहुत अँधेरा था इसलिये उसको कुछ दिखायी नहीं दिया।

उसने दरवाजा थोड़ा सा और खोला ताकि वह अपने घर के आगे बने छोटे से बरामदे को ठीक से देख सके। वहॉ उसने देखा कि लकड़ी के एक लट्ठे के सहारे खड़ा खड़ा पानी का भूत सिसक रहा था।

पानी के भूत ने सिसकते सिसकते ही मछियारे से प्रार्थना की — "मेरे मछियारे भाई, तुम कम से कम मुझे मेरी वह भूत की गोली तो वापस कर दो नहीं तो मैं फिर कभी इस धरती पर नहीं आ पाऊँगा।"

मछियारे को उस भूत पर दया आ गयी। वह तुरन्त ही घर के अन्दर दौड़ गया और भूत की वह कीमती गोली ले कर वापस आ गया।

पर वह उस गोली को केवल इस शर्त पर लौटाने के लिये तैयार था कि वह भूत उसका मछली का जाल हमेशा ही मछलियों से भर दिया करेगा। भूत को उसकी यह शर्त माननी पड़ी। मछियारे ने उस भूत की गोली उसको लौटा दी और वह भूत उससे वह गोली ले कर वहाँ से वापस चला गया।

उस दिन के बाद से तो उस मछियारे की मछलियों का शिकार दस गुना बढ़ गया। अब तो अक्सर ही उसकी नाव मछलियों से इतनी ज़्यादा भरी रहती कि उसको हमेशा ही यह लगता रहता कि वह नदी के किनारे तक सुरक्षित पहुँच भी पायेगा या नहीं।

पहले तो वह पानी का भूत जब मछलियाँ उस मछियारे की तरफ धकेलता तो वह पानी की सतह के ठीक नीचे ही रहता पर बाद में फिर वह मछियारे से बात करने के लिये पानी की सतह के ऊपर भी दिखायी देने लगा।

जल्दी ही दोनों अच्छे दोस्त बन गये। उनकी पहली मुलाकात के ठीक एक महीने के बाद एक दिन मछियारे ने पानी के भूत को अपने घर शाम के खाने के लिये बुलाया।

अब दोनों को एक दूसरे का साथ इतना अच्छा लगने लगा कि वे मछियारे के घर में खाना खाने के लिये हफ्ते में दो बार मिलने लगे।

एक दिन सुबह सुबह पानी का भूत मछियारे के घर आया और उसका हाथ पकड़ कर बोला — "मुझे तुम्हें यह बताते हुए बहुत अफसोस हो रहा है दोस्त पर अब मुझे तुम्हें छोड़ना पड़ेगा।"

मछियारा आश्चर्य से बोला — "क्यों? क्या हुआ?"

पानी का भूत खुश हो कर बोला — "आज शाम को एक बुढ़िया उस कीचड़ वाली नदी के किनारे आयेगी और अगर मैं वहॉ से उसको एक हल्का सा भी धक्का दूँगा तो वह नदी के पानी में गिर जायेगी और गहरे पानी में डूब जायेगी।

यह मेरी किस्मत बदलने के लिये बहुत ही अच्छा मौका है। तुम मेरे बहुत ही अच्छे दोस्त रहे हो। मुझे तुमको छोड़ते हुए बहुत दुख हो रहा है पर मेरे पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं है।"

मछियारा चिल्लाया — "एक मिनट, एक मिनट। मुझे मालूम है कि तुम्हारे लिये इस आत्मा की दुनियॉ से बाहर निकलना कितना जरूरी है पर तुम एक भोली भाली बुढ़िया को इस तरह से नहीं मार सकते।

तुम उसको इतनी दर्दनाक मौत कैसे दे सकते हो और फिर मुझे मछली पकड़ने में कौन सहायता करेगा? तुम्हारे बिना तो मैं ज़िन्दा भी कैसे रहूँगा?"

कई महीनों से साथ साथ रहते पानी का भूत अब अपने नये दोस्त मछियारे की बहुत परवाह करने लगा था सो वह मछियारे की मेज पर बैठ गया और इस समस्या का कुछ हल सोचने लगा। दोनों दोस्त बहुत देर तक चुपचाप बैठे रहे।

आखिर पानी का भूत मछियारे की बात मानता हुआ बोला — "ठीक है। मैं अपना यह काम तीन साल के लिये रोक देता हूँ।"

और इस वायदे के अनुसार तीन साल तक उस नदी में फिर कोई नहीं डूबा। वे दोनों रोज झील के किनारे मिलते, अक्सर मछियारे के घर साथ साथ खाना खाते और त्यौहारों पर तो अक्सर वह पानी का भूत मछियारे के घर में ही रह जाता।

पर फिर एक दिन ऐसा आया जब पानी के भूत ने एक तैराक को डुबोने का विचार किया और मछियारे के यह बात बतायी पर एक बार फिर उसको मछियारे की बात माननी पड़ी और वह तैराक मरने से बच गया।

एक दिन वह पानी का भूत मछियारे से फिर बोला — "कल एक जवान लड़का नदी में तैरने जायेगा और मैं उसको नदी की तली में डुबो दूँगा। और तुम ध्यान से सुन लो इस बार तुम मुझे नहीं रोकोगे क्योंकि मैं इस नदी में हमेशा के लिये नहीं रह सकता।"

इस बार मछियारा कुछ नहीं बोला। वह दुखी हो कर फर्श की तरफ देखता रहा और अपना सिर हिलाता रहा। पानी का भूत यह सब उससे कह कर वहॉ से चला गया।

अगले दिन मछियारा रोज की तरह से अपनी नाव ले कर नदी के बीच में गया।

जैसे ही वह अपना मछली पकड़ने वाला जाल नदी में डाल रहा था कि उसने एक लड़के को नदी किनारे रस्सी कूदते हुए देखा तो उसने अपना जाल तो छोड़ दिया और अपनी नाव की पतवार पकड़ कर उसे किनारे की तरफ ले चला जहॉ वह लड़का पानी में घुसने की कोशिश कर रहा था।

मछियारा वहीं से चिल्लाया — "ए लड़के, तुम अभी अभी अपने घर चले जाओ। तुम्हारी मॉ तुमको बुला रही है। अगर तुम अभी अभी घर नहीं गये तो वह तुमको आलसी होने के लिये बहुत मारेगी।"

लड़का यह सुन कर डर गया और अपने घर भाग गया। इधर मछियारा भी सन्तुष्ट हो कर अपना जाल देखने के लिये वापस लौट आया।

उस शाम को पानी का भूत जब मछियारे के घर आया तो बहुत नाराज था पर मछियारे को उसकी इस बात का पता था सो उसने

उसके शाम के खाने के लिये बहुत स्वाददार मछली और मॉस पका कर मेज पर सजा रखा था।

जैसे ही पानी का भूत उसके घर में घुसा तो मछियारे ने उससे माफी मॉगते हुए कहा — "मुझे मालूम है मेरे दोस्त कि तुम मुझसे गुस्सा हो पर ज़रा सोचो उस लड़के के आगे तो अभी पूरी ज़िन्दगी पड़ी है और तुम उसको अभी से मार देना चाहते थे।"

मछियारा आगे बोला — "देखो तुम मुझे इलजाम मत देना पर अब मैं तुम्हारे कामों में बिल्कुल भी दखल नहीं दूँगा।"

मछियारे के शब्दों से सन्तुष्ट होते हुए और खाने के लालच में वह पानी का भूत वहीं खाना खाने बैठ गया। इसके बाद यह मामला फिर हमेशा के लिये बन्द हो गया।

फिर कुछ साल बीत गये। दोनों की दोस्ती चलती रही। पर एक दिन फिर जब पानी का भूत मछियारे के घर खाना खा रहा था तो भूत का धीरज फिर से छूट गया और वह मछियारे से बोला कि अब उसके नदी छोड़ने का समय आ गया था।

बहुत ही भारी दिल से उसने मछियारे को अपना प्लान बताया।

वह बोला — "तुमको मालूम है कि मैं तुम्हारी बहुत परवाह करता हूँ पर ज़रा तुम अपनी ज़िन्दगी से मेरी इस भूतिया ज़िन्दगी की जो मैं नदी की तली में बिताता हूँ तुलना तो करो। जब तक मैं अपनी सहायता अपने आप नहीं करूँगा मैं हमेशा के लिये यहीं पड़ा रह जाऊँगा।

और जब तुम मर जाओगे तो मेरा इस दुनियॉ में कोई भी दोस्त नहीं रह जायेगा इसलिये मुझे अपने आपको बचाने के लिये कुछ न कुछ तो करना ही चाहिये।

मैंने सुना है कि तुम्हारी पड़ोसन चॉग शान[43] अपने पति से बहुत झगड़ा करती है। और मुझे ऐसा भी पता चला है कि कल वह नदी में डूब कर आत्महत्या करने वाली है।

इस तरह से इस बार मैं किसी को मार नहीं रहा बल्कि वह अपने आप ही मरने जा रही है। इसलिये इस बार तुम मुझको किसी को मारने का इलजाम नहीं दे सकते। और हॉ देखो मेरे इस काम में कोई रोक टोक भी मत लगाना।"

यह खबर सुन कर तो मछियारा सकते में आ गया। उसको तो इस बात का पता ही नहीं था कि वे दोनों लड़ते भी थे। हालॉकि उसने पानी के भूत के मामलों में दखल न देने का वायदा किया था पर फिर भी उसने मन ही मन चॉग शान की सहायता करने का फैसला कर लिया।

उस रात मछियारे को रात भर नींद नहीं आयी। वह अपने आगे के प्लान के बारे में ही सोचता रहा कि उसे क्या करना है। सुबह उसने निश्चय किया कि वह अपनी दोस्ती को दॉव पर लगा कर भी उस स्त्री को बचायेगा।

[43] Chang Shan – the name of the fisherman's neighbor

मछियारा सुबह को नहाया भी नहीं, उसने कुछ खाया भी नहीं और अपने बालों में कंघी भी नहीं की। बस तुरन्त ही कपड़े पहन कर वह नदी की तरफ चल दिया।

वह बस समय से ही नदी पर पहुँच पाया क्योंकि चॉग शान तभी तभी नदी के भॅवर में कूदी थी। यह देख कर वह खुद भी उसके पीछे पीछे नदी में कूद गया।

भॅवर की तेज लहरें दोनों को नदी की तली की तरफ ले गयीं। मछियारे ने उस स्त्री को पकड़ तो लिया पर वह बेहोश हो गयी थी। फिर भी उसने उसको और खुद को बाहर निकालने में अपनी पूरी ताकत लगा दी।

पानी का भूत देखता रहा पर उसने दोनों को न तो बचाने की कोई कोशिश की और न ही मारने की कोशिश की। वह बस अपनी किस्मत का इन्तजार करता रहा। कुछ देर बाद मछियारा चॉग शान को बाहर ले कर आ गया और उसको उसके पति के पास छोड़ आया।

उस रात भूत ने मछियारे का दरवाजा खटखटाया। बिना किसी जवाब की उम्मीद के पानी का भूत अन्दर आया और बिना कुछ बोले ही रसोईघर की मेज पर बैठ गया।

मछियारे ने उसको अपनी कुछ सफाई देनी चाही पर पानी के भूत ने उसको कुछ भी कहने से पहले ही रोक दिया।

वह बोला — "मैं यहाँ तुमको कुछ कहने या तुम्हारे ऊपर चिल्लाने नहीं आया हूँ। मुझे मालूम है कि तुमने उस स्त्री को क्यों बचाया और मुझे यह भी मालूम है कि तुमने यह इरादा ऐसे ही नहीं किया होगा।

मुझे यह भी मालूम है कि तुम मेरी कितनी परवाह करते हो पर साथ में तुम आदमियों की ज़िन्दगियों की भी परवाह करते हो। इसी लिये मैं वायदा करता हूँ कि मैं खुद अब किसी को नहीं मारूँगा।

वे अपने आप ही मरें तो मरें। जो कुछ मुझे भगवान ने दिया है मैं उसी को स्वीकार करता हूँ।"

मछियारे ने जब पानी के भूत के ये शब्द सुने तो उसको लगा कि जितने भी दोस्त उसने अपनी ज़िन्दगी में बनाये थे उन सबमें यह भूत उसका सबसे अच्छा दोस्त था।

इस घटना के बाद पानी के भूत और मछियारे दोनों ने बहुत सारा समय खाने पीने, ताश खेलने, मछली पकड़ने में बिता दिया। उनकी पहली मुलाकात से आज तक दस साल गुजर गये थे और पानी के भूत ने किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था।

इस बीच समुद्र के बादशाह के महल में येन लो वान अपनी सारे लोगों पर ठीक से नजर रखे था। उसके दूसरे भूत और आत्माएँ बदकिस्मत लोगों को डुबो देते थे और उनकी जगह आदमी बन जाते थे जबकि उसका यह पानी का भूत हुंग माओ पाई अपने क्षेत्र में आने वाले किसी भी आदमी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता था।

उस पानी के भूत ने बड़ी नम्रता से अपनी किस्मत को ही स्वीकार कर लिया था। इसको देख कर जेड बादशाह को भी आश्चर्य होता था।

यह देख कर उसने अपने महल में अपनी काउन्सिल बुलायी जहॉ समुद्र के बादशाह येन लो वान ने जेड बादशाह से पानी के भूत की तरक्की की सिफारिश की तो जेड बादशाह ने पानी के भूत को ज़िला के देवता चेंग हुऑग[44] के पद पर तरक्की करने का फैसला किया और उसको वह पद दे दिया।

पतझड़ के मौसम की एक शाम को जब पानी का भूत मछियारे के घर जाने के लिये नदी की गहराइयों से ऊपर उठा तो उसको जेड बादशाह का वज़ीर[45] सामने ही मिल गया। उसके हाथ में उसकी तरक्की का कागज था।

वह तरक्की देख कर पानी का भूत बहुत खुश हुआ और अपनी खुशी छिपा न सका। वह अपनी तरक्की का कागज ले कर तुरन्त ही मछियारे के घर की तरफ दौड़ गया।

पर मछियारा तब तक बाजार से नहीं लौटा था और पानी का भूत अपना समय गर्म नहीं करना चाहता था सो उसने उसके लिये अपने नये घर में आने के लिये एक न्यौता छोड़ा और अपना ऊॅचा ओहदा लेने के लिये वहॉ से उड़ गया।

---

[44] Cheng Huang god, the District god

[45] Translated for the word “Prime Minister”.

जब मछियारा बाजार से लौटा तो उसने अपने घर में पानी के भूत का वह न्यौता पाया तो उसको विश्वास हो गया कि इस देवता को जरूर ही कुछ गलतफहमी हो गयी है।

काफी दिनों तक मछियारा यह तय नहीं कर पाया कि वह क्या करे – वह वहॉ जाये या नहीं जाये। पर क्योंकि न्यौते का दिन पास आ रहा था इसलिये उसको कुछ तो निश्चय करना ही था सो उसने वह न्यौता स्वीकार करने का निश्चय किया।

एक बात और भी थी कि जिस दिन से मछियारे ने वह न्यौता अपने रसोईघर की मेज पर पाया था तब से ले कर आज तक उसने पानी के भूत को नहीं देखा था।

वह रोज नदी के किनारे पर भी जाता और उसको नदी के गहरे पानी में पुकारता पर उसे कोई जवाब ही नहीं मिलता। वह रोज उसका इन्तजार करता कि वह उसके घर का दरवाजा खटखटायेगा पर वैसा भी कभी नहीं हुआ।

दिन पर दिन मछियारे के शिकार की मछलियों की गिनती कम होती जा रही थीं पर यह सब उसके लिये अपने दोस्त को खोने के सामने कुछ नहीं था।

फिर वह दिन भी आया जब मछियारे को चेंग हुऑग के मन्दिर जाना था। वह वहॉ पहुॅचा पर वहॉ की तो जमीन और मन्दिर दोनों ही खाली पड़े थे। शाम हो चली थी और मन्दिर के खम्भों और पेड़ों की पत्तियों से हो कर हल्की हवा बह निकली थी।

मछियारा अपनी यात्रा से थक गया था सो उसने मन्दिर के सामने पड़ी एक पत्थर की बैन्च पर पड़ी पत्तियॉ साफ की, उस पर अपनी सूती जैकेट बिछायी और आराम करने के लिये लेट गया। थका था इसलिये लेटते ही सो गया।

सपने में उसने अपने दोस्त पानी के भूत को चेंग हुऑग के कपड़े पहने देखा। उसका दोस्त उसके पास आया और उसने उसको एक सोने की प्लेट दी जिसमें मॉस रखा हुआ था। उस मॉस में से बहुत ही अच्छी खुशबू उड़ रही थी और उसके साथ में एक बहुत ही मुश्किल से मिलने वाली मछली भी रखी हुई थी।

वह पानी का भूत उसके पास चुपचाप खड़ा रहा और वह मछियारा खाना खाता रहा। जब मछियारे का खाना खत्म हो गया तो पानी के भूत ने सोने के सिक्कों से भरा एक भारी थैला उसकी गोद में रख दिया।

फिर उसके सामने झुक कर बोला — "मेरे अच्छे दोस्त, अगर तुम मेरे दोस्त न होते तो मैंने अब तक बहुत सारे लोग मार दिये होते।

पर तुमने मुझे उस पाप से बचा लिया और अब मैं तुम्हारे सामने तुमको धन्यवाद देने के लिये अपना सिर झुकाता हूँ। अब तुम मुझे कभी नहीं देख पाओगे पर तुम हमेशा मेरे ख्यालों में रहोगे।" और उसके बाद वह पानी का भूत मछियारे के सपने में से चला गया।

जब मछियारे की ऑख खुली तो दिन निकल रहा था। जैसे ही वह अपनी जैकेट उठाने के लिये और मन्दिर से जाने के लिये बैन्च से उठा एक भारी सा सोने से भरा थैला उसकी गोद से नीचे जमीन पर गिर पड़ा।

मछियारा उस थैले को ले कर घर चला गया और सोचने लगा कि वह केवल उसका सपना ही नहीं था बल्कि उसने सच में ही अपने भूत दोस्त को देखा था।

उसने अपने दोस्त के दिये हुए पैसे को बड़ी अक्लमन्दी से खर्च किया और एक बहुत ही अमीर व्यापारी बन गया। उस दिन के बाद वह उस नदी में कभी मछली पकड़ने नहीं गया और न ही कभी कोई वहॉ डूबा।

पर उस दिन के बाद से वह रोज उस नदी के किनारे जरूर जाता और चेंग हुऑग देवता की प्रार्थना करता।

9 सौदागर का बदला[46]

लू शी चॉग[47] जब पन्द्रह साल का था तभी उसने अपने गरीब परिवार को छोड़ दिया था और पास के एक शहर में काम ढूँढने चला गया था।

वहॉ जा कर वह एक सिल्क के सौदागर के साथ काम करने लगा। अपनी मेहनत और अपनी होशियारी से उसको अपने काम की जानकारी भी बहुत अच्छी हो गयी थी।

बहुत सारे लोग उसको जानने लगे और उसकी इज़्ज़त करने लगे। जब तक वह तीस साल का हुआ तो वह अपने प्रान्त में सबसे ज़्यादा अमीर सिल्क का सौदागर बन गया था।

पर वह अपना घर नहीं भूला और उसने निश्चय किया कि वह अब अपने घर लौटेगा और जा कर अपने बूढ़े माता पिता की सेवा करेगा।

एक दिन वसन्त की एक सुबह को उसने दो घोड़ों पर सोना, जेड[48], हाथी दॉत और सिल्क लादी और अपने घर चल दिया।

[46] The Merchant's Revenge – a myth from China, Asia.

[47] Liu Shih Chang – name of the silk and jade merchant

[48] Jade is a semi-gemstone most commonly found in eastern Asian countries, China, Taiwan, Philippines, etc. See its picture above.

जहॉ वह काम करता था वहॉ से उसके अपने गॉव का रास्ता दो दिन का था सो जब पहले दिन रात हुई तो वह अभी भी अपने घर से आधे रास्ते दूर था। इसलिये उसने रास्ते में एक सराय में रुकने का निश्चय किया।

कई घंटों तक वह सराय ढूँढता रहा पर उसको कोई सराय ही नहीं मिली। आखिर एक मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कुम्हार के घर के दरवाजे पर उसको एक लालटेन जलती दिखायी दे गयी। वह वहीं चला गया और वहॉ जा कर उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया और रात को रहने की जगह मॉगी।

पर बदकिस्मती से उसने उस गॉव के सबसे ज़्यादा लालची आदमी के घर का दरवाजा खटखटा दिया था। जैसे ही उस कुम्हार और उसकी पत्नी ने घर का दरवाजा खोला तो उन्होंने उस सौदागर के घोड़ों पर बॅधे कीमती कपड़े और कीमती चीज़ों से भरे थैले देखे।

दोनों के मन में उस सामान को चुराने का लालच इतना ज़्यादा हो गया कि उन्होंने उस सौदागर को तुरन्त ही अन्दर बुला लिया और खाना खिलाया।

जैसे ही वह सौदागर चावल खाने बैठा कि चाऊ ताई[49] ने लू शी चॉग के सिर पर इतने ज़ोर से हथौड़ा मारा कि उसका सिर फट गया और वह वहीं मर गया।

[49] Chau Tai – the name of the pot maker

अँधेरे में ही पति पत्नी दोनों मिल कर उसके शरीर को अपने घर के पीछे ले गये और एक गहरी कब्र खोद कर उसमें उसे गाड़ दिया।

कुम्हार तो रात भर में ही अमीर हो गया यह खबर सारे गॉव में बहुत जल्दी ही फैल गयी। और यह खबर उस कुम्हार को एक पैसे उधार देने वाले चॉग पाई कू[50] के कान में भी पड़ी।

उस कुम्हार ने उस पैसे उधार देने वाले से कुछ पैसा उधार ले रखा था सो वह तुरन्त ही अपने घोड़े पर जीन[51] कस कर और उस पर बैठ कर बर्तन बनाने वाले कुम्हार से अपना पैसा वसूल करने चल दिया।

जब चॉग पाई कू कुम्हार के घर पहुँचा तो उसको तो उसके घर में बदलाव देख कर विश्वास ही नहीं हुआ कि वह उसी कुम्हार का घर था जिसको उसने पैसा उधार दिया था।

उसने अपने घर में दो बहुत सुन्दर सोने वाले कमरे बनवा लिये थे जिनके आगे एक लोहे का बरामदा था। जहॉ उसके मकान में पहले झाड़ियों से भरा एक मैदान था वहॉ उसने एक पत्थर का बागीचा और एक मछली से भरा तालाब बनवा लिया था।

[50] Chang Pai Ku – name of the money lender

[51] Translated for the word “Saddle”. See its picture above.

हालॉकि उसके घर में ये सब खरचीले बदलाव थे जबकि इस बीच उसकी दूकान से एक भी कटोरा या जग या कोई और बर्तन नहीं बेचा गया था।

उसके अपने पुराने मिट्टी के बर्तनों पर भी धूल जमी पड़ी थी क्योंकि उसकी दूकान तो जनता के लिये बहुत दिनों से खुली ही नहीं थी। तो फिर उसके पास यह पैसा आया कहॉ से?

चॉग पाई कू ने कुम्हार की दूकान का दरवाजा खटखटाया तो उसने चॉग पाई कू का बड़े प्रेम से स्वागत किया और कहा — "आओ, मुझे मालूम है कि तुम यहॉ क्यों आये हो। तुम मुझसे पैसा उधार मॉगना चाहते हो। मैं ठीक बोल रहा हूँ न?"

चॉग पाई कू आश्चर्य से बाला — "यह तुम क्या कह रहे हो? पैसा और तुमसे उधार मॉगने? मुझे यकीन है कि तुम अपना उधार भूले नहीं हो।"

कुम्हार फिर बोला — "मेरे दोस्त, अब तुमको अपनी गरीबी पर शर्माने की जरूरत नहीं है। मुझे मालूम है कि तुम मुझसे दान लेने के लिये आये हो फिर इसमें यह बहाना बनाने की क्या जरूरत है कि मैंने तुमसे उधार ले रखा है। तुम चाहो तो वैसे ही मुझसे पैसे उधार मॉग सकते हो।"

पैसे उधार देने वाले ने कहा — "यह तुम क्या कह रहे हो तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैंने तुमको जाड़े के मौसम में खाना

खरीदने के लिये काफी पैसे उधार दिये थे। जब तक तुम मेरा वह उधार वापस नहीं कर देते तब तक मैं यहॉ से हिलने वाला नहीं हूॅ।" पर कुम्हार ने उसको उधार देने से साफ मना कर दिया और दोनों चुपचाप खड़े रह गये।

अन्त में कुम्हार ने अपनी कमर से लटका रस्सी खींचने से खुलने बन्द होने वाला चमड़े का एक थैला खोला और उस थैले के सिक्के उसके सामने फर्श पर डालते हुए हुए कहा — "यह लो और खिसको यहॉ से। और मेरे इस दान के लिये मेरा धन्यवाद करो।"

फिर वह कुम्हार चॉग पाई कू को हाथों पर चलते और उन सिक्कों को फर्श पर से उठाते देखता रहा। चॉग पाई कू ने उन सिक्कों को उठा कर गिना तो वे तो अभी भी उसके उधार दिये हुए पैसों से कम थे।

उसने अपने उधार की रकम पूरी करने के लिये कुम्हार की मिट्टी की एक प्लेट उठा ली और अपने कोट के अन्दर रख ली और गुस्से में भर कर वहॉ से अपने घर चल दिया जो दूर जंगल के उस पार था।

जब वह जंगल में आधे रास्ते में पहुॅचा तो बहुत ज़ोर से हवा चलने लगी जिससे वहॉ के पेड़ बहुत ज़ोर ज़ोर से हिलने लगे और वह हवा उसको उसकी सूती जैकेट के अन्दर उसके बदन को काटने लगी। ठंड उसकी हड्डियों तक पहुॅच रही थी।

पहले तो वह उस ठंड से कॉपने लगा फिर छींकने लगा। उस की वह छींक भी इतने ज़ोर की थी कि उस छींक के साथ ही कुम्हार की जो मिट्टी की प्लेट वह अपने कोट मे रख कर लाया था बाहर निकल कर नीचे जमीन पर गिर पड़ी।

भगवान का धन्यवाद कि वह प्लेट नीचे गिर कर टूटी नहीं।

उसके गिरते ही एक आवाज आयी — "ज़रा सॅभाल के। दर्द होता है।"

चॉग पाई कू ने वह प्लेट उठा कर फिर जेब में रख ली और चौंक कर इधर उधर देखा कि वह आवाज किधर से आ रही थी पर उसको हवा से हिलते पत्तों के अलावा और कहीं कुछ भी दिखायी नहीं दिया।

उसको लगा कि यह सब शायद उसका ख्याल होगा और यही सोच कर वह आगे बढ़ चला। लेकिन वही आवाज उसको फिर से आयी कि वह थोड़ा धीरे धीरे चले।

चॉग पाई कू ने फिर उस आवाज को टाल दिया और वह अपने घर पहुॅचने के लिये और तेज़ी से जाने लगा। जब वह अपने रसोई घर में पहुॅचा तो उसने वह मिट्टी की प्लेट एक लकड़ी की कुर्सी पर रख दी।

पर वह आवाज दर्द से फिर से चिल्लायी तो अबकी बार चॉग पाई कू को विश्वास हो गया कि वह आवाज उस मिट्टी की प्लेट से

ही आ रही थी। उसने वह प्लेट उठा ली और अपने कान से लगा ली।

वह आवाज फिर बोली — "हॉ हॉ, मैं इस मिट्टी की प्लेट में ही हूँ। मेरी सहायता करो चॉग। मेरा खून किया गया है। मेरी सहायता करो ताकि मेरे खून को न्याय मिल सके।"

चॉग पाई कू ने उससे पूछा — "क्या तुम कोई भूत हो?"

इस सवाल पर वह प्लेट चुप रही पर फिर भी वह उससे अपने सवाल पूछता रहा — "तुम किस तरह की आत्मा हो? तुम इस मिट्टी की प्लेट में क्यों छिपी हो? तुम्हें किसने मारा है?"

तब लू शी चॉग ने उसको बताया कि उसका खून कैसे हुआ था और किस तरह से उसको कुम्हार के पीछे के बागीचे में गाड़ा गया था। फिर किस तरह खून होने के बाद लू शी चॉग की आत्मा उस लाल मिट्टी में चली गयी थी जिसमें उसको गाड़ा गया था।

उसके खून के कई दिन बाद उस कुम्हार ने उसकी कब्र से मिट्टी निकाल कर एक मिट्टी की प्लेट बनायी और यह वही प्लेट थी जिसे इस समय चॉग पाई कू अपने हाथ में पकड़े हुए था।

अब यह आत्मा किसी ऐसे आदमी की सहायता की तलाश में थी जो उसके खून को वहॉ के जिला जज पाओ कुंग[52] को जा कर बता सकता और उसको न्याय दिलवा सकता।

[52] Pao Kung – the District Magistrate

जब लू शी चॉग अपनी कहानी सुना चुका तो उस प्लेट से ऑसू टपक पड़े। चॉग पाई कू एक रोती हुई प्लेट देख कर चौंक गया। प्लेट के ऑसू देख कर उसने निश्चय किया कि वह उस आदमी के साथ जरूर ही न्याय करेगा।

अगले दिन सुबह सवेरे ही उसने वह प्लेट एक सिल्क के कपड़े में लपेटी और पास के एक शहर की अदालत की तरफ चल दिया।

जब वह जिला मजिस्ट्रेट पाओ कुंग की अदालत के दरवाजे पर पहुॅचा तो उसने उस मिट्टी की प्लेट की पूरी कहानी सुनायी और तुरन्त ही जिला मजिस्ट्रेट से मिलने की इजाज़त मॉगी। उसको तुरन्त ही मजिस्ट्रेट के सामने ले जाया गया।

जज अक्लमन्द था। उसने चॉग पाई कू की सारी कहानी बड़े ध्यान से सुनी और फिर प्लेट में बसी आत्मा से पूछा कि वह कौन थी। पर लू शी चॉग ने एक भी शब्द नहीं बोला।

इस पर जिला मजिस्ट्रेट पाओ कुंग ने वह प्लेट उठायी और अपने कान के पास ला कर उससे फिर पूछा — "ओ प्लेट की आत्मा, मुझसे बात करो।" पर वह प्लेट फिर भी चुप रही।

पाओ कुंग ने सोचा कि "लगता है यह पैसे उधार देने वाला पागल हो गया है। कहीं प्लेट भी बोलती है क्या। सो उसने गुस्से में आ कर अपने नौकरों से उसको अदालत से बाहर निकलवा दिया।

बाहर आ कर चॉग पाई कू ने उस प्लेट को मारा और कहा कि लू शी चॉग उसको बताये कि वह जज के सामने चुप क्यों रहा, बोला क्यों नहीं।

लू शी चॉग बोला — "मेहरबानी कर के मुझे मारो नहीं। मैं वहॉ नहीं बोल सकता था क्योंकि मैं वहॉ था ही नहीं। वे जो दो चौकीदार दरवाजे पर खड़े थे उन्होंने तुमको तो जाने की इजाज़त दे दी थी पर आत्माओं की दुनिया के दरवाजे के देवताओं ने मुझे अन्दर नहीं जाने दिया।

तो जब मैं वहॉ था ही नहीं तो मैं बोलता कैसे। क्या यह बात तुम जज पाओ कुंग को समझा सकते हो?"

यह सुन कर चॉग पाई कुंग फिर से जज के पास लौटा तो उस जज ने फिर से चॉग पाई कुंग का मामला बड़े ध्यान से सुना। यह सुन कर उसने एक टोटका बनाया जिसके द्वारा उसने दरवाजे के देवताओं से प्रार्थना की थी कि वह उस आत्मा को अन्दर आने दें।

अदालत के चौकीदारों ने उस टोटके को दरवाजे के बाहर ले जा कर जला दिया और प्लेट के अन्दर की लू शी चॉग की आत्मा को अदालत के अन्दर आने दिया गया।

अन्दर आ कर चॉग पाई कू ने वह प्लेट जज की मेज पर रख दी और जज ने उससे एक बार फिर वही सवाल पूछा पर एक बार फिर वह प्लेट नहीं बोली।

अबकी बार चॉग पाई कू का धीरज छूट गया। उसने उस प्लेट को बहुत ज़ोर से हिलाया पर फिर भी उस प्लेट ने कोई जवाब नहीं दिया।

पाओ कुंग को अब विश्वास हो गया था कि यह सब कहानी उसको बेवकूफ बनाने की एक चाल थी। उसने अपनी अदालत के चौकीदारों को एक बार फिर अन्दर बुलाया और चॉग पाई कू को अच्छी तरह से पीट कर अदालत से बाहर निकालने का हुक्म सुना दिया।

चौकीदारों ने उसको चमड़े के कोड़े से मारा और अदालत से बाहर निकाल दिया। बेचारा चॉग पाई कू शाम तक वहीं महल के बाहर एक तरफ को सड़क पर घायल सा पड़ा रहा। जब वह कुछ होश में आया तो उसने उस मिट्टी की प्लेट को पैर मार कर नाली में फेंक दिया।

लू शी चॉग ने उससे फिर पार्थना की — "थोड़ा शान्त हो जाओ। मैं तुमको बताता हूँ कि क्या हुआ। मुझे एक मौका और दो। मैं जज से बोलने ही वाला था कि मैंने देखा कि मैंने तो कपड़े ही नहीं पहने हैं।

अब मैं उस रूप में तो जज से बात नहीं कर सकता था। उसकी इज़्ज़त रखने के लिये मेरी आत्मा को कपड़े पहनने चाहिये थे।

मेहरबानी कर के मुझे इस तरह मत छोड़ो। मुझे तुम्हारी बहुत जरूरत है। अगर तुम मेरी सहायता नहीं करोगे तो मैं ज़िन्दगी भर के लिये इस प्लेट में ही कैद हो कर रह जाऊँगा। मेहरबानी कर के मुझे एक मौका और दो और मुझे बचा लो।"

लू शी चॉग की यह प्रार्थना सुन कर चॉग पाई कू का दिल पिघल गया और वह उसको एक बार फिर जज के सामने ले जाने के लिये तैयार हो गया।

उसने उस प्लेट को एक कपड़े में लपेटा और लॅगड़ाता हुआ फिर से जज की अदालत की तरफ चल दिया। बार बार वह कुछ कदम पर लू शी चॉग का नाम ले ले कर उसको जॉच लेता था कि वह वहॉ है भी कि नहीं।

लू शी चॉग की आत्मा बोली — "तुम चिन्ता न करो मैं यहीं हूँ और मैं वायदा करता हूँ कि अब मैं यहीं रहूँगा।"

जब वे अदालत के दरवाजे के पास पहुँचे तो लू शी चॉग की आत्मा ने दरवाजे के चौकीदारों को एक तरफ खड़े हो जाने के लिये कहा। चौकीदार एक बोलती हुई प्लेट को सुन कर इतने आश्चर्यचकित हुए कि वे तुरन्त ही कूद कर एक तरफ हट गये।

चॉग पाई कू पाओ के दफ्तर दौड़ा गया और कपड़े में लिपटी वह प्लेट उसकी मेज पर रख दी और उखड़ी सॉस लेता हुआ बोला — "अब आप इस प्लेट से कोई भी सवाल पूछ सकते हैं, जज साहब।"

जज गुस्से से बोला — "दूर हो जाओ मेरी नजरों से।"

"योर औनर, मेहरबानी कर के इस प्लेट की बात तो सुन लीजिये कि यह क्या कहना चाहती है।"

जैसे ही चॉग पाई कू ने अपनी बात खत्म की कि प्लेट में से एक धीमी सी आवाज आयी और उस प्लेट की आत्मा ने लू शी चॉग के खून की सारी घटनाऐं जज के सामने कह दीं कि उसका खून कैसे हुआ था।

उसके बाद वह आत्मा जज का जवाब सुनने के लिये रुक गयी पर पाओ कुंग तो एक प्लेट को बोलता सुन कर इतना भौंचक्का हो गया था कि वह तो कुछ बोल ही नहीं सका।

सो उस आत्मा ने अपनी कहानी जारी रखी और फिर सौदागर की मौत के साथ ही उस कहानी को खत्म किया।

यह सब सुन कर पाओ कुंग ने बिना किसी हिचक के अपने चौकीदारों को बुलाया और उस कुम्हार और उसकी पत्नी को बन्दी बना कर लाने के लिये कहा।

अगली सुबह दोनों खून करने की सुनवायी की अदालत में लाये गये और उस आत्मा ने उनके खिलाफ गवाही दी।

जब प्लेट का बोलना खत्म हो गया तो कुम्हार की पत्नी तो रोते रोते बेहोश ही हो गयी।

फिर बाद में उन्होंने अपना जुर्म मान लिया। जज ने उन दोनों का जुर्म साबित करते हुए उन दोनों को मौत की सजा सुना दी।

उस शाम जब सूरज ढल रहा था तो वे दोनों एक खुश भीड़ के सामने शहर के चौराहे पर फॉसी पर लटका दिये गये।

जब वे फॉसी पर लटका दिये गये तो चॉग पाई कू थका हुआ अपने घर लौट आया पर वह अपनी इस कोशिश से बहुत सन्तुष्ट था कि आज उसने एक खूनी को न्याय दिलवाया और एक आत्मा को प्लेट में से आजाद कर दिया।

उन दोनों के फॉसी पर लटक जाने के बाद से वह प्लेट भी नहीं बोली थी जिससे चॉग पाई कू को लगा कि लू शी चॉग की आत्मा अब आराम कर रही थी सो उसने वह प्लेट अपने रसोईघर की आलमारी के सबसे ऊपर वाले तख्ते पर रख दी।

जज के फैसले के अनुसार कुम्हार का सारा सामान लू शी चॉग के माता पिता को दे दिया गया। उन्होंने भी चॉग पाई कू को काफी सोना, चॉदी और जेड एक चमड़े के थैले में रख कर धन्यवाद के रूप में दिये।

चॉग पाई कू ने अपना यह इनाम अपने रसोईघर के फर्श में लगे लकड़ी के तख्तों के नीचे गाड़ दिया। जैसे ही उसने अपना यह इनाम लकड़ी के तख्तों के नीचे गाड़ कर तख्ते उसके ऊपर रखे कि रसोईघर की आलमारी में रखी प्लेट ऊपर से नीचे फर्श पर कूद पड़ी और टूट गयी।

चॉग पाई कू ने उसको बहुत मेहनत से जोड़ा भी पर वह प्लेट फिर कभी नहीं बोली क्योंकि लू शी चॉग की आत्मा तो अब उस प्लेट में से आजाद हो गयी थी और वह वहॉ थी ही नहीं।

10 ज़ोर से बोलने वाली स्त्री[53]

नरक का देवता[54] उन सब भूतों की देख भाल करता था जो नरक में रहते थे। पर यह काम उसके लिये बड़ा अजीब सा काम था क्योंकि उसको यहॉ कोई खास काम नहीं था और उसको समय बिताना भी बहुत मुश्किल था।

वह अक्सर खाली ही रहता था क्योंकि नरक ठंडा और अँधेरा था और वहॉ कोई कोई कभी कभी ही आता था।

एक दिन वह नरक का देवता मरे हुए लोगों के जज[55] के पास गया और उससे उसने प्रार्थना की कि वह और ज़्यादा लोगों को भूत में बदले ताकि वहॉ उसके लिये कुछ काम तो हो और उसका समय भी ठीक से बीते।

सो मरे हुए लोगों के जज ने नरक के देवता की बात मानी और उसने अपने एक बहुत ही चालाक भूत को धरती पर भेजा और उससे कहा कि वह जितने लोगों को भी मार सके उतने लोगों को मार कर नरक भेज दे।

चालाक भूत ने उसका हुक्म माना और लोगों को भूत बनाने के लिये धरती की तरफ चल दिया।

---

[53] The Loud-Mouthed Woman – a myth from China, Asia.

[54] God of Hell

[55] Judge of Dead

जब वह चालाक भूत धरती पर पहुॅचा तो वह सबसे पहले एक खेत पर गया जो एक वौंग फू[56] नाम की स्त्री का था। वहॉ वह रसोईघर में अपना खाना बना रही थी।

जब वह खाना बना रही थी तो वह भूत उसके मुर्गीखाने में घुस गया और उसकी सारी मुर्गियों को उसमें से निकाल निकाल कर बाहर उड़ा दिया। जब वौंग फू ने देखा कि उसकी सारी मुर्गियॉ खेत में चारों तरफ उड़ गयीं तो वह उनका पीछा करने के लिये उनके पीछे पीछे भागी।

पर मुर्गियॉ तो अब आजाद थीं और अपनी आजादी कौन छोड़ता है सो वे भी उस भूत की सहायता से वौंग फू से एक कदम आगे ही भागती रहीं। पीछा करते करते वौंग फू बहुत थक गयी और दिल का दौरा पड़ जाने की वजह से गिर कर मर गयी।

वह भूत उस स्त्री को उठा कर मरे हुए लोगों के जज के पास ले आया और मरे हुए लोगों के जज ने उसको वहॉ से नरक भेज दिया।

वह भूत फिर धरती पर वापस लौट गया और अबकी बार वह एक अमीर आदमी के घर पहुॅचा। वह आदमी रोज तीसरे पहर को अपने पैसे गिना करता था। वह भूत जा कर उसके पास बैठ गया और उसने उसके सोने चॉदी के सिक्के खिड़की से बाहर सड़क पर जाने वालों के सिर पर फेंकने शुरू कर दिये।

[56] Wong Fu – name of a Chinese woman

उस अमीर आदमी ने उन सिक्कों को पकड़ने की बहुत कोशिश की पर वे उसके हाथ से ऐसे फिसल जाते थे जैसे तेल लगी मछली। इस तरह से उसके पास से सारा पैसा चला गया।

जब उसके हाथ से सारा पैसा चला गया तो वह बहुत दुखी हो कर अपना दिल पकड़ कर कुर्सी में बैठ गया। उसको भी दिल का दौरा पड़ गया था और वह भी वहीं कुर्सी में बैठे बैठे मर गया तो वह भूत उसको भी नरक ले गया।

वह चालाक भूत अब अपनी सफलता पर बहुत खुश हुआ और अब जहॉ भी उसको मौका लगा उसने और दूसरे लोगों को भी तंग करना और डराना जारी रखा।

कभी कभी तो उसको केवल अपना काला बदसूरत चेहरा और बड़े बड़े पीले दॉत ही दिखाने की जरूरत पड़ती और लोग उनको देखते ही मर जाते। इस तरह एक हफ्ते में तो नरक के कमरों में बहुत सारे भूत भर गये और नरक के देवता के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी।

इससे पहले कि यह चालाक भूत वापस नरक लौटता इस भूत की सफलता को देख कर इसको कुछ और लोग लाने के लिये एक हफ्ता और दिया गया। यह देख कर इस भूत ने इस हफ्ते में पिछले हफ्ते से भी ज़्यादा लोगों को मारने का इरादा किया।

एक सुबह जब वह गॉवों में से हो कर गुजर रहा था तो उसको गर्म गर्म चर्बी बनाने की खुशबू आयी। वह उस खुशबू के पीछे पीछे

चल दिया तो एक रसोईघर में आया जहॉ एक स्त्री अपने परिवार के लिये दोपहर का खाना बना रही थी।

वह स्त्री लम्बी, मजबूत और अच्छी हड्डियों वाली थी। गॉव भर में वह ज़ोर से बोलने वाली स्त्री के नाम से जानी जाती थी।

जब भूत ने देखा कि वह स्त्री उस चर्बी को एक मिट्टी के बर्तन में पलटने वाली थी तो वह उधर उसका एक घूँट पीने के लिये दौड़ा। पर उसके वहॉ पहुँचने से पहले ही उसने वह बर्तन बन्द कर दिया था।

गुस्से में आ कर उसने अपना पैर पटका और अपने आपसे ही बोला — "उँह यह तो बहुत ही मतलबी ज़ोर से बोलने वाली स्त्री है। सजा के तौर पर मैं इसके चेहरे पर गर्म तेल छिड़कने वाला हूँ जिससे यह जल कर मर जायेगी।"

जैसे ही वह भूत तेल का एक लोटा उसके चेहरे पर छिड़कने के लिये तैयार हुआ कि एक लड़का दौड़ता हुआ उस घर में घुसा। उस लड़के के चेहरे पर बहुत सारी कीचड़ लगी हुई थी।

उसको देख कर वह स्त्री चिल्लायी — "ज़रा अपना यह गन्दा काला चेहरा तो देख। मैंने तुझसे हजारों बार कहा है कि तू कीचड़ में न खेला कर पर तू है कि सुनता ही नहीं।"

बच्चा यह सुन कर रोने लगा तो स्त्री थोड़ी मुलायम पड़ गयी और हँसते हुए बोली — "ठीक है। चल यहॉ बैठ। मैं अभी तेरे

नहाने के लिये पानी गर्म करती हूँ। गर्म पानी से नहा कर तेरा सारा शरीर साफ हो जायेगा।"

जब भूत ने यह सुना तो उसने सोचा शायद वह स्त्री यह सब उसी से कह रही है। तो वह तो यह सुन कर डर के मारे कॉपने लगा।

वह पानी से ज़्यादा किसी और चीज़ से नहीं डरता था सो उसने उस स्त्री की तरफ दोबारा देखा भी नहीं और अपने हाथ में लिया हुआ तेल का लोटा नीचे रखा और नरक की तरफ भाग लिया।

हॉफते हुए उसने मरे हुए लोगों के जज को उस स्त्री के बारे में बताया जो उसको गर्म पानी में उबालने वाली थी। जज ने धीरज से उसकी बात सुनी और उसको आराम करने के लिये नरक भेज दिया।

जज ने सोचा कि वह इस ज़ोर से बोलने वाली स्त्री को खुद जा कर देखेगा कि वह वाकई वह स्त्री इतनी खतरनाक है या नहीं जितना खतरनाक कि वह भूत उसको बता रहा था।

जब मरे हुए लोगों का जज उस स्त्री के घर पहुँचा तो उसने अपने आपको एक लकड़ी के लट्ठे के रूप में बदल लिया और उसके घर की देहरी[57] पर जा कर लेट गया।

[57] The line between the inside and the outside of the house – translated for the "Threshold of the Front Door".

वहॉ से उसने उस स्त्री को उसके नाम से बुलाया तो वह स्त्री अन्दर से बाहर दौड़ी आयी। पर जैसे ही वह अपने दरवाजे पर आयी तो वहॉ लकड़ी का एक लट्ठा देख कर अचानक रुक गयी और ज़ोर से बोली कि यह लकड़ी का लट्ठा वहॉ दरवाजे पर किसने डाला।

पर वहॉ उसकी बात का जवाब देने वाला तो कोई था नहीं सो उसने अपने पति को बुलाया। उसकी कड़कती आवाज सुन कर तो वह मरने वालों का जज भी कॉप गया। पर उसका पति बेचारा तुरन्त ही उसकी पुकार पर दौड़ा चला आया।

उसने अपने पति से कहा — "इस लकड़ी को तुरन्त ही काट दो ताकि हम इसको आज के रात का खाना बनाने के लिये इस्तेमाल कर सकें।" कह कर उसने पैर मार कर उस लट्ठे को एक तरफ को हटा दिया और रसोईघर में चली गयी।

यह सुन कर उसका पति भी तुरन्त ही एक कुल्हाड़ी लाने के लिये अन्दर चला गया। पति के जाने के बाद मरे हुए लोगों का जज तुरन्त ही अपने असली रूप में आ गया और अपने घायल शरीर को सहलाने लगा।

इससे पहले कि वह स्त्री उसको फिर से मारती वह उड़ कर अपने नरक भाग गया जहॉ जा कर उसने अपनी कहानी नरक के देवता को सुनायी।

नरक के देवता ने इस स्त्री के बारे में अपने चालाक भूत के मुँह से पहले से ही बहुत कुछ सुन रखा था। और अब इस मरे हुए लोगों के जज के मुँह से उसकी कहानी सुन कर तो उसको बहुत ही आनन्द आया कि उस जज को भी उससे परेशानी हुई।

नरक के देवता ने मरे हुए हुए लोगों के जज से कहा — "मुझे पता नहीं कि तुम्हारे दिमाग में क्या घुस गया है पर तुम्हारी रिपोर्ट से तो ऐसा लगता है कि जैसे इस स्त्री के तीन सिर हैं और छह बाँहें हैं।

मुझे लगता है कि इस स्त्री को मुझे खुद ही देखना पड़ेगा। मुझे यकीन है कि मैं उसको एक ही दिन में नरक ले आऊँगा।" और यह सोच कर नरक का देवता खुद ही धरती की तरफ चल दिया।

जब वह धरती पर पहुँचा तो शाम हो चुकी थी। उसने अपने आपको एक साये में बदल लिया ताकि वह उस ज़ोर से बोलने वाली स्त्री के घर में चुपचाप घुस सके।

उस समय सारा परिवार शाम के खाने के लिये इकट्ठा हुआ था सो वह एक सुरक्षित जगह ढूँढने लगा जहाँ वह आराम से छिप सके। वहीं रसोईघर के एक कोने में घोंघों[58] से भरा एक मिट्टी का

बर्तन रखा था सो नरक के देवता ने अपने आपको एक मोटे से घोंघे में बदला और जा कर उस घोंघों वाले बर्तन में बैठ गया।

[58] Translated for the word "Snails". See its picture above.

वहॉ बैठे बैठे वह यह सोचता रहा कि वह उस स्त्री को कैसे मारेगा। तभी उसने उस स्त्री को अपने बेटे से यह कहते हुए सुना कि वह उसको उस मिट्टी के बर्तन में से एक कटोरा मोटे वाले घोंघे ला कर दे।

लड़का उठा और उसने माटे मोटे घोंघे ढूँढने के लिये उस मिट्टी के बर्तन में अपना हाथ डाल दिया और वह उसमें से मोटे मोटे घोंघे ढूँढने लगा। उस बच्चे के हाथ उसके शरीर से कई बार छुए तो वह पास पड़े घोंघों के नीचे और नीचे घुसता गया।

आखिर उस बच्चे ने कुछ घोंघे उठाये और वहॉ से चला गया और वह नरक का देवता अपने आपको खुशकिस्मत समझते हुए कि मैं बच गया उड़ कर वहॉ से अपने घर नरक चला गया।

जब नरक के देवता ने उस चालाक भूत और मरे हुए लागों के जज को उस स्त्री के बारे में बताया तब भी उसकी सॉस ठीक से नहीं आ रही थी और वह कॉप रहा था।

वह बोला — "अब मुझे पता चला कि तुम लोगों का क्या मतलब था। मुझे लगता है कि मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ कि मैं वहॉ से बच कर आ गया हूँ। मुझे लगता है कि वह इस तरह की स्त्री नहीं है इसलिये हमको उसको छोड़ देना चाहिये।"

मरे हुए लोगों का जज तो इस बात पर राजी हो गया पर वह चालाक भूत उस ज़ोर से बोलने वाली स्त्री को मारने पर तुला हुआ था।

उसको लगा कि जब तक वह उसको मार नहीं लेगा उसको चैन नहीं मिलेगा सो जब उसे कोई नहीं देख रहा था तो वह वहॉ से धरती पर जाने के लिये खिसक गया और उस स्त्री के घर पहुॅच गया।

अबकी बार वहॉ जा कर उसने उस स्त्री के बदकिस्मत पति को पकड़ लिया और घसीट कर उसको लकड़ी के एक कमरे में बन्द कर दिया।

फिर वह उसके पति की शक्ल में आ गया और अपनी उसी शक्ल में वह उस स्त्री के पलंग पर जा कर लेट गया। उसने सोचा कि वह स्त्री अभी सोने आयेगी तब वह उसे देख लेगा।

पलंग पर लेट कर वह उसकी पत्नी का इन्तजार करने लगा। वह वहॉ बहुत देर तक इन्तजार करता रहा पर वह स्त्री वहॉ नहीं आयी।

बहुत देर तक इन्तजार करने के बाद भी जब वह स्त्री अपने सोने के कमरे में नहीं आयी तो उसे उसको ढूॅढने के लिये मजबूरन उस कमरे के बाहर जाना पड़ा।

ढूॅढते ढूॅढते वह उसको रसोईघर में मिली। उसने देखा कि वह रसोईघर में अपने पैर धो रही थी। वह उसको देख कर बहुत खुश हुआ और दबे पॉव उसके पीछे जा कर उसके कन्धे पर अपना हाथ रख दिया।

फिर वह अपनी सबसे ज़्यादा मीठी आवाज में बोला — "लाओ मैं तुम्हारे पैर धो दूँ। सारा दिन काम करते करते तुम थक गयी होगी। मैं तुम्हारे शरीर में तेल भी लगा दूँगा ताकि तुम्हारी खाल चिकनी हो जाये।"

उस भूत ने महसूस किया कि उस स्त्री के कन्धे कॉप रहे थे। तो बजाय इसके कि वह मुस्कुरा कर पीछे को तरफ घूमती उसने पानी की बालटी उठायी और घूम कर उस भूत के ऊपर उस बालटी का पानी डाल दिया। फिर वह रसोईघर का दरवाजा ज़ोर से बन्द करती हुई रसोईघर से बाहर निकल गयी।

पानी के शरीर पर पडते ही उस भूत ने एक ज़ोर की चीख मारी क्योंकि उस पानी से उसका शरीर पिघलने लगा था।

नरक के देवता ने उसकी वह चीख सुन ली और तुरन्त ही उसने उस भूत को नरक लाने के लिये दो और भूत धरती पर भेज दिये। वे दो भूत उस चालाक भूत को उठा कर नरक ले आये।

जब वह कुछ सॅभला तो नरक के देवता ने उसको और दूसरे भूतों को बुला कर एक मीटिंग की। उस मीटिंग में उसने कहा — "बस बहुत हो गया। अब तुम लोग उस स्त्री को छोड़ दो। मुझे उसकी आवाज अब बिल्कुल भी नहीं सुननी।

और उसके जैसी अगर कोई दूसरी स्त्रियॉ हैं भी तो भी तुम लोगों के लिये अब सबसे अच्छा तो यही है कि तुम लोग आदमियों की दुनियॉ ही छोड़ दो।"

सब भूत इस बात पर राजी हो गये और बस उसके बाद भूतों और मरे हुए लोगों के जज ने लोगों को फिर कभी परेशान नहीं किया।

11 चूहे की शादी[59]

एक बार की बात है कि मिंग साम्राज्य के दिनों में यू पहाड़ पर चुई ली पुल के पास वाह चीयू परिवार[60] एक बहुत बड़े घर में रहता था।

एक बार एक नये साल की शाम[61] को घर के मालिक ने अपने घर के एक ऐसे कमरे से खुशी की कुछ चीखों की आवाजें सुनी जो बरसों से बन्द था।

वह तुरन्त उधर गया और जा कर उस कमरे का जंग लगा दरवाजा जितनी आहिस्ता से खोल सकता था उतनी आहिस्ता से खोला और धीरे से उसके अन्दर घुसा।

वहॉ का दृश्य देख कर तो उसको अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसने देखा कि दूर एक कोने में एक बहुत बड़ा काला चूहा गाने बजाने वाले, नौकरों और बारात के जुलूस के आगे आगे चल रहा था।

उस बड़े चूहे के पीछे छह छोटे चूहे एक एक बाजा ले कर नाच रहे थे और दुलहा चूहा काला टोप लगाये जिसमें एक सुनहरी फूल

[59] Rats' Wedding – a myth from China, Asia.
[60] The Wah Chiyu family lived in a very large house near Chui Li Bridge on Yu Mountain during the period of Ming Dynasty (1368-1644 AD) – 276 years.
[61] Eve of 31st December is called New Year's Eve.

लगा था छोटे से घोड़े पर सवार था। उसके दोनों तरफ चार चार चूहे छोटी छोटी भूरे रंग की घोड़ियों पर सवार हो कर चल रहे थे।

घर का मालिक यह देख कर तो और ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गया जब उसने देखा कि आठ आदमी दुलहिन की कुर्सी ले कर जा रहे थे और वे आठों आदमी केवल एक एक फुट लम्बे ही थे।

उन सबके पीछे ऑखों में ऑसू भरे एक बूढ़ा सीडान कुर्सी पर बैठा जा रहा था जिसको दो चूहे उठा कर ले जा रहे थे। बारात के इस जुलूस ने उस घर के मालिक के सामने ही कमरे में एक चक्कर काटा और फिर कमरे के दूर वाले कोने में लकड़ी की बनी एक दरार में गायब हो गये।

उन चूहों के गायब हो जाने के बाद घर का मालिक वहॉ से वापस लौट आया पर उसने अपने घर वालों से इस बारे में इस डर से कुछ नहीं कहा कि कहीं उसके घर वाले यह न समझें कि वह इन सब चीज़ों को केवल सोच ही रहा था। वे सचमुच में नहीं घटी थीं।

अगली रात वह फिर वहॉ गया और वहॉ उसने फिर से वे चूहे देखे। उस दिन वे शादी की दावत शुरू करने जा रहे थे।

इस तरह अगले आठ दिन तक वह बराबर उस कमरे में रोज जाता रहा और वहॉ चूहों की शादी के मनाने के तरीके देखता रहा।

दसवीं रात तो उनके नाच से सारा कमरा हिल रहा था क्योंकि वे अमावस्या[62] के आने का त्यौहार मना रहे थे। इसके अगले दस दिन तक उस बूढ़े चूहे ने जो सीडान कुर्सी में बैठा था एक टीचर बुलाया जो उसके नये दामाद[63] को लिखना और हिसाब किताब रखना सिखाये।

बीस दिन तक यह सब छिपे छिपे देखने के बाद घर के मालिक से नहीं रहा गया और उसने अपने घर वालों को वह सब बता दिया जो उसने अब तक देखा था। पर किसी ने उसका विश्वास ही नहीं किया।

सो इक्कीसवें दिन वह उन सबको यह दिखाने के लिये उस कमरे तक ले गया जहॉ यह सब हो रहा था पर वहॉ तो कोई भी नहीं था। वे सारे चूहे और छोटे आदमी गायब हो गये थे।

हालॉकि वह उस कमरे में अगले कुछ हफ्तों तक बराबर जाता रहा पर वह कमरा हमेशा ही खाली रहा और उसका परिवार यह सोचता रहा कि वह नये साल की खुशियों के मनाने के बाद में अपने आप ही कुछ कुछ देख रहा था।

उसके बाद फिर कुछ महीने गुजर गये। एक दिन घर का मालिक अपने घर के सामने के दरवाजे के बाहर बैठा था और अपने

[62] Translated for the word “New Moon”

[63] Translated for the word “Son-in-law” – daughter’s husband

पड़ोसियों को माहजौंग[64] खेल खेलते और बात करते देख रहा था कि उधर से एक ताओ पुजारी[65] निकला।

वह पुजारी उसके घर के सामने रुक गया और उसके घर की तरफ देख कर उससे बोला — "तुम्हारे घर में एक बहुत ही ताकतवर बुरी आत्मा है और मैं उस आत्मा को तुम्हारे घर में से बाहर निकालने में सहायता कर सकता हूँ।"

घर के मालिक को उस पुजारी की बातों पर विश्वास हो गया और उसने उसको घर में बुला लिया। पुजारी को उस कमरे का रास्ता दिखाने की जरूरत ही नहीं पड़ी। वह अपने आप ही घर के ऊपर बने उस कमरे में चला गया जहाँ चूहों की शादी हो रही थी।

वहाँ पहुँच कर उसने अपनी कमर की पेटी से लटकी एक लम्बी तलवार निकाली जिसके चारों तरफ सिक्के लगे हुए थे। उसने वह तलवार अपने मुँह के सामने रखी और उसको छत की तरफ कर के उसमें एक फूँक मारी।

उसकी फूँक की हवा एक घने धुँए के रूप में ऊपर उठी। उस धुँए ने फट कर घर के देवता को प्रगट किया। उन देवता ने घर के एक कोने की तरफ इशारा किया और गायब हो गये।

[64] Mahjong game – a Chinese puzzle game played by four people
[65] Tao priest – Tao is a Chinese religious practice

जैसे ही वह देवता गायब हुए तो उस कोने की तरफ से वे छोटे आदमी दीवार में से प्रगट हो गये जो उन चूहों के जुलूस में थे और आ कर फर्श पर गिर पड़े।

इससे पहले कि वे आदमी होश में आते पुजारी ने उनके दिलों में अपनी तलवार घुसा कर उनको पकड़ लिया। बाद में घर के नौकरों को उनके शरीरों को और लकड़ी के फर्श से उनका खून साफ करने के लिये बुलाया गया।

घर के मालिक ने पुजारी के सामने इज़्ज़त से सिर झुकाया और उससे पूछा कि वह उस काम के लिये उसको क्या दे।

पुजारी बोला — "तुमको तो मालूम ही है कि मैं ताओ का पुजारी हूँ और मैं दूसरों की सहायता करने के बदले में कुछ नहीं लेता पर क्योंकि मैंने तुम्हारे घर की बुरी आत्मा को निकालने के लिये अपनी सहायता के लिये तुम्हारे घर के देवता को बुलाया था। और मुझे यह भी मालूम है कि उनको धन्यवाद देने के लिये खाने और शराब की जरूरत पड़ेगी।"

घर के मालिक ने हाँ में सिर हिलाया। पर जब वह पुजारी चला गया तो वह सोचता रहा कि उस पुजारी के कहने का क्या मतलब था। क्योंकि उस पुजारी की यह माँग कुछ अजीब सी थी क्योंकि घर के देवता का तो काम ही यह था कि वह घर की बुरी आत्मा को घर में से निकालने में सहायता करे फिर उनको कुछ क्यों देना।

और यह सबको मालूम था कि उनको किसी चीज़ की जरूरत होती नहीं थी। इसके अलावा कोई ताओ पुजारी दूसरे देवता की तरफ से भी कुछ नहीं माँगते थे। यही सोच कर उसने उस पुजारी की माँग पर कोई ध्यान नहीं दिया और अपने घर के देवता को ऐसे ही छोड़ दिया।

पर जैसे ही उसने ऐसा सोचा कि एक गुस्से भरी आवाज घर में गूँज गयी — "मैंने तुम्हारे घर में से एक बुरी आत्मा को बाहर निकालने में तुम्हारी सहायता की और तुम घर के उस देवता के साथ कंजूसी का बर्ताव कर रहे हो जिसने तुम्हारी सहायता की। मैं तुमको शाप देता हूँ कि तुम्हारा परिवार कभी भी शान्ति से नहीं रह पायेगा।"

जब घर के मालिक ने यह धमकी सुनी तो उसको विश्वास हो गया कि ताओ पुजारी के रूप में वह एक शैतान था। पर अब तो अपने परिवार की किस्मत बदलने के लिये उसको बहुत देर हो चुकी थी।

उस दिन के बाद से उसके घर में बहुत सारे चूहे इधर उधर घूमने लगे। वे मेज कुर्सियों के चारों तरफ घूमते, परिवार के कपड़े खाते और उस घर के भंडारघरों में रखी चीज़ें खराब करते।

हालाँकि उन्होंने घर की हर चीज़ को आलमारी और डिब्बों में बन्द कर के रखने की कोशिश की पर उनकी कोई भी तरकीब उन चूहों को उनकी किसी भी चीज़ को गर्म करने से नहीं रोक सका।

जैसे ही नौकर पहले का सब कूड़ा साफ करते चूहे फिर वापस आ जाते और फिर से चीज़ों को बर्बाद करने में लग जाते।

दो हफ्ते की इस बरर्बादी के बाद उस परिवार ने अपना घर छोड़ दिया। वे चॉग तीन शी से मिलने के लिये किआंग्सी[66] चले गये। चॉग तीन शी उस समय का चीन का सबसे अच्छा ताओ पुजारी था। उसने जब घर के मालिक की कहानी सुनी तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ।

वह खुद अपने कुछ शिष्यों को साथ ले कर वाह चीयू के परिवार के साथ उन चूहों को देखने के लिये उसके घर चल दिया।

जब वाह चीयू का परिवार अपने घर में नहीं था तो वहॉ तो हर कमरे में चूहों ने खूब ऊधम मचाया हुआ था पर जब उनको लगा कि एक बहुत ताकतवर ताओ पुजारी आ रहा है तो वे एक दूसरे के ऊपर गिरते पड़ते वहॉ से छिपने के लिये भाग गये।

चूहों के शाप को नष्ट करने के लिये चॉग तीन शी पुजारी ने पहले घर की रक्षा के लिये पॉच डंडे घर के चारों तरफ गाड़े। फिर अपनी जामुनी पोशाक से टोटकों का एक थैला निकाला और उन टोटकों को घर के मालिक को दे कर उन्हें उन डंडों के ऊपर रखने के लिये कहा।

उसके बाद वह अकेला ही घर के उस कमरे में गया जिसमें घर के मालिक ने चूहों की शादी देखी थी।

[66] They went to Kiangsi to see Chang Tien Shih

उसने खूबानी[67] की लकड़ी का एक टुकड़ा निकाला जिस पर कुछ लिखा हुआ था और उससे उस झिरी को बन्द कर दिया जिसमें नये साल की शाम को चूहे गायब हो गये थे।

उसके बाद उसने खूबानी की लकड़ी की ही दो तलवारें निकालीं और उनको भी वहीं उसी झिरी के सामने गाड़ दिया। जब वह यह सब कर रहा था तो वह साथ में कुछ पढ़ता भी जा रहा था।

जब उसकी यह रस्म पूरी हो गयी तो वह वाह चीयू के परिवार और अपने शिष्यों के पास आया। वहॉ वाह चीयू के परिवार ने उसकी खातिरदारी की और फिर वे सब ताओ पुजारी लोग किआंग्सी वापस चले गये।

महीनों बाद वह वाह चीयू परिवार उस घर में शान्ति से सोया। पर पॉच दिन बाद परिवार को हर कमरे में से बदबू आने लगी। यहॉ तक कि वह बदबू उनके कपड़ों में भी बस गयी थी। उस बदबू से सब लोग बहुत परेशान थे।

घर का मालिक डर गया। उसको लगा कि शायद चूहे फिर से आ गये हैं। वह घर के ऊपर वाले कमरे में देखने गया जहॉ कि वह बदबू सबसे ज़्यादा तेज़ थी।

[67] Translated for the word “Peach”. It is a fruit – see its picture above.

उसने अपने नौकरों को वह खूबानी की लकड़ी की डाट[68] जो वह पुजारी लगा कर गये थे तोड़ने के लिये और फिर उस छेद में घुसने के लिये कहा।

पर वह बदबू इतनी तेज़ थी कि उसके कुछ नौकर तो उस छेद में घुसने से पहले ही बेहोश हो गये। पर जो उस छेद में घुस पाये वे खुशी से चिल्ला पड़े।

चॉग तीन शी के टोटकों और खूबानी की लकड़ी के टुकड़ों ने सब चूहों को मार डाला था। असल में वह बदबू उन्हीं मरे हुए चूहों की थी।

सबसे पहले हटाये जाने वाले चूहों में वे दो बहुत बड़े बड़े चूहे थे जिन्होंने वाह चीयू के घर को शापित किया था।

उस दिन के बाद से जो भी यू पहाड़ के आस पास और यॉगट्ज़ी नदी[69] के उत्तर और दक्षिण में रहता है वह शादी के मौके पर शादी की भेंटों के रूप में नमक और चावल घर के हर कोने में रखता है। और वह नये साल की शाम को भी जल्दी सोने चला जाता है ताकि वहॉ चूहे आजादी से आनन्द मना सकें।

चीन के दूसरे हिस्सों में भी नये साल के मनाने के समय एक दिन होता है जिस दिन रात में घर में चूहे आजादी से घूमने दिये

[68] Translated for the word “Seal”

[69] Yangtzi River – a famous and the longest river of Asia in China, Asia and the third lomgest river of the world after Nile of Africa and Amazon of South America, called also “Yellw River” and “the Sorrow of China”

जाते हैं और खाने पीने दिये जाते हैं कि ताकि आने वाले साल में परिवार आराम और शान्ति से रह सके।

12 धब्बे वाला हिरन और चीता[70]

एक बार एक धब्बे वाला हिरन था जिसका नाम था यू यू[71]। वह अक्सर ही एक घने जंगल के बाहर की तरफ के मैदान में चरा करता था। वहॉ बरगद[72] के पेड़ों की एक कतार लगी हुई थी जो उस घने जंगल की हद जैसी थी। उसने उस हद को भी कभी पार नहीं किया था।

एक बार एक किसान का कुत्ता उस मैदान में घूमता घूमता उधर आ निकला और यू यू का पीछा करने लगा। उस बेचारे हिरन का पहले किसी ने इस तरह से पीछा भी नहीं किया था सो वह डर गया और डर कर जंगल के अन्दर की तरफ भाग गया।

उसने पहले कभी इतना अँधेरा भी नहीं देखा था सो वह डर के मारे उस अँधेरे में ही भागता जा रहा था भागता जा रहा था। चारों तरफ पेड़ों से बेलें लटकी हुई थीं वह उन्हीं में से हो कर भागा जा रहा था कि उसका सिर एक पेड़ के तने से टकराया और वह काई[73] से भरी जमीन पर गिर पड़ा।

---

[70] The Spotted Deer and the Tiger – a legend from China, Asia.

[71] Yu Yu – name of the spotted deer

[72] Translated for the word “Banyan tree”. It can be very big and can have as many trunks that its main trumk cannot be identified. In Calcutta, India, there is a Banyan tree under which a large army once took rest at night.

[73] Translated for the word “Moss”

जव उसकी ऑखें जंगल में अँधेरे में देखने के लायक हो गयीं तो उसने अपने चरने वाले मैदान में लौटने का रास्ता ढूँढना शुरू किया पर वह मैदान की तरफ जाने की बजाय जंगल में और भी ज़्यादा गहरे जाता गया। वह अँधेरे में रास्ता भूल गया था।

भागते भागते आखिर वह थक गया और आराम करने के लिये रुक गया। तभी एक साही[74] नीचे उगे हुए पौधों में से आ निकला और उसके खुरों को सूँघने लगा।

फिर उसने अपनी लम्बी नाक ऊपर उठायी और सूँघ कर उस अजनबी जानवर को पहचानने की कोशिश करने लगा। जब वह उसको न पहचान सका तो उसने उससे पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो?"

यू यू बड़ी नम्रता से बोला — "मैं यू यू धब्बे वाला हिरन हूँ।" उसने अपने शब्द खत्म किये ही थे कि एक लम्बी दुम वाली चिड़िया[75] ऊपर से उड़ कर नीचे आ गयी।

जब वह चिड़िया नीचे उड़ कर आयी तो उसके पंख हिरन के सींगों से छू गये। वह चिड़िया बोली — "ओह तो तुम धब्बे वाले हिरन हो। मैंने उनके बारे में कुछ कुछ सुना है। पर क्या सारे धब्बे वाले हिरन तुम्हारे जैसे अजीब दिखायी देते हैं?"

---

[74] Translated for the word "Porcupine". See its picture above.

[75] Translated for the word "Pheasant". See its picture above.

"हॉ मैं धब्बे वाला हिरन हूँ और सारे धब्बे वाले हिरन मेरे जैसे ही दिखायी देते हैं। तुमने इससे पहले कभी कोई धब्बे वाला हिरन नहीं देखा क्या?"

एक घोंघा जो यू यू के सिर के ऊपर पाइन पेड़ के पत्ते पर आराम कर रहा था बोला — "शायद नहीं, हम लोगों ने ऐसा कोई

हिरन पहले कभी नहीं देखा। पहले कोई ऐसा हिरन इस जंगल की तरफ कभी आया ही नहीं।"

यू यू ने सब जानवरों की तरफ देखा और बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। मुझे तुम लोगों से जंगल की जिन्दगी के बारे में कुछ सीखना है।"

जंगल के जानवर इस अजीब जानवर यू यू की सहायता करने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गये। उन्होंने उसको स्वाददार खाना बताया, आराम करने की जगहें बतायीं और फिर उसको अपने आप ही जंगल की ज़िन्दगी देखने के लिये छोड़ दिया।

कुछ देर बाद यू यू एक बड़े से साफ मैदान में घुसा। जैसे ही उसने इधर उधर देखने के लिये अपना सिर उठाया तो उसको चीते की हरी हरी ऑखें दिखायी दीं।

यू यू तो डर के मारे कॉप गया। यू यू को पता था कि यह चीता तो उसको अपने एक ही पंजे के वार से मार देगा। पर यह क्या? चीते ने तो अपना शरीर एक इंच भी नहीं हिलाया।

चीते ने भी धब्बे वाला हिरन पहले कभी नहीं देखा था सो वह उसकी अजीब सी शक्ल देख कर बोला — "तुम कौन हो और तुम इतने बदसूरत क्यों हो?"

यू यू की तो घबराहट की वजह से जान ही निकली जा रही थी पर फिर भी उसने हिम्मत बटोरी और धीरज रख कर विश्वास के साथ बोला — "मैं यू यू हूँ, धब्बे वाला हिरन।"

चीता गुर्राया — "ओह तो तुम धब्बे वाले हिरन हो। वह तो ठीक है, पर तुम यह तो बताओ कि तुम्हारे सिर पर ये कौन से पौधे उगे हुए हैं।"

जब यू यू इस सवाल का जवाब सोच ही रहा था कि चीते ने उसकी तरफ देख कर अपना चेहरा सिकोड़ा और उसकी तरफ झपटा। उसको देख कर यू यू डर गया पर तभी उसके दिमाग में एक विचार आया।

वह चीते से बोला — "लगता है कि तुम कोई बहुत अक्लमन्द जानवर नहीं हो। तुम्हारा यही मतलब है न कि तुम यह ही नहीं जानते कि ये सादा सी चीज़ें क्या हैं।

लगता है कि तुमको तो दुनियॉ की मामूली सी जानकारी भी नहीं है इसलिये अब तुम्हें मुझे ही बताना पड़ेगा कि ये क्या चीज़ हैं। ये चीता चौप स्टिक्स[76] हैं।"

[76] Chop Sticks – chop sticks are two small thin wooden sticks the Chinese use to eat their food. See their picture above.

धब्बे वाला हिरन आगे बोला — "वैसे तो सारी चौप स्टिक्स सीधी होती हैं पर क्योंकि चीते का मॉस बहुत चिकना होता है इसलिये उसको मुझे घुमावदार चौप स्टिक्स से खाना पड़ता है ताकि खाते समय मेरा खाना वापस कटोरे में न गिर जाये।"

यह सुन कर चीता तो सकते में आ गया। अपने इतने सालों के शिकार करने और इधर उधर घूमने में उसने यह कभी नहीं देखा और सुना था कि किसी ने कभी चीते का मॉस खाने की हिम्मत की हो। उसको तो यह सुन कर ही बहुत अजीब लगा।

वह यू यू की ताकत का अन्दाजा लगाने के लिये उसके करीब खिसक आया और बोला — "तुम किसी चीते को मारने के लिये बहुत छोटे हो, ओ धब्बे वाले हिरन।"

यू यू की ऑखें आश्चर्य से घूम गयीं। वह बोला — "क्या? मैं चीते को मारने के लिये बहुत छोटा हूँ? ज़रा तुम मेरी पीठ पर पड़े इन धब्बों को तो देखो।

मुझे विश्वास है कि तुमको तो यह पता ही नहीं है कि ये धब्बे होते किसलिये हैं। मेरे ये धब्बे उन चीतों की गिनती बताते हैं जिनको मैंने मारा है और खाया है।

तीन साल पहले मैं यह पूछने के लिये जेड बादशाह[77] के पास गया था कि मैं किस तरह से

[77] Jade Emperor – the Emperor of Sky

अमर बन सकता हूँ तो उन्होंने मुझे बताया कि धरती पर मेरे आने का एक ही उद्देश्य था।

उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे धरती पर के हर उस चीते को खाना है जो किसी ज़िन्दा मॉस को खाता है और हर चीते को खाने के लिये मुझे एक धब्बा मिल जायेगा। जब मैं एक हजार चीते खा लूँगा तब मैं अमर हो जाऊँगा। अब तुम मेरे इन धब्बों की तरफ देखो और बताओ कि क्या तुम मेरे शरीर के इन धब्बों को गिन सकते हो?"

जब यू यू यह सब कह रहा था वह खुद डर के मारे कॉप रहा था। और जब तक यू यू ने अपनी बात खत्म की तब तक तो वह बुरी तरह कॉपने लगा।

चीते को एक बार फिर से शक हुआ कि यह हिरन कुछ अजीब सी बात कर रहा है तो उसने हिरन से फिर पूछा — "जब तुमने इतने सारे चीते मारे और खाये हैं तो फिर तुम इतने कॉप क्यों रहे हो?"

यू यू ने कॉपती हुई आवाज में जवाब दिया — "मैं कॉप नहीं रहा हूँ। असल में चीते को खाने से पहले मुझे उसको खाने के लिये ताकत बनानी पड़ती है तो मैं वह ताकत बना रहा हूँ और मैं उसी ताकत की वजह से हिल रहा हूँ न कि डर की वजह से।"

चीता अब इससे ज़्यादा नहीं सुन सकता था। वह तुरन्त ही पलटा और बिना पीछे देखे घने जंगल की तरफ भाग गया।

वह तब तक भागता रहा जब तक कि उसको इस बात का यकीन नहीं हो गया कि हिरन अब उसका पीछा नहीं करेगा। थक कर वह एक पाइन के पेड़ की शाख के नीचे गिर पड़ा।

पाइन के पेड़ की एक शाख पर से एक आवाज बोली — "हलो चीते राजा। लगता है तुम किसी से भागने की कोशिश कर रहे हो। किससे डर रहे हो तुम?"

आवाज सुन कर चीते ने ऊपर देखा तो देखा कि वहॉ एक बन्दर एक शाख से उलटा लटका हुआ मुस्कुरा रहा था। वह चीते की कहानी सुनना चाहता था इसलिये उसने अपनी पूँछ खोली और जमीन पर कूद पड़ा। वह चीते के पैरों के पास आ कर बैठ गया।

चीते ने हकलाते हुए और कॉपते हुए अपनी वह अजीब सी कहानी बन्दर को सुना दी। बन्दर को इस कहानी पर विश्वास ही नहीं हुआ।

पूरी कहानी सुनने के बाद उसने चीते से कहा कि वह खुद भी उस धब्बे वाले हिरन को देखना चाहता था इसलिये वह उसको उस हिरन के पास ले चले।

चीता बोला — "नहीं नहीं, मैं वहॉ नहीं जाऊँगा। अगर उस हिरन ने मेरे ऊपर हमला कर दिया तो मेरे पास तो बचने का कोई रास्ता भी नहीं है। तुम कम से कम पेड़ पर तो चढ़ सकते हो।"

पर बन्दर को तो ना सुनना नहीं था। उसने चीते से इतनी प्रार्थना की कि चीते को उसको उस हिरन के पास ले कर जाना ही पड़ा। पर वह उसको एक शर्त पर ले जाने के लिये तैयार हुआ।

बन्दर अपने आपको चीते की कमर से बॉध लेगा ताकि जब बन्दर उस हिरन से बच कर शाख पर चढ़े तो वह चीते को भी अपने साथ ले ले। सो बन्दर ने अपने आपको मोटी मोटी बेलों से चीते की पीठ से बॉध लिया और वे दोनों उस हिरन के पास चल दिये।

यू यू ने जंगल में किसी के आने की आवाज सुनी तो उसने उस तरफ देखा तो अॅधेरे में उसको चीते के शरीर के धारियॉ दिखायी दीं जो धूप की एक धारी की रोशनी में चमक रही थीं।

यू यू तो आश्चर्य से कूद पड़ा और चीता डर के मारे जम सा गया। चीते को लगा कि वह हिरन उसको मारने के लिये अपनी सारी ताकत इकट्ठी कर रहा था।

सो एक बार फिर वह अन्धाधुन्ध जंगल के कॉटों में गड्ढों में झाड़ियों में होता हुआ भाग गया और इस पूरे समय बन्दर उसकी पीठ से बॅधा रहा।

इतनी तेज़ी से अन्धाधुन्ध भागने की वजह से बन्दर तो बेहोश हो गया और चीता भी गिर पड़ा। जब चीता कुछ होश में आया तो बन्दर से बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि वह धब्बे वाला हिरन कितना भयानक है पर तुम मेरी बात ही नहीं मान रहे थे।"

उस दिन से बन्दर अपना समय केवल पेड़ों की ऊपर वाली शाखों पर ही बिताता है और चीता अपने घने जंगल से बाहर नहीं जाता।

13 कुआन यिन की भविष्यवाणी[78]

लो यॉग नदी फूकीं प्रान्त में[79] सबसे ज़्यादा काम आने वाली, सबसे ज़्यादा चौड़ी और सबसे ज़्यादा खतरनाक नदी थी। यह नदी सारे प्रान्त में कच्चा माल और खाना ले जाने का मुख्य जरिया थी।

बहुत सारे लोग उस नदी को पार करते हुए मर गये थे पर वे उसको पार करने के लिये उस पर एक पुल नहीं बना सके थे।

एक दिन पतझड़ की एक सुबह को अचानक ही लो यॉग नदी में बहुत ज़ोर का तूफान आ गया। यह तूफान इतनी ज़ोर का था कि उस तूफान की हवा के एक ही झोंके ने उसके पास में लगे सारे पेड़ उखाड़ दिये थे और बहुत सारे मकान गिरा दिये थे।

उसी समय नदी में एक छोटा सा जहाज़ यात्रियों को ले कर जा रहा था। वह भी उस नदी में तूफान से उठे भॅवर[80] में फॅस गया। और फिर हवा और लहरों ने उसको इतना ऊॅचा उठा कर किनारे डाल दिया कि जिससे सुबह की रोशनी भी रुक गयी।

[78] Kuan Yin's Prophecy – a myth from China, Asia.

[79] Lo Yang River in Fukien Province

[80] Translated for the word "Whirlpool". See its picture above.

उस जहाज में बैठे यात्री सहायता के लिये चिल्लाने लगे, बच्चे डर कर रोने लगे और मुर्गियों, मछलियों और सब्जियों की टोकरियॉ उछल उछल कर नदी के पानी में गिरने लगीं।

उस जहाज में बैठे यात्रियों ने तो यह उम्मीद ही छोड़ दी थी कि वे फिर कभी जमीन पर चल पायेंगे कि तभी सफेद कपड़ों में लिपटी एक स्त्री की शक्ल जहाज पर प्रगट हुई।

उसने अपनी ऑखें बन्द की, पानी की तरफ हाथ फैलाये और पानी ने उसका हुक्म माना। उसके हुक्म से हवा रुक गयी, लहरें शान्त हो गयीं और तूफान के बादल छॅट गये और सब कुछ शान्त हो गया। यह स्त्री दया की देवी[81] कुआन यिन थी।

जहाज़ पर के सारे यात्री आश्चर्य से उस दया की देवी कुआन यिन की तरफ देखते रह गये और एक एक कर के उसके पैरों पर पड़ गये और उसके सामने अपना सिर झुकाने लगे।

कुआन यिन जहाज के एक कोने से दूसरे कोने तक गयी और एक स्त्री की तरफ गयी जिसको बच्चे की आशा थी और जो जहाज़ के एक कोने में खड़ी थी।

वह स्त्री उस देवी को देख कर फुसफुसायी — "धन्यवाद।"

[81] Kuan Yin – Kuan Yin is the Goddess of Mercy

उसने उस स्त्री से कहा — "फौंग साई[82], तुमको मुझे धन्यवाद देने की जरूरत नहीं है क्योंकि तुम तो खुद ही एक ऐसे बच्चे को जन्म देने वाली हो जो इस नदी पर पुल बनायेगा।"

यह कहने के बाद कुआन यिन वहॉ से गायब हो गयी और फौंग साई के पास उसको बधाई देने के लिये काफी भीड़ इकट्ठा होगयी।

फौंग साई कुआन यिन की यह बात सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी और घर लौट गयी। कुछ दिन बाद ही उसने एक बेटे को जन्म दिया जिसका नाम उसने साई सियॉग[83] रखा।

साई सियॉग बड़ा हो कर एक बहुत ही अच्छा लड़का बना। वह अपने बड़ों का कहा मानता था। जब वह सात साल का हुआ तो वह अपनी मॉ की उसके छोटे से खेत पर सहायता करता था। जल्दी ही वह उस खेत को अपने आप सॅभालने के लायक भी हो गया।

हर साल उसके जन्म दिन की शाम को उसकी मॉ उससे कुआन यिन की भविष्यवाणी दोहराती थी — "याद रखना बेटे कि जब तुम बड़े हो जाओगे तो तुमको लो यॉग नदी पर पुल बनाना है। कभी किसी को अपने काम के रास्ते में अड़चन मत डालने देना।"

---

[82] Fong Tsai – name of the mother of the boy Tsai Hsiang

[83] Tsai Hsiang – name of the son of Fong Tsai

हर साल साई सियॉग अपनी मॉ से कुआन यिन की यह भविष्यवाणी सुनता और अपने मन में यह पक्का इरादा करता कि वह कुआन यिन की इस भविष्यवाणी को जरूर पूरी करेगा।

साई सियॉग जब तीस साल का हुआ तब उसने एक इम्तिहान पास किया जिससे वह सरकार के लिये काम कर सकता था। वह वहॉ बहुत ही लगन से काम करता रहा और एक दिन वहॉ का वजीर[84] बन गया।

हालॉकि उसके पास बादशाह की दी हुई इज़्ज़त और पैसे की कोई कमी नहीं थी फिर भी वह अपने दिमाग में कुछ कुछ सोचता रहता था।

वह वहॉ के प्रान्तों की देख भाल बहुत अच्छे से करता था। वह वहॉ के हर प्रान्त के लोगों की परेशानियों को दूर करने की कोशिश करता था और इसी लिये किसानों से ले कर कुलीन लोगों तक सभी लोग उसकी एक सी इज़्ज़त करते थे।

वह हर साल बादशाह के सामने फूकीं प्रान्त[85] जाने का कोई न कोई बहाना रखता पर हर बार बादशाह अपने उस अक्लमन्द वजीर को अपने पास से कहीं जाने नहीं देता था।

[84] Translated for the word “Prime Minister”

[85] Funki Province

एक शाम साई सियॉग अपने शाही बागीचे बैठा हुआ था कि उसने चींटियों की एक लाइन चट्टान के एक छेद की तरफ जाती देखी तो उसके दिमाग मे एक तरकीब दौड़ गयी।

अगली सुबह उसने एक डंडी के ऊपर शहद लगाया और उसको ले कर शाही बागीचे में आया। जब उसने चारों तरफ देख कर यह पक्का किया कि वह वहॉ अकेला ही था तो उसने एक बड़े केले[86] के पत्ते पर चीनी भाषा के आठ अक्षर लिखे।

उन अक्षरों से उसने लिखा "साई सियॉग, साई सियॉग अपना काम पूरा करने के लिये घर लौटो।"

फिर वह अपने कमरे में लौट आया। उस कमरे में से वह शाही बागीचा देख सकता था। उसने देखा कि पॉच मिनट के अन्दर अन्दर ही बहुत सारी चींटियॉ उस पत्ते पर उसका शहद खाने आ गयी थीं। आधा घंटे बाद बादशाह भी सुबह की सैर के लिये बागीचे के दरवाजे में घुसे।

बादशाह इधर उधर फूलों और पेड़ों को देखते घूम रहे थे कि उनकी निगाह बड़े केले के पेड़ के एक पत्ते पर पड़ी जिस पर चींटियॉ वह आठ अक्षर की शक्ल में शहद खा रही थीं। उन्होंने वे

[86] Translated for the word "Plantain". See its picture above in both ripe and green forms. This is a big size banana-like tropical fruit, often double the length of normal banana, mostly found in Tamil Nadu, Kerala etc southern states of India. When it is green it is eaten as vegetable and in the form of chips, and when it is ripe it can be eaten like a fruit. In West African counties the ripe plantain is cut in 1" pieces and deep fried in oil too. There it is called "Dodo".

शब्द ज़ोर से पढ़े — "साई सियॉग, साई सियॉग अपना काम पूरा करने के लिये घर लौटो।"

यही वह पल था जिसका साई सियॉग इन्तजार कर रहा था। वह अपने कमरे से निकल कर बागीचे में भागा और बादशाह को झुक कर सलाम किया और बोला — "धन्यवाद योर मैजेस्टी। तो मैं कल घर वापस जाऊँ?"

बादशाह आश्चर्य से थोड़ा पीछे हट गये और साई सियॉग को अपने पैरों पर से उठने के लिये कहा और पूछा — "यह तुम क्या कह रहे हो साई? मैंने तो तुमको घर वापस जाने के लिये नहीं कहा। मैं तो केवल ये लिखे हुए शब्द ज़ोर से पढ़े थे।"

पर साई सियॉग तो हार मानने वालों में से नहीं था। वह अपना मामला बादशाह के सामने बेताबी से रखता ही रहा — "योर मैजेस्टी, राज्य का हर आदमी जानता है कि आपके कहे शब्द तो शाही हुक्म हैं और जब वे एक बार आपके मुँह से बोले गये तो उनका पालन तो होना ही चाहिये।"

अब बादशाह के पास और कोई चारा नहीं रह गया था सो उनको साई सियॉग की बात माननी ही पड़ी। न चाहते हुए भी उन्होंने अपने वजीर को दो महीने के लिये अपने घर जाने की इजाज़त दे दी और कहा कि वह वहॉ चुआन चू गॉव[87] में मजिस्ट्रेट का काम करेगा।

[87] Chuan Chou Village

साई सियॉग बहुत खुश हुआ और अपने घर चला गया। जिस दिन से वह अपने घर आया तभी से उसने बहुत सारे मजदूर लगवा कर उस नदी पर पुल बनवाने का काम शुरू कर दिया।

पर उस पुल की नींव में जो पत्थर डाले जा रहे थे वे ऐसे बहे चले जा रहे थे जैसे नदी के तेज़ बहाव में छोटे पत्थर बहे चले जाते हैं। वह वहॉ रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

समय कम था सो नाउम्मीद सा हो कर उसने समुद्र के ड्रैगन राजा[88] को यह प्रार्थना करते हुए एक चिट्ठी लिखी कि वह अपने तूफानी पानी को बस तीन दिन के लिये शान्त रखें।

यह चिट्ठी लिख कर साई सियॉग ने उस चिट्ठी को वजीर की सील से बन्द किया और उस चिट्ठी को ले कर समुद्री ड्रैगन राजा के पास ले जाने के लिये अपने मजदूरों में से एक आदमी ढूँढने के लिये गया जो उसको समुद्री ड्रैगन राजा के पास ले जा सके। वहॉ जा कर उसने उनसे पूछा समुद्र की तली तक कौन जायेगा।

एक बदकिस्मत आदमी सिया ते हई[89] ने यह सवाल कुछ गलत सुना और उसको लगा कि उसको मजिस्ट्रेट के सामने बुलाया जा रहा है सो वह चिल्लाया — "मैं यहॉ हूँ, मैं यहॉ हूँ।"

---

[88] Dragon King of the Sea – dragon pictures are found in many shapes. A most common picture is given here. See the picture above.

[89] Hsia Te Hai

साई सियॉग ने उसको बुलाया और उससे कहा कि वह लो यॉग नदी की गहराइयों में जाये और जा कर वह चिट्ठी समुद्र के ड्रैगन राजा को दे दे। और उसने वह बन्द चिट्ठी उस आश्चर्य भरे आदमी के हाथ में पकड़ा दी।

दूसरे मजदूर सिया ते हई को नदी के कीचड़ भरे पानी की तरफ ले गये और उसको वहॉ अकेला छोड़ दिया। अँधेरा होने लगा था।

जब सब लोग वहॉ से चले गये तो सिया ते हई अपने घुटनों पर बैठ गया और डर और घबराहट से रोने लगा। जब वह रोते रोते थक गया तो वह वहीं नदी के किनारे ही सो गया।

सपने में उसने देखा कि वह समुद्री ड्रैगन राजा के मोती और सीपी से बने एक बहुत बड़े कमरे में खड़ा हुआ था।

उसके दॉये हाथ को एक केंकड़ा[90] खड़ा हुआ अपने पैदल सिपाहियों को कुछ हुक्म सुना रहा था और उसके बॉये हाथ को समुद्री ड्रैगन राजा अपने सोने के सिंहासन पर बैठे हुए थे।

सिया ते हई राजा के सिंहासन की तरफ दौड़ा और उनके सिंहासन के सामने जमीन पर लेट कर उनको सलाम किया और हकलाते हुए बोला — "मेरा नाम सिया ते हई है। यह चिट्ठी आपके लिये है समुद्री ड्रैगन, समुद्री ड्रैगन बादशाह।"

[90] Translated for the word "Crab". See its picture above.

समुद्री ड्रैगन बादशाह ने हाथ बढ़ा कर उसके हाथ से वह चिट्ठी ले ली और उसको धीरे धीरे पढ़ा। पढ़ कर वह बोले — "जो कुछ भी वजीर ने लिखा है मैं वह कर सकता हूँ पर मैं पानी को केवल तीन दिन के लिये ही हटा सकता हूँ इससे ज़्यादा समय के लिये नहीं।"

उसके बाद समुद्री ड्रैगन बादशाह ने उसकी हथेली पर चीनी भाषा का एक अक्षर लिखा और इशारे से उसको वहाँ से जाने के लिये कहा। सिया ते हई बादशाह की तरफ देखे बिना ही वहाँ से जितनी जल्दी जा सकता था चल दिया।

सुबह की ठंडी कड़क हवा ने सिया ते हई को उसके सपने से जगा दिया। वह नदी के गीले किनारे से उठा तो उसको अपनी हथेली पर लिखा हुआ चीनी भाषा का वह एक अक्षर दिखायी दिया जो समुद्री ड्रैगन राजा ने उसकी हथेली पर लिख दिया था।

उस एक अक्षर को देख कर उसको अपने सपने की सारी घटनाऐं एक एक कर के याद आ गयीं। वह सुबह के धुँधलके में ही साई सियॉग के घर दौड़ गया। साई सियॉग उस समय सो रहा था।

उसने साई सियॉग के पहरेदारों को धक्का दिया और सीधा उसके सोने के कमरे में चला गया और खुशी से बोला — "मालिक मुझे आप अपनी नींद मे खलल डालने के लिये माफ करें पर मैं

समुद्री ड्रैगन राजा से मिला और उन्होंने मुझे यह लिख कर दिया है।"

कहते हुए उसने अपनी हथेली वजीर के सामने बढ़ा कर उसके बिस्तर की सिल्क की चादर पर रख दी।

वजीर ने उसे पढ़ा — "इक्कीसवें दिन यू बजे।"

सो उस महीने के इक्कीसवें दिन शाम को छह बजे चुआन चू[91] गॉव में एक बहुत ज़ोर की गड़गड़ाहट की आवाज सुनी गयी जैसे कि लो यॉग नदी का पानी किसी ने उसकी तली दिखाने के लिये वापस खींच लिया हो।

अपने औजार उठाने से पहले साई सियॉग और उसके मजदूरों ने कुछ अगर बत्तियॉ और कागज के नोट उस समुद्री ड्रैगन बादशाह की पूजा के लिये जलाये।

उसके बाद उन्होंने यह कसम खायी कि जब तक उनका काम खत्म नहीं हो जायेगा वे अपने औजार नहीं रखेंगे। तब कहीं जा कर साई सियॉग ने उनको काम शुरू करने का हुक्म दिया।

यह नदी एक मील चौड़ी थी और हालॉकि एक हजार मजदूर इस काम के लिये लगाये गये थे पर फिर भी पहले दिन के अन्त तक पुल का केवल एक तिहाई हिस्सा ही पूरा हो सका। और खाना तो बिल्कुल ही खत्म हो गया था।

[91] Chuan Chu village

साई सियॉग ने अपने मजदूरों को कितना ही धमकाया पर उस के मजदूरों ने तब तक काम शुरू करने से मना कर दिया जब तक कि वे नया राशन नहीं देख लेते।

साई सियॉग तो यह सुन कर बहुत परेशान हो गया कि अब वह क्या करे क्योंकि उसके पास तो पैसे बिल्कुल ही खत्म हो गये थे और बिना खाना देखे वे मजदूर वापस काम पर जाने के लिये तैयार नहीं थे।

ऐसे समय में उसको दया की देवी कुआन यिन की याद आयी जिन्होंने उसकी मॉ की जान बचायी थी। बस वह तुरन्त ही घुटनों के बल बैठ गया और मन लगा कर उनकी प्रार्थना करने लगा।

"हे कुआन यिन, तुमने मेरी मॉ से कहा था कि मै इस नदी पर पुल बनाऊॅगा और आज मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करने के लिये यहॉ मौजूद हूॅ पर मुझे अपने मजदूरों के खाने के लिये और पैसे चाहिये। हे दया की देवी मुझे बुद्धि दो। मुझे इस समय तुम्हारी बहुत जरूरत है मेरी सहायता करो।"

अगले दिन लो यॉग नदी पर एक नाव प्रगट हुई जिसमें सफेद सिल्क के कपड़े पहने एक बहुत सुन्दर स्त्री बैठी हुई थी। उसके बारे में गॉव भर में बात फैल गयी और लोग उसको देखने के लिये वहॉ आने लगे।

उस स्त्री ने अपनी नाव उस भीड़ के पास लगा ली और उनकी धीमी फुसफुसाहट को अपने हाथ के इशारे से चुप कर दिया।

फिर वह बोली — "मैं उस आदमी से शादी करने का वायदा करती हूँ जो कोई मेरी गोद में एक सोने का या चॉदी का सिक्का डालेगा।"

जैसे ही उसने यह कहा कि लोगों ने उसके ऊपर सोने चॉदी के सिक्कों की बौछार कर दी और इतने सिक्के फेंके कि उसकी नाव डूबने लगी। पर आश्चर्य, उन गॉव वालों ने कितने भी सिक्के फेंके पर एक भी सिक्का उस देवी की गोद में जा कर नहीं गिरा।

एक घंटे बाद जब वह नाव उन सिक्कों का बोझ नहीं सॅभाल सकी तो उस स्त्री ने उन गॉव वालों को उनके घर वापस भेज दिया।

पर जब साई सियॉग घर जाने के लिये मुड़ा तो उस स्त्री ने उसको अपने पास बुलाया और उससे कहा — "साई सियॉग, मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली थी इसी लिये मैं तुम्हारी सहायता करने आयी हूँ। लो यह सारा पैसा तुम्हारा है और इसको तुम मेरी भविष्यवाणी सच करने के लिये खर्च करो।"

कुआन यिन ने वह सारे सिक्के नाव में से निकाल कर घास पर साई सियॉग के पैरों के पास फेंक दिये और फिर बिना एक शब्द बोले वहॉ से गायब हो गयी।

बिना एक पल की देर किये साई सियॉग ने भी अपने मजदूरों को काम पर वापस भेज दिया। उसकी मेहनत और पक्के इरादों से उसके मजदूर बराबर काम करते रहे। और समुद्री ड्रैगन बादशाह के

नदी में पानी छोड़ने से एक घंटा पहले ही उस नदी पर पुल बन चुका था। इस तरह साई सियॉग ने उस नदी पर पुल बनाया।

14 कुआन यिन[92]

सो यह कुआन यिन कौन थी जो दया की देवी थी और इस तरह से लोगों की सहायता करती थी?

चीन के चॉद के अनुसार बने हुए कैलेन्डर के छठे महीने का उन्नीसवॉ दिन बोधिसत्व[93] की तरह से कुआन यिन[94] के पुरखों के स्वर्ग जाने का सालाना दिन[95] है।

यह कुआन यिन सहानुभूति और दया की देवी है और चीनी बौद्ध लोग उसकी सारी दुनियॉ में जहॉ भी रहते हैं वहीं उसकी पूजा करते हैं।

पर हमेशा से ही वह देवी नहीं थी। यह कहानी यही बताती है कि वह बोधिसत्व कैसे बनी।

यह उस समय की बात है जबकि इतिहास भी नहीं लिखा जाता था। सिंग लिन[96] नाम का एक देश था जिसके राजा के तीन बेटियॉ थीं। उन तीनों बेटियों में उसकी सबसे छोटी बेटी मायो शान[97] सबसे ज़्यादा अक्लमन्द, दयावान और सुन्दर थी।

---

[92] Kuan Yin – a myth from China, Asia.

[93] In Buddhism, a person who has attained Enlightenment, but who postpones Nirvana in order to help others to attain Enlightenment: individual Bodhisattvas are the subjects of devotion in certain sects and are often represented in painting and sculpture.

[94] Kuan Yin – the Goddess of Sympathy and Mercy

[95] Translated for the word “Death Anniversary”.

[96] Hsing Lin – name of a place

[97] Maio Shan – name of the third and the youngest princess

वह हमेशा जरूरतमन्द लोगों के बारे में ही सोचती रहती थी और उनकी सहायता करती रहती थी। उसकी दया की कहानियॉ महल के दरबारियों और नौकर चाकरों तक में मशहूर थीं।

एक शाम जब वह महल के बागीचे में पाइन के पेड़[98] के नीचे बैठी हुई थी तो उसने अपने सिर के ऊपर एक सिकाडा[99] को बोलते सुना। उसकी बोली सुनते सुनते उसको नींद आने लगी और वह सो गयी।

अचानक वह सपना देखते देखते सिकाडा की एक चीख सुन कर उठ गयी। वह कूद कर उठी तो उसने देखा कि एक टिड्डा[100] सिकाडा के शरीर के चक्कर काट रहा था।

मायो शान उठ कर सड़क के किनारे रखी एक पत्थर की बैन्च पर चढ़ गयी और वहॉ से वह सिकाडा को टिड्डे की पकड़ से बचाने की कोशिश करने लगी। इससे टिड्डे को गुस्सा आ गया और वह उसकी उॅगलियों पर कूद गया।

मायो शान ने तुरन्त ही अपना हाथ खींच लिया। इस तरह हाथ को खींचने में वह सॅभल नहीं सकी और उस पत्थर की बैन्च के बराबर से जा रही सड़क पर गिर पड़ी। वह कॉप तो गयी पर वह

---

[98] Pine Tree – a kind of evergreen tree

[99] Cicada is a kind of insect. See its picture above

[100] Translated for the word “Praying Mantis”. See its picture above below the picture of cicada.

होश में थी। जब वह उठी तो उसके माथे में लगे घाव से खून बह रहा था।

जब उसकी बहिनों ने उसको देखा तो उन्होंने उसको तसल्ली दी पर वह बस कन्धे उचका कर रह गयी और बोली — "मेरे माथे पर लगा यह निशान तो उस सिकाडा को बचाने की केवल एक छोटी सी कीमत है तुम चिन्ता न करो यह जल्दी ही ठीक हो जायेगा।"

जब उसके माथे का घाव भर गया तो वहॉ उस घाव का एक निशान बन गया और वह निशान बाद में फिर एक लाल रंग का निशान बन गया इसी लिये कुआन यिन के सभी तस्वीरों और मूर्तियों में उसके चेहरे पर यह निशान दिखाया जाता है।

मायो शान केवल जानवरों के लिये ही नहीं वह आदमियों के लिये भी उतनी ही दयावान थी। वह किसी दूसरे को दुख सहते नहीं देख सकती थी। जब उसकी मॉ एक लम्बी बीमारी के बाद चल बसी तो उसको तसल्ली देना बहुत मुश्किल हो गया।

वह बार बार भगवान से पूछती कि आदमी को इतना दुख क्यों सहना चाहिये और इसके लिये वह क्या कर सकती है।

एक सुबह जब वह अपने सवाल बुद्ध जी की मूर्ति के सामने दोहरा रही थी तो पूरा मन्दिर एक सुनहरी रोशनी से भर गया और वहॉ रखी बुद्ध जी की मूर्ति ज़िन्दा हो गयी।

मूर्ति बोली — "मेरी अच्छी बच्ची, यहाँ से बहुत दूर सुमेरु पहाड़ की चोटी पर एक सफेद कमल का फूल है और जेड[101] का एक लोटा है।

अगर तुम्हारे अन्दर हिम्मत है तो उस पहाड़ का रास्ता ढूँढो और उसकी चोटी पर जाओ। तुम उन सारे खतरों, मुश्किलों और रोगों को जीत लोगी जो इस दुनियाँ में हैं।

वहाँ से तुम वह फूल और लोटा लेती आना। आने के बाद तुम पढ़ना और ध्यान करना तो तुम एक दिन जरूर बोधिसत्व बन जाओगी और तुम्हारी यह इच्छा कि तुम सबकी सहायता करो पूरी होगी।"

मायो शान को बुद्ध जी से कुछ और बात करने का मौका ही नहीं मिला क्योंकि वह तुरन्त ही फिर से मूर्ति बन गये थे। पर फिर भी उनके शब्दों ने उसके दिल में एक नयी उम्मीद और तसल्ली जगा दी थी।

उसने तुरन्त ही अपनी एक दासी युंग लीन[102] को बुलाया और उससे जल्दी से जल्दी जाने की इस तरह से तैयारी करने के लिये कहा ताकि वह अपनी यात्रा में आने वाले खतरों का सामना कर सके।

---

[101] Jade is a semi-precious stone. It comes in several colors, but its green color is very common. See its picture above.

[102] Yung Lien – name of the maid of Maio Shan

तैयारी करने के बाद मायो शान ने अपने पिता के लिये एक चिट्ठी छोड़ी और दोनों अपनी यात्रा पर चल दीं। उन्होंने मोटे मोटे तिनकों के जूते पहन रखे थे और कन्धों पर खाने की चीज़ों और बर्तनों की टोकरियॉ ले रखी थीं।

महल छोड़ने के एक महीने बाद वे एक पहाड़ की तलहटी से गुजर रही थीं कि आसमान में बहुत सारे कौए आ गये और आसमान काला हो गया। वे नीचे और और नीचे की तरफ उड़ते आ रहे थे। युंग लीन तो उनको देख कर बहुत डर गयी और चीखने लगी।

उसको डर था कि वे चिड़ियें इतनी नीचे उड़ कर तो उसकी ऑखें ही निकाल लेंगीं पर मायो शान ने उसको शान्त किया — "तुम इतना मत डरो युंग लीन। ये चिड़ियें ऐसा नहीं करेंगी जब तक कि इनके पास ऐसा करने की कोई वजह नहीं होगी।

ऐसा करो कि थोड़ा सा खाना निकाल लो और उसको इनके सामने जमीन पर फेंक दो क्योंकि मुझे यकीन है कि ये जरूर ही भूखी हैं।"

युंग लीन ने ऐसा ही किया। उसने अपनी टोकरी अपने कन्धे से उतारी और उसमें खाना ढूँढने की कोशिश की। उसमें उसको एक कटोरा उबले हुए ठंडे चावल मिल गये। उसने वे सारे चावल अपने सामने फेंक दिये।

जैसा कि मायो शान ने अन्दाजा लगाया था वे कौए वाकई भूखे थे और इसी लिये वे उनको धमका रहे थे। उन्होंने तुरन्त ही सारे

चावल खा लिये और खा कर सब एक साथ पूर्व की तरफ उड़ गये।

युंग लीन ने अपनी मालकिन की इस सूझ बूझ और उसकी इस दया की बहुत तारीफ की जबकि वे दोनों खुद बहुत भूखी थीं और उनके पैर बहुत दुख रहे थे।

अपनी यात्रा के दूसरे महीने के आखीर में वे एक घने जंगल में आ गयीं। मायो शान निडर हो कर उस घने जंगल में से चली जा रही थी।

जब भी कभी सूरज की रोशनी उस जंगल में आ जाती तो वह उसकी जमीन को चमका देती। उस रोशनी में उनको वहॉ कई आश्चर्य देखने को मिले जो उन्होंने यात्रियों से केवल सुने ही सुने थे कभी देखे नहीं थे।

उन दोनों ने वहॉ बहुत तरीके के, शक्लों के, और साइज़ के जानवर पेड़ों के सायों में से निकलते देखे। ऐसा लग रहा था जैसे कोई अनदेखी ताकत उनको वहॉ से बाहर निकाल रही हो। कभी कभी उनको अजीब अजीब जानवरों की खाल पहने ताकतवर छोटे आदमी भी दिखायी दे जाते।

कुछ देर बाद वे दोनों एक खुली जगह में आ गयीं। वहॉ उन्होंने एक जंगली आदमी उस साफ जगह के सामने से आता देखा। उसके हाथों में उसका एक घायल दोस्त था और वह गुस्से से चीखता चला आ रहा था।

युंग लीन एक बार फिर बहुत डर गयी कि वह आदमी कहीं उन पर हमला न कर दे पर मायो शान ने एक बार फिर उसको चुपचाप और शान्त खड़ा रहने के लिये कहा।

मायो शान ने उससे पूछा — "तुमको यह कैसे लगता है कि वह हम लोगों को कोई नुकसान पहुँचायेगा? यह आदमी घायल है और इसको हमारी सहायता की जरूरत है।"

कह कर मायो शान अपनी दासी को उस साफ जगह की तरफ ले गयी और दोनों ने मिल कर उस घायल आदमी के घावों को धोया।

हालॉकि दोनों आदमियों में से कोई भी उन दोनों स्त्रियों के सामने कुछ नहीं बोला पर फिर भी मायो शान ने देखा कि उन दोनों के पैर उस जंगल में शिकार करते करते घायल हैं और टेढ़े हो गये हैं। सो उसने अपने तिनके वाले जूते उनको दे दिये। उन आदमियों ने उनके वे जूते ले लिये, उनको देखा भाला और सिर झुका कर धन्यवाद दिया।

बिना एक शब्द बोले मजबूत आदमी ने अपने घायल दोस्त को फिर से अपनी बॉहों में उठाया और उस साफ मैदान से चल दिया। मायो शान और यंग लीन भी सुमेरु पहाड़ की खोज में फिर अपनी यात्रा पर चल दीं।

सत्तर दिन के बाद अब उनका खाने का सामान भी खत्म होने पर आ रहा था सो अब वे जंगली फल और बैरी खा कर अपना गुजारा कर रही थीं।

अब उनके पास जूते भी नहीं थे सो उन्होंने अपने पैरों के चारों तरफ पत्ते बॉध लिये थे। हालॉकि उन पत्तों से उनके पैर ठीक से सुरक्षित तो नहीं थे पर फिर भी वे दोनों अपने पक्के इरादे से चलती रहीं चलती रहीं और महल से निकलने के छह महीने बाद सुमेरु पहाड़ पर पहुॅच गयीं।

पर यात्रा का सबसे मुश्किल हिस्सा तो अभी बाकी था। सुमेरु पहाड़ पर चढ़ने के लिये बड़े बड़े पत्थर वाली चढ़ाइयॉ बहुत मुश्किल थीं और पहाड़ की बर्फीली चोटियॉ आसमान को छूती नजर आ रहीं थीं। उन लोगों को उन चोटियों तक पहुॅचने में तीन दिन लग गये।

जब वे उस पहाड़ की चोटी पर खड़ी हुई थीं तो भगवान बुद्ध एक बार फिर उनके सामने प्रगट हुए। उनके एक हाथ में जेड का एक लोटा था और दूसरे हाथ में एक सफेद कमल का फूल था।

बुद्ध जी गूॅजती हुई आवाज में बोले — "मेरे अच्छे बच्चों, तुम लोगों ने यह लम्बी यात्रा कर के दिखा दिया कि तुम लोगों में इस काम के लिये कितनी लगन है। और अब मुझे यह भी मालूम है कि तुम लोग अब मेरी ये भेंटें लेने के लिये तैयार हो।

अब तुम लोग यह फूल और लोटा महल ले जाओ और अपने मन्दिर में पूजा की जगह रख देना। रोज तुम लोग आसमान को भेंट चढ़ाना और ध्यान कर के अपनी बुद्धि और समझ को बढ़ाना।

अगर तुम ऐसा करती रहीं तो तुम देखोगी कि एक दिन यह जेड का लोटा पानी से भर जायेगा और इसके पानी में से विलो पेड़[103] की एक शाख उग जायेगी। वही दिन होगा जिस दिन तुम स्वर्ग चली जाओगी और बोधिसत्व हो जाओगी।"

यह कह कर बुद्ध जी उस बर्फ में अपना कोई भी निशान छोड़े बिना वहॉ से गायब हो गये।

मायो शान और युंग लीन दोनों पहाड़ से नीचे उतर आयीं और तीन महीने में अपने घर लौट आयीं तो उन्होंने अपने शाही घर और सारे आराम छोड़ दिये। वे मन्दिर के ऑगन में एक सादे से भूसे के बिस्तर पर सोती थीं।

मायो शान ने वह जेड का लोटा बुद्ध जी के मन्दिर में बुद्ध जी की मूर्ति के सामने रख दिया और कमल का फूल वहॉ बने एक तालाब में डाल दिया। अब वह रोज बुद्ध जी की मूर्ति के सामने बैठती और सारे ज़िन्दा लोगों में मेल रखने के लिये सूत्र का जाप करती।

[103] Willow Tree – a kind of shady tree. See its picture above.

इस तरह से जप और ध्यान करते करते उनको दो साल बीत गये। इस बीच राज्य के बहुत सारे लोग उनसे बात करने के लिये और उनके साथ ध्यान करने के लिये वहॉ आते रहते थे। इस बीच वह कमल का फूल भी पूरा खिला रहा पर जेड का लोटा अभी भी खाली था।

युंग लीन हर आने वाले को बुद्ध जी का वह वायदा बताती जो उन्होंने मायो शान से किया था। वे दोनों उस पल का बहुत ही उत्सुकता से इन्तजार कर रही थीं जब मायो शान स्वर्ग जायेगी पर जेड का लोटा तो अभी तक खाली ही था।

वहीं एक लड़का रहता था, शान यिंग[104], जिसको दूसरों के साथ शरारत करने में बड़ा मजा आता था। वह हमेशा मन्दिर के ऑगन के बागीचे में खेलने के लिये आता था।

बहुत सारे लोगों ने मायो शान को सावधान किया था कि वह लड़का ठीक नहीं था पर मायो शान उसको वहॉ खेलने देती थी क्योंकि उसको लगता था कि वहॉ खेल कर वह बहुत खुश रहता था।

जब युंग लीन ने उसको जेड के लोटे और उसमें निकलने वाली विलो पेड़ की शाख की कहानी सुनायी तो उसने युंग लीन का बहुत मजाक बनाया।

[104] Shan Ying – name of a young boy who came to play in the courtyard of Buddha's temple.

लेकिन फिर उसके दिमाग में मायो शान को बेवकूफ बनाने की एक तरकीब आयी। उस रात जब मन्दिर बिल्कुल शान्त पड़ा था वह मन्दिर के कमरे में गया, जेड के लोटे में कुँए का पानी भरा और विलो पेड़ की एक शाख उसके अन्दर रख दी।

उसके अगले दिन चॉद के कैलेन्डर के छठे महीने का उन्नीसवॉ दिन था। मायो शान उस दिन भी रोज की तरह से सुबह बुद्ध जी के सामने ध्यान करने के लिये उठी।

जब वह अपना कमरा छोड़ कर ध्यान करने के लिये जा रही थी तो शान यिंग की आवाज सारे मन्दिर में गूँज गयी। वह मन्दिर के कमरों में आता जाता चिल्लाता घूम रहा था — "अरे यह तो हो गया, अरे यह तो हो गया। मैंने इसे खुद अपनी ऑखों से देखा। अब हमारी राजकुमारी बोधिसत्व हो जायेगी।"

उसकी इतनी ऊँची आवाज ने महल के सारे नौकरों और शाही परिवार को जगा दिया। वे सब मायो शान के छोटे से कमरे में आ कर जमा हो गये।

जब शान यिंग उस भीड़ में से जा रहा था तो उसने मायो शान को अपने पास खड़ी भीड़ से कहते सुना — "मुझे कल रात को एक बहुत ही अजीब सा सपना आया कि एक लड़का मेरे बोधिसत्व बनने में मेरी सहायता करने आया है।

मैं न तो उसका चेहरा ही देख सकी और न उसकी आवाज ही सुन सकी। पर मुझे मालूम है कि उसके कामों ने मेरी ज़िन्दगी बदल दी।"

कह कर मायो शान ने वह जेड का लोटा उठा लिया और लिली के फूल वाले तालाब के पास बैठ गयी। दूसरे लोग पास में खड़े हो कर सूत्र गाने लगे। दूर कहीं आसमान के किसी कोने से एक बहुत ही धीमी सी संगीत की आवाज आनी शुरू हुई और फिर ज़्यादा तेज़ होती गयी।

शान यिंग तो उस संगीत की आवाज सुन कर डर के मारे कॉपने लगी। उधर कमल का फूल भी बड़ा और और बड़ा होता जा रहा था। यहॉ तक कि उस फूल से वह पूरा तालाब भर गया।

सब लोग पीछे खिसकने लगे जब उन्होंने देखा कि मायो शान का शरीर तो ऊपर उठने लगा और हवा में तैर कर उस कमल के फूल के बीच में जा कर बैठने लगा। वह वहॉ बिना हिले डुले बैठी रही और भीड़ उसके सामने घुटनों के बल बैठी रही।

कुछ ही देर में कमल का फूल तालाब में से उखड़ा और मायो शान को ले कर ऊपर आसमान की तरफ चल दिया। जब वह बादलों में गायब में हो रही थी तो उसने शान यिंग से चिल्ला कर कहा — "धन्यवाद।"

इस तरह मायो शान स्वर्ग चली गयी जहॉ उसको जेड बादशाह[105] ने कुआन यिन, दया की देवी, बना दिया। उसकी दासी धरती पर ही रही। जब वह मरी तो उसको ड्रैगन लड़की[106] का खिताब दे दिया गया, यानी दया की देवी की दासी।

कुआन यिन के पास ऐसी ताकत है जिससे वह जहॉ चाहे वहॉ जा सकती है और जरूरतमन्दों की सहायता करने के लिये जो रूप चाहे वह रूप ले सकती है। कभी वह बुढ़िया बन जाती है तो कभी नौजवान स्त्री और कभी नौजवान लड़की।

जब जमीन सूखी होती है तो वह बादलों में खड़ी हो कर विलो की डंडी अपने जेड के लोटे के पानी में डुबोती है और धरती पर छिड़क देती है तो उससे बारिश हो जाती है।

जहॉ कहीं भी दर्द और दुख होता है वहॉ कुआन यिन मौजूद रहती है। गरीब अमीर सभी उसकी पूजा करते हैं और वह उन सब के घरों में मिलती है जो उसको याद करते हैं।

[105] Jade Emperor – the Emperor of Sky

[106] She was given the title of Dragon Girl.

15 चॉग कू लाओ का इम्तिहान[107]

चॉग कू लाओ[108] एक बड़ा अक्लमन्द बूढ़ा था। उसका दिमाग बहुत तेज़ सोचता था। उसके तीन बेटे थे पर वे तीनों बहुत ही बेवकूफ और आलसी थे।

उसके दो बड़े बेटों की शादी हो चुकी थी और उनकी पत्नियॉ भी इत्तफाक से उतनी ही बेवकूफ थीं जितने बेवकूफ उसके बेटे थे।

उसको मालूम था कि उसके बेटे अपनी बेवकूफी की वजह से अपनी देखभाल तो कर नहीं सकते थे तो फिर वे घर की देखभाल कैसे करेंगे यही सोच सोच कर वह बहुत चिन्तित रहता था कि उसके मरने के बाद उन सबका क्या होगा।

यह सब सोच कर उसने तय किया कि अपने तीसरे कम अक्लमन्द बेटे के लिये वह एक बहुत अक्लमन्द बहू देख कर लायेगा।

उसने ऐसी अक्लमन्द लड़की की बहुत तलाश की पर उसके लिये उसको कोई ऐसी ठीक सी लड़की ही नहीं मिल पा रही थी।

अपने परिवार की भलाई के लिये फिर उसने एक तरकीब सोची और उसके अनुसार उसने पहले अपनी दोनों बड़ी बहुओं का

[107] Chang Ku Lao's Test – a legend from China, Asia.
[108] Chang Ku Lao – name of the father of three sons

इम्तिहान लेने का फैसला किया। उसने सोचा कि शायद इस तरह से वह उनमें अक्लमन्दी की कोई चिनगारी ढूँढ लेगा।

सो गर्मी के मौसम की एक सुबह को उसने अपनी दोनों बहुओं को बुलाया और उनसे कहा — "काफी दिन हो गये है तुम लोगों को अपने माता पिता के घर गये हुए। और मैं समझता हूँ कि तुम लोगों को उनकी याद भी आ रही होगी। है न?"

दोनों लड़कियों ने अपना सिर हॉ में हिलाया और उस बूढ़े ने अपनी बात जारी रखी — "तो तुम लोग जल्दी से अपना अपना सामान तैयार कर लो और अपने माता पिता के घर चली जाओ। पर जब मैं तुमको वापस आने के लिये कहूँ तुम लोग तभी चली आना।"

"जी पिता जी।"

वह फिर बोला — "बड़ी बहू, तुम तीन पॉच दिन रह सकती हो और छोटी बहू तुम सात आठ दिन रह सकती हो।" यह सुन कर दोनों लड़कियॉ इतनी खुश हुईं कि उन्होंने बिना सोचे समझे कि उनके ससुर ने उनसे क्या कहा था हॉ में बहुत ज़ोर से अपना सिर हिलाया और कमरे में से बाहर जाने लगीं।

जैसे ही वह कमरे से जाने लगीं तो चॉग कू लाओ ने उनसे एक बात और कही — "मैं चाहता हूँ कि तुम लोग जब वापस आओ तो मेरे लिये कोई भेंट जरूर ले कर आना। तुममें से एक मेरे लिये

कागज में लिपटी आग ले कर आना और दूसरी मेरे लिये बिना टॉगों का मुर्गा।"

अब तक तो वे दोनों लड़कियॉ जाने के लिये इतनी ज़्यादा उतावली हो गयी थीं कि वे अपने ससुर की कही भेंटों पर भी राजी हो गयीं। हालॉकि उन्होंने उनके बारे में यह विचार भी नहीं किया कि वे भेंटें क्या हैं और वे उन्हें कैसे ले कर आयेंगीं।

केवल जब वे लड़कियॉ गॉव के बाहर सड़क पर एक दूसरे को बाई बाई कर के जा रही थीं तब उन्होंने एक दूसरे से पूछा कि वे किस बात पर अपने ससुर से हॉ कर के आयी हैं।

बड़ी बहू बोली — "मैं अपने मायके से तीन पॉच दिन में कागज में लिपटी आग साथ ले कर वापस लौटने के लिये कही गयी हूॅ। पर मुझे तो यह बिल्कुल भी पता नहीं कि इस बात का क्या मतलब है।"

छोटी बहू बोली — "मेरा भी यही हाल है। मुझे भी नहीं पता कि ससुर जी मुझसे क्या चाहते हैं। और अगर मैं ठीक समय पर ठीक भेंट के साथ वापस न आयी तो वह समझेंगे कि मैं बेवकूफ हूॅ।"

सो वे दोनों लड़कियॉ वहीं बैठ गयीं और अपनी अपनी गुत्थियॉ सुलझाने लगीं और तब तक उन गुत्थियों को सुलझाने की कोशिश करती रहीं जब तक कि उनका सिर दर्द नहीं करने लगा और फिर भी उनको उनका जवाब नहीं मिला।

यह सब देख कर छोटी बहू तो रोने लगी और थोड़ी देर बाद बड़ी बहू भी अपने ऑसू नहीं रोक सकी।

दोनों बैठी वहॉ रो रहीं थीं कि वहॉ से एक सूअर मारने वाला कसाई और उसकी बेटी फुंग कू[109] गुजरे। उन दोनों को उन भोली भाली लड़कियों को रोते देख कर उन पर दया आ गयी तो फुंग कू उनके पास गयी।

उसने उनसे पूछा — "क्या बात है, तुम लोग क्यों रो रही हो क्या तुम लोगों को किसी ने कुछ कहा है?"

बड़ी बहू बोली — "नहीं ऐसा तो नहीं है पर बात इससे भी कुछ ज़्यादा ही बुरी है। और सबसे बुरी बात तो यह है कि हम जब तक अपनी गुत्थी का हल न पा लें तब तक हम घर भी नहीं जा सकते।"

और उसके बाद उन दोनों लड़कियों ने अपनी अपनी कहानी उस लड़की को सुना दी।

फुंग कू ने उनको तसल्ली देते हुए कहा — "तुम लोग चुप हो जाओ। रोने से गुत्थी का हल नहीं निकलेगा इसलिये रोओ नहीं। तुम्हारी गुत्थियों का हल बहुत आसान है। अगर हम तीन और पॉच को गुणा करें तो जवाब आता है पन्द्रह, सो तुम अपने मायके में पन्द्रह दिन के लिये रह सकती हो।

[109] Fung Ku – name of the butcher's daughter

और अगर हम सात और आठ को जोड़ें तो भी जवाब आता है पन्द्रह। सो तुम भी पन्द्रह दिन के लिये अपने मायके में रह सकती हो। इसका मतलब यह है कि तुम दोनों पन्द्रह पन्द्रह दिन अपने अपने मायके में रह सकती हो।

और भेंटों की भी तुम चिन्ता न करो। कागज में लिपटी आग लालटेन को कहते हैं और बिना टॉग का मुर्गा एक ऐसा खाना है जो बीन के दही से बनता है। तुम समझ गयीं न?"

दोनों लड़कियॉ फुंग कू की बात सुन कर बहुत ही खुश हो गयीं और उसको बहुत बहुत धन्यवाद दे कर वे अपने अपने रास्ते चली गयीं।

पन्द्रह दिन बाद जैसा कि चॉग कू लाओ ने कहा था उसके कहे अनुसार उसकी भेंटों के साथ वे लड़कियॉ घर लौटीं। चॉग कू लाओ उनकी तुरत बुद्धि से बड़ा खुश हुआ। उसको लगा कि उसने अपनी बहुओं को बेवकूफ समझ कर गलती की थी।

पर उन दोनों लड़कियों से सच छिपाया नहीं गया, बेवकूफ थीं न वे? और उन्होंने रास्ते में एक कसाई और उसकी लड़की के मिलने की बात अपने ससुर को बता दी। और यह भी बता दिया कि यह सब उसी लड़की ने उनको बताया था।

चॉग कू लाओ बोला — "अगर तुम लोग सच बोल रही हो तो इसका मतलब यह है कि वह लड़की बहुत अक्लमन्द लड़की होगी।

और इसका मतलब यह भी है कि वह लड़की मेरे तीसरे बेटे की बहू बनने के लायक है।"

बस अगले दिन सुबह को चॉग कू लाओ उस कसाई से मिलने चल दिया पर जब तक वह उसकी दूकान पर पहुँचा तब तक वह कसाई तो बाजार जा चुका था सो उसकी बेटी फुंग कू दूकान पर अकेली ही थी।

जब उस कसाई की बेटी ने चॉग कू लाओ को दूकान पर देखा तो उसने उससे बड़ी इज़्ज़त से पूछा — "नमस्ते सर, मैं आपके लिये क्या कर सकती हूँ?"

चॉग कू लाओ बोला — "मुझे एक पौंड एक ऐसी खाल चाहिये जो दूसरी खाल के सहारे से लगी हो और एक पौंड खाल ऐसी चाहिये जो दूसरी खाल को मार रही हो।"

यह सुनते ही फुंग कू तुरन्त ही वहॉ से दूकान के पीछे अँधेरे में गायब हो गयी। पर तुरन्त ही वह वापस भी आ गयी और उसने कमल के पत्तों में लिपटे दो पैकेट उसको ला कर दे दिये।

चॉग कू लाओ ने एक पैकेट खोला तो उनमें से एक पैकेट में सूअर के कान थे और दूसरा पैकेट खोला तो उसमें सूअर की पूँछ थी।

एक बार फिर से उस लड़की ने अपनी अक्लमन्दी से चॉग कू लाओ की पहेली सुलझा दी थी। उसने तुरन्त ही अपना इरादा बना

लिया था कि यही वह लड़की थी जिससे वह अपने तीसरे बेटे की शादी करेगा।

चॉग कू लाओ वह दोनों पैकेट ले कर घर चला गया और घर जा कर उसने देवताओं का पूजन किया। फिर उसने शादी करवाने वाले को बुलाया। उससे इस शादी की इजाज़त लेने के बाद गॉव के सरदार से शादी की शर्तें लिखवायी गयीं और उसने उस लड़की की शादी अपने तीसरे बेटे से कर दी।

शादी की बहुत बढ़िया दावत दी गयी। शादी के बाद फुंग कू एक बहुत ही अच्छी पत्नी साबित हुई। उसकी अक्लमन्दी से घर में सब लोग मेल से रहे।

16 बादशाह के हुक्म[110]

चू यूआन चॉग[111] बेचारा अपने जन्म के बाद से ही लावारिस हो गया था इसलिये उसके एक दूर के चाचा को उसको अपने पास रखना पड़ा।

अब हुआ यह कि जब वह दो साल का हुआ तो उसको सिर में खाल की बीमारी[112] लग गयी। उसको कई डाक्टरों को दिखाया गया पर कोई भी उसकी उस बीमारी को ठीक नहीं कर सका।

इसलिये सब लोग उसको, यहॉ तक कि उसका अपना चाचा भी, फूले सिर वाला चॉग कह कर बुलाते थे। लोगों में वह बहुत खाने वाला और आलसी के नाम से मशहूर था।

एक दोपहर को जब उसका चाचा मक्का बोने के लिये अपना खेत जोत रहा था तो चू यूआन चॉग को पास के मूँगफली के खेत में खेलने का मौका मिल गया।

उन दिनों मूँगफलियॉ जमीन के नीचे नहीं बल्कि ऊपर उगा करती थीं। सो जब भी चू यूआन चॉग को भूख लगती उसको बस ज़रा सा नीचे झुकना होता था और फिर वह जितनी चाहे उतनी मूँगफलियॉ खा सकता था।

---

[110] Emperor's Commands – a myth from China, Asia.

[111] Chu Yuan Chang – name of the orphan boy

[112] Translated for the word "Mangy"

इस तरह से वह बिना किसी चिन्ता के आराम से उस खेत में खेलता रहता, मूँगफलियाँ खाता रहता, पेड़ों पर चढ़ता रहता और जो खरगोश उस मूँगफली के खेत में उन्हें खाने आते उनको भगाता रहता।

एक दिन बहुत सारी मूँगफली खा कर और बहुत सारी भाग दौड़ कर के उसको कुछ आलस आ गया तो वह वहीं मूँगफली के खेत के बीच में ही मूँगफली की चुभने वाली डंडियों पर ही सो गया।

वह एक घंटे तक तो बहुत ज़ोर से सोता रहा पर फिर मूँगफली की वे नुकीली डंडियाँ उसके सिर में इतने ज़ोर से चुभीं कि फिर वहाँ उससे सोया नहीं गया।

वह खड़ा हो गया और उसने मूँगफली की डालियों पर पैर रख कर उनको जमीन पर से हटाया और बोला — "अरी ओ बेवकूफ मूँगफलियों, मुझे तुमसे नफरत है। तुम मुझे सोने भी नहीं देतीं। तुम बजाय जमीन के ऊपर उगने के जमीन के नीचे क्यों नहीं उगती हो?"

उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उसके यह कहते ही वे मूँगफलियाँ जमीन के इधर उधर जाने लगीं। पहले तो वे एक दूसरे के ऊपर चढ़ कर और अपनी डंडियों को एक दूसरे में उलझा कर धीरे धीरे जा रही थीं।

पर फिर उनमें ताकत आ गयी और वे सामने से गायब हो कर बहुत तेज़ी से जमीन के नीचे जाने लगीं। इससे वह खेत ऐसा लगने लगा जैसे उसे अभी अभी जोता गया हो।

हालॉकि फूले हुए सिर वाले चॉग को पहले तो यह पता नहीं चला कि मूँगफली आगे से भी जमीन के नीचे ही उगेगी पर बाद में उसको लगा कि उस दिन के बाद से तो हर मूँगफली जमीन के नीचे ही उगने लगी।

पहले तो सारे किसान भी यह देख कर आश्चर्य में पड़ गये कि उनकी मूँगफली तो जमीन के ऊपर थीं कहॉ गयीं। फिर उनको पता चला कि वे तो सब जमीन के नीचे पहुँच गयीं।

और और बाद में तो यह भी पता चला कि अब तो वे जमीन के ऊपर उग ही नहीं रही थीं वे तो जमीन के नीचे ही उग रही थीं। उनकी समझ में तो नहीं आया कि ऐसा कैसे हुआ पर वे क्या करते। उन्होंने इस बदलाव को भगवान की इच्छा समझ कर स्वीकार कर लिया।

किसी को यह पता नहीं था कि यह सब चू यूआन चॉग के कहने से हुआ था। इसलिये किसी ने भी उसके शब्दों की ताकत को नहीं जाना, यहॉ तक कि उस लड़के ने खुद भी नहीं।

मूँगफली के खेत में हुई इस आश्चर्यजनक घटना के कई महीने बाद की बात है कि चू यूआन चॉग को उसके चाचा ने उसको अपनी मुर्गियों की देखभाल के लिये रख दिया।

सो वह उन मुर्गियों को नदी पर ले जाता। वहॉ वह सारा दिन नदी के किनारे लेटा रहता और शाम को उनको घर वापस ले आता।

एक दिन जब वह रोज की तरह उनको नदी के किनारे ले कर गया तो उस दिन दोपहर को बहुत गर्म था। चू यूआन चॉग ने अपने कपड़े निकाल दिये और नदी के ठंडे पानी में तैरने के लिये कूद पड़ा।

अपने नीचे उसने जामुनी रंग की एक मछली देखी जो बहुत धीरे धीरे नदी की तली के साथ साथ तैर रही थी। बिजली की सी तेजी से चू यूआन चॉग ने नीचे की तरफ एक डुबकी लगायी और अपने नंगे हाथों से ही उस मछली को पकड़ लिया।

मछली उस जवान लड़के की मजबूत मुट्ठी की पकड़ से छूटने की कोशिश में पानी से बाहर आते ही मर गयी।

उस लड़के ने पेड़ की कुछ डंडियॉ तोड़ीं, उनसे एक छोटी सी आग जलायी और उस पर उस मछली को भूना। जब वह भुन गयी तो वह एक मोटे से पेड़ के तने के सहारे बैठ गया और उसे अपने नंगे हाथों से ही खाने लगा। वह उसको स्वाद ले ले कर बहुत धीरे धीरे खा रहा था।

अभी उसने आधी ही मछली खायी थी कि उसने अपने चाचा के आने की आवाज सुनी तो उसने बड़े दुख के साथ उस मछली को वापस पानी में यह कहते हुए फेंक दिया — "ओ मेरी स्वाददार

मछली, तू फिर से ज़िन्दा हो जा ताकि एक दिन मैं तुझे फिर से खा सकूँ।"

वह आधी खायी हुई मछली उसका हुक्म मान कर फिर से ज़िन्दा हो गयी। उसका आधा बिना खाया हुआ शरीर तो जामुनी रंग का था और दूसरा आधा शरीर जो खा लिया गया था वह सफेद रंग का था।

चॉग ने उस मछली की एक ऑख उसके सिर के दूसरी तरफ फेंक दी थी सो जब वह मछली ज़िन्दा हुई तो उसकी दोनों ऑखें उसके जामुनी रंग के शरीर की तरफ आ गयी थीं।

इस तरह वह मछली ज़िन्दा रही और अंडे भी देती रही। जिन लोगों ने उस मछली को पकड़ा वे उसको सोल नाम से पुकारते रहे।

कई हफ्ते बाद एक दिन जब चॉग अपने चाचा की मुर्गियों की देखभाल कर रहा था तो कुछ दोस्त लोग वहॉ पतझड़ के चॉद[113] का त्यौहार मनाने आये।

उनके पास खाने के लिये चावल तो था पर मॉस नहीं था सो उन्होंने चॉग से कहा कि वह उनके लिये एक मुर्गा मार दे और उसको खुली आग पर पका दे।

चॉग ने बड़े उत्साह से कहा कि हॉ हॉ वह मार देगा इसमें उसे कोई परेशानी नहीं होगी बल्कि वह तो उनके लिये सारी मुर्गियॉ भी

[113] Festival of the Moon of Autumn

मार देगा और वे उनको तब तक खा सकते हैं जब तक वे वहॉ से हिल भी न सकें।

चॉग ने सारी मुर्गियों की गर्दनें तोड़ीं और उन दोस्तों ने उनके हड्डी के ढॉचे निकाले। जबकि चॉग ने आग जलायी और उनको उसमें भूनने के लिये तैयार किया।

सब लड़के सारी दोपहार खाते रहे, गाते रहे, नाचते रहे। शाम को वे सब लोग चॉग को वहीं पहाड़ी के पास अकेला छोड़ कर अपने अपने घर चले गये।

उनके जाने के बाद चॉग को लगा कि यह उसने क्या कर दिया। तब उसने भगवान की कसम खायी कि वह तब तक घर नहीं लौटेगा जब तक जितनी मुर्गियॉ उसने मारी हैं वे सब वह इकट्ठी नहीं कर लेगा। इस काम को करने में चाहे उसको कितनी भी देर क्यों न लग जाये।

एक बार फिर भगवान ने उसके ऊपर मेहरबानी की और एक सफेद हंसों का झुंड उसके सिर पर उड़ता हुआ आ गया। चॉग ने उनको बुला लिया — "हंसों हंसों, तुम लोग मेरे पास नीचे आ जाओ। मैं तुम्हारे सरदार को हंसों का राजा बना दूॅगा।"

आश्चर्य, सब हंसों ने अपनी अपनी गर्दनें नीची कीं और धीरे धीरे नीचे उतर कर चॉग के पैरों के पास आ कर बैठ गये। चॉग खुशी खुशी उन सबको अपने घर ले गया और रात भर के लिये उनको मुर्गियों के लकड़ी के बाड़े में बन्द कर दिया।

रोज की तरह चॉग ने अपना रात का खाना खाया और लकड़ी के लट्ठों की आग के सामने आराम से सो गया। उसका चाचा अपने खेत में यह देखने के लिये कि वहॉ सब कुछ ठीक है खेत पर चला गया।

खेत पर पहुँच कर उसने चॉग को खेत पर आने के लिये उठाया और बोला — "यह सब तुम क्या बेवकूफी का खेल खेल रहे हो? ये मेरी सारी मुर्गियॉ सफेद क्यों हैं? और ज़रा इनकी गर्दन तो देखो ये पहले के मुकाबले में दोगुनी लम्बी कैसे हो गयीं?"

चॉग ने भोलेपन से अपने चाचा की तरफ देखा और बोला — "इस सुबह जब मैं मुर्गियों को पहाड़ी के पास ले गया था तो घाटी में और पहाड़ी के ऊपर बहुत ज़ोर की दक्षिणी हवा चली और ओले पड़ने लगे। उस हवा ने उन मुर्गियों की गर्दनें लम्बी कर दीं और उन ओलों ने उनके पंख सफेद कर दिये।"

उसके चाचा ने उसकी इस सफाई के ऊपर कुछ देर विचार किया पर उसको भी इस बदलाव की इससे ज़्यादा अच्छी और कोई वजह नजर नहीं आयी इसलिये उसने चॉग को फिर से सोने के लिये भेज दिया।

अगले दिन चॉग के चाचा ने उसको सुबह सुबह बुलाया पर चॉग एक दो बार करवट बदल कर फिर सो गया। उसके चाचा ने उसको उस सुबह दो बार बुलाया लेकिन दोनों बार चॉग उसके सामने जाने के लिये टाल गया।

दोपहर को चॉग का चाचा उसके सोने वाले कमरे में गया और उसकी कमीज खींच कर उसको उठाया। उसके बिस्तर से उसने उसे बाहर खींच लिया और उसके सूजे हुए सिर पर ज़ोर से एक चॉटा मारा।

चॉग चिल्लाया — "छोड़िये न मुझे। आज मुर्गियों की उड़ान का दिन है और अगर आपने दरवाजा बन्द कर के नहीं रखा तो वे सब उड़ जायेंगी। मैं अपना गर्म बिस्तर छोड़ कर वहॉ सारा दिन यह देखने के लिये उनके दरवाजे के सामने खड़ा नहीं रह सकता कि वे कहीं उड़ न जायें।"

उसका चाचा भी चिल्लाया — "क्या तू मुझे बिल्कुल ही बेवकूफ समझता है। मैं सारी ज़िन्दगी अपनी इन मुर्गियों की हिफाजत करता रहा हूँ और मैंने कभी ऐसा बेकार का बहाना नहीं सुना जैसा कि तू मुझे बता रहा है।

चल उठ, इससे पहले कि मैं तुझे पैर मार कर उठाऊँ तू अभी अभी बिस्तर से बाहर निकल और इन मुर्गियों को पहाड़ के पास ले कर जा।"

चॉग कुछ भुनभुनाता हुआ उठा, कपड़े पहने, खेत में गया और मुर्गियों के बाड़े का दरवाजा खोला। वहॉ तो दरवाजा खोलते ही सारे हंसों में वहॉ से बच कर भाग निकलने की होड़ लग गयी।

जैसे ही वे सारे हंस दरवाजे से बाहर निकले वे एक अजीब से ढंग से जमीन पर बिखर गये। वे डरते हुए हवा में उड़े और फिर

हमेशा के लिये वहॉ से पहाड़ के ऊपर और मकान के पीछे उड़ कर गायब हो गये।

यह चॉग और उसके चाचा के बीच की आखिरी कड़ी थी। इसके बाद चाचा ने चॉग को घर से बाहर निकाल दिया और उससे कहा कि अब वह वहॉ कभी वापस न आये।

उस रात चॉग जंगल में एक फटा सूती कम्बल ओढ़ कर सूखी पत्तियों पर सोया। अब उसके पास बस वही एक कम्बल था और दूसरी कोई चीज़ नहीं थी।

महीनों तक चॉग देश में इधर उधर भटकता रहा। वह रास्ते में मिलने वाले दयावान किसानों और गॉव वालों से भीख मॉग मॉग कर खाता रहा। उसने इस दान पर रहना ही ठीक समझा। काम उसने तभी किया जब कि वह भूखा मर रहा होता था।

जबसे वह अपने चाचा के घर से निकाला गया था तबसे उसके शब्दों की ताकत चली गयी थी और हालॉकि वह काम करने के लिये बहुत सुस्त था पर उसको अपने दिल में पता था कि उसकी अच्छी किस्मत उसका इन्तजार कर रही थी। बस उसको उस समय का इन्तजार था।

चॉग को अक्सर ही अपनी यात्रा के बीच सरकार के सिपाही और डाकू लड़ते मिलते पर वह बजाय उनकी लड़ाई में पड़ने के कहीं अनाजघर में या जंगल में या गड्ढे में छिप जाता।

यूआन साम्राज्य[114] भी खत्म होने को आ रहा था और देश में बलवा मचने की उम्मीद बहुत ज़्यादा थी। अफवाह तो यहॉ तक थी कि नया बादशाह, आसमान का बेटा[115], तो पहले से ही पैदा हो चुका था और देश की बागडोर सॅभालने के लिये बस ठीक समय का इन्तजार कर रहा था।

उसी समय एक ज्योतिषी लियू पो वैन[116] ने यह जिम्मेदारी उठायी कि वह उस आसमान के बेटे को ढूॅढेगा। उसने जंगल के बहुत सारे ऐसे लोगों को लिया जो उस आसमान के बेटे को ढूॅढने और उसको नया बादशाह बनाने के लिये जरूरत पड़े तो मर मिटने के लिये भी तैयार थे।

एक दिन ये सब लोग एक लकड़ी के पुल पर आये और एक सूजे हुए सिर वाले नौजवान को एक नाव में पड़े सोते देखा। उसके सिर के ऊपर एक छतरी लगी हुई थी जो उसने उस समय बह रही तेज हवा से अपने सिर को हवा से बचाने के लिये लगा रखी थी।

जंगल के लोग तो उसको देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि जब वह लड़का लेटा हुआ था तो उसके लेटने के ढंग से उसकी शक्ल उस चीनी अक्षर से बहुत मिल रही थी जिसका मतलब होता है "बादशाह"।

---

[114] Yuan Empire – established by a Mongolian Kublai Khan in 1271 AD and lasted till 1368.

[115] The Son of the Heavens

[116] Liu Po Wen – name of the astrologer

वे लोग उस पुल पर से ही उस लड़के को जगाने के लिये चिल्लाये पर वह तो बस ऊँ ऑ कर के उन सबसे पीठ फेर कर अपनी छतरी को और नीची कर के लेट गया।

पर अब वह कुछ इस तरह लेटा हुआ था कि इससे वह एक ऐसा चीनी अक्षर दिखायी दे रहा था जिसका मतलब होता है "बेटा"।

वे जंगली लोग तो अपनी खुशकिस्मती पर विश्वास ही नहीं कर पाये और तुरन्त ही पुल से नीचे उस लड़के के पास दौड़े गये ताकि वह कहीं भाग न जाये।

लियू पो वैन ने कहा कि यह चॉग ही आसमान का बेटा है सो वे जंगली लोग उस सूजे हुए सिर वाले लड़के को नये साम्राज्य के पहले बादशाह की हैसियत से गॉवों और शहरों में से घुमाते हुए ले चले।

हर एक ने, जिसने भी ज्योतिषी की भविष्यवाणी सुनी, उसी ने उस लड़के की अक्लमन्दी को माना और उसको होने वाला बादशाह समझ कर उसके सामने सिर झुकाया।

इस तरह लियू पो वैन की भविष्यवाणी सही निकली। वह सूजे हुए सिर वाला लड़का चू यूआन चॉग मिंग साम्राज्य[117] का पहला बादशाह बना।

[117] Chu Yuan Chang was the first Emperor of the Ming Dynasty in 1368 AD

17 गधे की ताकतें[118]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार चीन में एक सिल्क का सौदागर अपने गधे को चीन चू शहर[119] ले कर गया। यह चीन चू शहर एक घाटी की बड़ी नीची ढलान पर एक अकेली जगह पर बसा हुआ था।

जब वह वहॉ पहुँचा तो शाम हो गयी थी। शाम को वहॉ के कुछ लोग शाम की सैर करने के लिये निकले हुए थे और कुछ लोग छोटे छोटे होटलों में खाना खा रहे थे।

वह सौदागर शहर की मुख्य सड़क से हो कर जा रहा था कि वह यह देख कर आश्चर्यचकित हो गया कि काफी लोग उसको देख कर अपनी अपनी मेजों से उठ कर खड़े हो गये। ऐसा असल में इसलिये भी हुआ क्योंकि उन्होंने आज से पहले कभी गधा नहीं देखा था।

कुछ बच्चे तो उस अजीब जानवर को देख कर बहुत ही खुश थे और कुछ उसके खुरदरे भूरे बालों को देख कर और उसके रेंकने की तेज़ आवाज को सुन कर ही डर गये थे।

[118] Donkey's Powers – a folktale from China, Asia.
[119] Chien Chou town – a town in China

शहर के लोग उसको देख कर जितने ज़्यादा उत्सुक थे वह गधा उतनी ही ज़्यादा ज़ोर से रेंक रहा था और अपने दॉत दिखा रहा था।

यह देख कर कि लोग उसको इतनी ज़्यादा उत्सुकता से देख रहे थे वह गधा भी एक नये विश्वास के साथ सड़क पर चला जा रहा था और उसका मालिक सौदागर भी बहुत खुश खुश उसके पीछे पीछे चल रहा था।

उस रात गधा रात भर इधर उधर करवटें बदलता रहा पर वह रात भर सो नहीं सका। सो उसने यह तय किया कि वह रात को इधर उधर घूमेगा। बस वह वहॉ से उठा और भाग लिया। वह भागता रहा भागता रहा पर वह यह नहीं देख पाया कि वह कहॉ जा रहा था।

जब वह थक कर रुका तो उसने देखा कि वह तो एक जंगल में आ गया था। यह देख कर उसने जब तक सुबह होती है वहीं आराम करने का निश्चय किया। सुबह को जब उसकी नाक और कान पर ठंडी ओस की बूॅद पड़ी तब कहीं जा कर उसकी ऑख खुली।

जब उसने देखा कि उसके सब बाल ओस की बूॅदों से नम हो गये हैं तो उसकी सारी पीठ में ठंड की एक लहर सी दौड़ गयी और वह कॉप गया। हिम्मत कर के वह उठा, उसने अपने शरीर को हिला कर झटका दे कर उन ओस की बूॅदों को झटक दिया।

उसने सोचा कि जाने से पहले वह थोड़ी सी घास खा ले सो वह अपना सिर नीचा कर के घास खाने लगा। जब वह घास खा रहा था तो उसने अपने पीछे कुछ फुसफुसाहट सुनी।

लेकिन जल्दी ही वह फुसफुसाहट ज़ोर की आवाज में बदल गयी। यह आवाज इतने ज़ोर की थी कि वह गधा अपने नाश्ते पर ध्यान ही नहीं दे सका।

जब उसने इधर उधर देखा तो उसने देखा कि कई देखने वाले उसके अजीब और बड़े साइज़ को देख रहे हैं। उसने सोचा कि अगर लोग मुझे इतने आश्चर्य से देख रहे हैं तो मुझे लगता है कि इन जानवरों को अपनी ऑखों पर विश्वास नहीं हैं।

फिर उसने अपने मन में सोचा कि मैं उनको कुछ ऐसी चीज़ दिखाऊॅ जिससे कि वे कुछ सोच सकें।

गधे ने अपना सिर उठाया, बहुत ज़ोर से ढेंचू ढेंचू किया और अपने पिछले पैर हवा में उछाले। यह देख कर चिड़ियों और जानवरों ने बहुत ज़ोर से चीख मारी और अपने अपने घोंसलों और घरों में घुस गये।

केवल एक तोता ही ऐसा था जो नहीं डरा। उसने खुशी से अपने पंख फड़फड़ाये और जो कुछ उसने देखा था वह बताने के लिये चीते की तरफ उड़ गया। इस बीच गधा अपनी ताकत दिखाने के इस शो पर बहुत खुश था। वह फिर अपनी घास खाने लगा।

तोते से इस अजीब जानवर की कहानी सुनकर चीता अपने इस ताकतवर दुश्मन जानवर को देखने के लिये बहुत उत्सुक हुआ और वह झाड़ियों में से होता हुआ इस जानवर को देखने के लिये तुरन्त ही दौड़ पड़ा।

जब साफ मैदान आया तो वह वहीं रुक गया और फिर कुछ सोच विचार कर आगे बढ़ा जहॉ वह गधा अभी भी घास खा रहा था।

जब चीते ने गधे का साइज़ देखा तो वह बड़ा नाउम्मीद हुआ पर फिर भी उसने यह निश्चय किया कि वह उसकी ताकत का यह तमाशा देखने के लिये उसका इम्तिहान जरूर लेगा कि उसको इस जानवर की ताकत से कहीं कोई खतरा तो नहीं है।

गधे ने भी तिरछी निगाह से चीते को देख लिया। हालॉकि उसने भी चीते को पहले कभी नहीं देखा था पर फिर भी उसको ऐसा कुछ नहीं लगा कि उसे चीते से डरना चाहिये।

इसलिये उसने उसको भी अपनी ताकत का एक नमूना दिखाने का फैसला कर लिया सो वह जितनी ज़ोर से अपने दॉत पीस सकता था उतनी ज़ोर से उसने अपने दॉत पीसे। इससे बहुत ज़ोर की आवाज हुई।

चीता उसके दॉत पीसने की आवाज सुन कर डर गया और पास की झाड़ियों में सिकुड़ कर दुबक गया। उसको लगा कि अगर गधे

के दॉतों की आवाज ही इतनी तेज़ है तो वह तो उसको खा भी सकता है।

गधा अपने नये दुश्मन जानवर के साथ इतना अधिक आनन्द महसूस कर रहा था कि उसने फिर एक बार अपने दॉतों के बीच में से बहुत ज़ोर की हिस की आवाज निकाली।

पर इत्तफाक से चीता उसी समय एक कीचड़ वाले गड्ढे में फिसल गया और वह उसकी हिस की आवाज नहीं सुन सका।

बदकिस्मती से जंगल के दूसरे जानवरों ने चीते का वह गिरना देख लिया। धीरे धीरे वह जंगल का राजा किसी तरह से उस गड्ढे में गीला और कीचड़ में सना हुआ निकला।

गधे ने चीते को अपनी ओर आते हुए और फिर अपने से कुछ दूर ही सिकुड़ कर बैठते हुए देख लिया था। अब तक गधे को लग रहा था कि वह चीते से भी लड़ सकता है, जंगल के सारे जानवरों से भी अकेला ही निपट सकता है और उनको हरा सकता है।

वह बिना कुछ सोचे समझे बदकिस्मत चीते की तरफ बढ़ा, अपने पीछे वाले पैर उठाये और उसके कन्धे पर मारे। उसके पैरों की मार से चीता एक कॉटों वाली झाड़ी में जा गिरा।

वह उस झाड़ी में से अपने घावों को चाटता हुआ अपनी बॉयी टॉग से लॅगड़ाता हुआ बाहर निकला और उसको लगा कि अब वह अपनी पुरानी ताकत फिर कभी वापस नहीं पा सकता।

चीता इन सब हालात पर विचार करते हुए धीरे धीरे गधे से दूर उस मैदान के किनारे की तरफ चल दिया।

पर फिर उसको ध्यान आया कि गधे के खुर के नाखून बहुत तेज़ नहीं हैं और उसके दुश्मन ने केवल अपनी रक्षा के हथियार ही उसको दिखाये हैं – अपने खुर और दॉत, या न कि हमला करने वाले हथियार।

यह सोच कर वह फिर से गधे के पास गया और खेल खेल में उसने उसकी पूँछ और पिछली टॉगें अपने पंजों से पकड़ लीं। यह देख कर गधे ने बहुत ज़ोर से ढेंचू ढेंचू किया और अपनी टॉगों से चीते को एक बार फिर मारा।

चीते ने सोचा – "इसका मतलब मैं ठीक था। यह बस अपनी टॉगें ही हवा में फेंक सकता है या फिर ज़ोर की आवाज ही निकाल सकता है और कुछ नहीं कर सकता।"

यह सोच कर चीता गधे पर कूदा और उसने अपने दॉत गधे की गर्दन में घुसा दिये। गधे को न तो बचने का ही मौका मिला और न ही उसके पास अपनी सुरक्षा का कोई तरीका था। वह बेचारा बेमौत मारा गया।

जंगल के सारे जानवर चीते की तरफ तारीफ की नजर से देख रहे थे और चीता अपना स्वादिष्ट खाना खा रहा था। गधे के मरने की खबर चारों तरफ बहुत जल्दी ही फैल गयी।

तब से गधे खुले मैदानों में और पहाड़ियों के आस पास ही रहते हैं और घने जंगलों में नहीं जाते।

18 सूरज और चॉद झील[120]

बहुत साल पहले साओ जाति[121] के तीस परिवार बड़ी शान्ति से और खुशहाली में रहते थे। वे मछली पकड़ते, शिकार करते और तैवान[122] की जमीन पर खेती करते।

पतझड़ की एक सुबह जब वे अपनी खेती काट रहे थे तो सूरज काले बादलों में छिप गया और बिजली की कड़क की तेज़ आवाज आसमान में इधर उधर दौड़ने लगी। वह आवाज इतनी तेज़ थी कि आदमियों के चिल्लाने की और कुत्तों के भौंकने की आवाज भी उसकी आवाज में डूब गयी।

बादल और काले हो गये, आसमान भी और काला हो गया और सूरज की रोशनी बिल्कुल छिप गयी। गॉव वाले एक जगह इकट्ठा हो गये और आसमान के साफ होने का इन्तजार करने लगे।

पर घंटों बीत गये और दिन रात की तरह ही काला रहा। वे सब अँधरे में ही पेड़ और चहारदीवारियॉ ढूँढते ढूँढते घर लौटने लगे।

जब चॉद निकल आया तब कहीं जा कर वे एक दूसरे का चेहरा देख पाये। पर जैसे ही चॉद निकला बिजली की कड़क फिर से आसमान में दौड़ने लगी।

---

[120] The Sun and Moon Lake – a myth from China, Asia.

[121] Tsao Clan

[122] Taiwan

अबकी बार वह पहले से भी ज़्यादा तेज़ थी और फिर चॉद भी छिप गया। अब साओ लोगों को सूरज और चॉद दोनों ही दिखायी नहीं दे रहे थे।

दिन और रात दोनों ही इतने ज़्यादा काले थे कि उनको अपनी ही शक्ल भी दिखायी नहीं दे रही थी। धूप न मिलने की वजह से लोगों के खेतों में खेती खराब हो रही थी। मछलियॉ बहुत गहरे पानी में चली गयी थीं और उन सबकी खाल पारदर्शी हो गयी थी।

बतखों और मुर्गियों को पता ही नहीं था कि वे कहॉ उड़ रही थीं। उन्होंने खाना खाना बन्द कर दिया था इसलिये उनका मॉस खत्म होता जा रहा था और बस उनके शरीर पर उनकी खाल और हड्डियॉ ही रह गयी थीं।

चिड़ियों ने गाना बन्द कर दिया, फूलों ने खिलना बन्द कर दिया, गॉव के हर आदमी की खाल भूरी पड़ गयी और बच्चों की हॅसी भी अब सुनने में नहीं आती थी। गॉव जो कभी खुशहाली में अपनी ज़िन्दगी में बिता रहा था दुख में डूब गया था।

इस परेशानी से छह महीने पहले ही ता चीन और शी चीन[123] की शादी हुई थी और उनकी शादी की मौज मस्ती दो दिन तक मनायी गयी थी।

बाजरा उगाने के लिये उनको जमीन का एक टुकड़ा दे दिया गया था ताकि वे उस जमीन के टुकड़े पर खेती

[123] Ta Chien and She Chien – names of a young couple

कर के अपनी ज़िन्दगी गुजर बसर कर सकें। इसलिये वे अपनी रोजी रोटी के लिये पूरी तरीके से धूप पर ही निर्भर करते थे।

पर अब क्योंकि न तो सूरज ही निकल रहा था और न ही चॉद तो उनको डर लगा कि वे भी और गॉव वालों की तरह से भूख से मर जायेंगे। इन हालात में उन्होंने दो थैले चावल के लिये और लालटेन की रोशनी में सूरज और चॉद को ढूँढने चल दिये।

जहॉ कहीं भी वे गये उनको सब जगह भूखे लोग आग के पास बैठे मिले। उन लोगों के पास बहुत थोड़ी सा ही खाने का सामान था। वे केवल उन दोनों को घूरते ही रहे क्योंकि भूख के मारे वे उन अजनबियों के हालचाल पूछना भी भूल गये थे।

यहॉ तक कि उनके जो कुत्ते उनकी चौकीदारी करते थे वे भी उन पर नहीं भौंके। बस अपनी सफेद खाली ऑखों से उनको देखते रहे।

वे दोनों पति पत्नी चलते रहे जब तक कि वे थक कर गिर नहीं पड़े। थकान की वजह से उन दोनों को नींद आ गयी। जब वे सो कर उठे तो वे फिर चल दिये और उन्होंने कई अनजाने पहाड़ और मैदान पार किये।

अक्सर ही उनको गिरे हुए पेड़ों की शाखों से ठोकर लग जाती। वे उन शाखों को जला लेते और फिर उनकी रोशनी को अपना रास्ता देखने के काम में लाते।

बहुत दिनों तक चलने के बाद वे शुई शी पहाड़[124] के ढलान पर आ पहुँचे। जैसे ही वे उस पहाड़ की चोटी पर पहुँचे उनकी लालटेन बुझ गयी।

वहाँ हवा बहुत तेज़ और ठंडी थी। वे दोनों एक दूसरे को गर्मी और तसल्ली देने के लिये एक दूसरे से चिपक कर खड़े हो गये।

तभी शी चीन ने उस पहाड़ के उस पार एक झील के ऊपर रोशनी का एक धुँधला सा टुकड़ा चमकता देखा तो वह खुशी से चिल्ला पड़ी — "देखो देखो उधर देखो।"

उसने अपने पति को वहीं छोड़ा और पहाड़ के नीचे की तरफ भाग ली। यह देख कर उसका पति भी उसके पीछे पीछे भाग लिया।

वहाँ बहुत सारे नुकीले पत्थर पड़े थे जिन पर दौड़ने से उसके पैर घायल हो गये। पर वे भागते जा रहे थे और फिसलते जा रहे थे, लुढ़कते जा रहे थे और ढलान पर गिरते जा रहे थे। पर कोई उनको झील तक पहुँचने से रोक नहीं सका।

जैसे ही वे दोनों पति पत्नी उस झील के पास आये तो वे तो खुशी से चिल्ला पड़े क्योंकि उस झील में तो सूरज और चाँद दोनों ही पड़े हुए थे।

जब वे उनको देख कर खुश हो रहे थे तभी उनको झील के पास की एक गुफा से आती एक गुर्राहट की आवाज सुनायी पड़ी।

---

[124] Shui She Mountain

उस आवाज को सुन कर वे तुरन्त ही वहॉ पड़े एक बहुत बड़े पत्थर के पीछे छिप गये।

दो आग उगलते हुए बहुत ही बड़े साइज़ के ड्रैगन उस गुफा में से निकले और झील की तरफ बढ़े। वे उस झील के बर्फीले पानी में कूद पड़े और सीधे सूरज और चॉद की तरफ चल दिये।

बजाय सूरज और चॉद को झील में से निकाल कर आसमान में फेंकने के उन ड्रैगनों ने सूरज और चॉद को अपने पंजों मे उठा लिया और उनसे झील के उस पार एक दूसरे को उछाल उछाल कर दे कर खेलने लगे।

वे दोनों पति पत्नी सूरज और चॉद की यह हालत देख कर बहुत दुखी हुए पर वे उन ताकतवर जानवरों के सामने कुछ भी नहीं कर सकते थे।

जबकि ता चीन और शी चीन उस बारे में अभी बात ही कर रहे थे कि इस हालत में उनको क्या करना चाहिये कि जिस पत्थर के सहारे वे खड़े हुए थे उस पत्थर के नीचे से उनको धुँआ निकलता दिखायी दिया।

उन्होंने उस पत्थर को सॅभाल कर धीरे से एक तरफ को खिसकाया तो वहॉ उनको एक सुरंग दिखायी दी जो उसी पास वाले पहाड़ तक जाती थी।

वे उस सुरंग में घुस गये। उस सुरंग की नम दीवारों के आखीर में आगे जा कर उनको एक छोटी सी आग जलती दिखायी दे रही थी तो उनको लगा कि जब वहॉ आग जल रही ही तो वहॉ कुछ लोग भी होंगे।

इस उम्मीद में कि वे सूरज और चॉद को उन लोगों से ले लेंगे वे बड़ी उत्सुकता से उस आग की तरफ बढ़े। वहॉ जा कर उन्होंने देखा तो उनको वह जगह सूखी और झाड़ी बुहारी साफ मिली।

उन्होंने देखा कि वहीं एक कोने में एक बुढ़िया एक अॅगीठी के पास बैठी उस अॅगीठी में पड़े लाल गर्म कोयलों को हवा दे कर जला रही थी।

हालॉकि ताई चीन और शी चीन दोनों दबे पॉव ही उस गुफा के तंग दरवाजे से घुसे थे पर फिर भी उस बुढ़िया ने उन दोनों के पैरों की आवाज सुन ली थी।

उसने हाथ में एक लोहे का एक गोला ले कर पीछे घूम कर देखा और उनसे पूछा — "तुम लोग यहॉ क्या कर रहे हो? एक कदम भी आगे मत बढ़ना जब तक तुम मुझे यह न बता दो कि तुमको मुझसे क्या चाहिये।"

शी चीन बोली — "मेहरबानी कर के हमारी सहायता कीजिये। हम आपको कोई नुकसान पहुॅचाने नहीं आये हैं। हमें बस आपकी सहायता की जरूरत है।"

उस बुढ़िया ने उनके फटे कपड़े, घायल पैर और खाली खाली चेहरे देखे। उसने बहुत सालों से दूसरे आदमी लोग नहीं देखे थे और इस समय भी उसको यह नहीं लग रहा था कि उसको उनको खाली हाथ वापस क्यों भेज देना चाहिये।

उसने उनको अँगीठी के पास बिठाया और बताया कि किस तरह उस झील की एक धारा में एक डिब्बा उबला हुआ तेल डालने की वजह से वे ड्रैगन उसको वहाँ उस गुफा में जबरदस्ती उठा कर ले आये थे।

उस उबले हुए तेल से उन ड्रैगनों की खाल जल गयी थी और उसकी सजा यह थी का वह ज़िन्दगी भर उनकी सेवा करे। अब तो उसको यह भी याद नहीं है कि उसको वहाँ आये हुए कितने साल हो गये हैं।

उसको तो बस अब इतना ही याद है कि जब वह यहाँ आयी थी तब वह जवान थी और अब उसकी खाल सिकुड़ गयी है और उसकी उँगलियाँ मुड़ गयीं हैं।

जब वह बुढ़िया उनसे बात कर रही थी तो वह उन दोनों को छू छू कर देखती जा रही थी कि वे दोनों सचमुच के आदमी हैं या नहीं क्योंकि उसको तो यही विश्वास नहीं था कि वह अपने मरने से पहले किसी आदमी को देख भी पायेगी या नहीं।

जब बुढ़िया ने अपनी बात खत्म कर ली तो ताई चीन और शी चीन ने उसके यहाँ बन्दी होने के समय में जो कुछ उन लोगों के

ऊपर बीत रही थी वह सब उसको बताया। उन्होंने उसको यह भी बताया कि वे इस समय सूरज और चॉद खोजने के लिये निकले हुए हैं।

बुढ़िया ने उनकी हिम्मत भरी कहानी सुनी पर जब उसने अपनी गुफा के बाहर की ज़िन्दगी के बारे में सुना तो उसका दिल भारी हो गया। तीनों चुपचाप बैठ गये। उनको नहीं पता था कि वे इस बारे में कहॉ जायें और क्या करें।

कुछ देर बाद आखिर वह बुढ़िया ही बोली — "मुझे मालूम है कि हमें क्या करना है। मुझे यह भी मालूम हे कि ये ड्रैगन किस तरह से मर सकते हैं।

मैंने एक सोने की कुल्हाड़ी और कैंची की कहानी सुनी है जो ली शान पहाड़[125] के नीचे गड़ी हुई हैं। वह पहाड़ यहॉ से कुछ ज़्यादा दूर नहीं है।

सारी दुनियॉ में वही दो चीज़ें हैं जिनसे उन ड्रैगनों को डर लगता है। अगर तुम वे कुल्हाड़ी और कैंची उस झील में डाल दोगे तो वह कुल्हाड़ी उन ड्रैगनों का सिर काट देगी और वह कैंची उनके छोटे छोटे टुकड़े कर देगी। तभी तुम लोग सूरज और चॉद को वापस पा सकोगे।

ता चीन और शी चीन इस काम से बिल्कुल भी नहीं डरे। उन्होंने बुढ़िया के साथ खाना खाया और अपने साथ दो लोहे के

[125] Li Shan Mountain

फावड़े लिये और ली शान पहाड़ की तरफ चल दिये। जैसा कि बुढ़िया ने उनको बताया था उनको पहाड़ तक पहुँचने में कोई मुश्किल नहीं हुई।

वहाँ पहुँच कर उन्होंने तुरन्त ही पहाड़ की खुदाई शुरू कर दी और वे दोनों वहाँ तब तक खोदते रहे जब तक उनके हाथों में छाले नहीं पड़ गये, उनकी कमर दर्द नहीं करने लगी और वे हिलने के लायक भी नहीं रहे। जब वे और खोदने लायक नहीं रहे तो वे सो गये।

जब वे उठे तो उनको बहुत भूख लगी थी पर फिर भी वे उस पहाड़ को खोदने में ही लगे रहे। खोदते खोदते उनके जोड़ जोड़ में दर्द हो रहा था और उनके हाथ सूज गये थे पर फिर भी वे उसको तब तक खोदते रहे जब तक वे दोबारा थक कर चूर नहीं हो गये। वे फिर सो गये और जब उठे तो फिर खोदने लगे।

कई दिनों की लगातार खुदाई के बाद उनके फावड़े किसी धातु की चीज़ से टकराये। ता चीन और शी चीन दोनों ने मिट्टी हटा कर नीचे से सोने की कुल्हाड़ी और कैंची निकाल ली और उनको ले कर वे ड्रैगन की झील की तरफ चले।

इस बार वे बहुत सावधानी से चल रहे थे ताकि वे रास्ते में पड़े पत्थरों पर ठोकर न खायें और अपने हाथ में पकड़ी कीमती चीजें जो वे पहाड़ के नीचे से खोद कर ला रहे थे खो न दें।

जब वे झील के पास से गुजरे तो शी चीन ने उस कुल्हाड़ी को उस झील में फेंक दिया जिस में वे दोनों ड्रैगन सूरज और चॉद को उछाल उछाल कर खेल रहे थे।

पर यह क्या, वह कुल्हाड़ी तो नीचे जाने की बजाय ऊपर की तरफ उड़ चली और हवा में कई पलों तक लटकी रही। पर फिर उसके बाद वह एक बिजली की धारी के साथ ड्रैगन के सिरों पर गिर पड़ी।

इससे पहले कि वे ड्रैगन कुछ जान पाते कि क्या हो रहा है उस कुल्हाड़ी ने एक ही वार में उन दोनों ड्रैगनों के सिर तोड़ दिये। उनके सिरों से खून का एक फव्वारा निकल कर हवा में उड़ गया और फिर झील में जा गिरा। और उनके सिर पहाड़ पर गिर गये।

इसके बाद ता चीन ने कैंची उठायी और घुमा कर उसको झील के खून से रंगे लाल पानी में फेंक दिया। उस कैंची ने उन ड्रैगनों के सिर आदि शरीर के सब हिस्सों को काट दिया। उनके शरीर के कुछ हिस्से तो पहाड़ पर गिर पड़े और कुछ झील में नीचे डूब गये।

अचानक सब शान्त हो गया था। सूरज और चॉद के अलावा और कुछ भी उस झील में हिल डुल नहीं रहा था। वे झील के पानी पर तैर रहे थे।

तुरन्त ही ता चीन और शी चीन दोनों उस बुढ़िया को आजाद कराने के लिये पहाड़ की गुफा की तरफ दौड़े। उसको ले कर सब झील के पास आये क्योंकि अभी तो वहॉ भी काम बचा था।

उन्होंने सूरज और चॉद को फिर से पा तो लिया था पर उनको आसमान में फिर से रखना उनकी ताकत के बाहर था। एक बार फिर उस बुढ़िया ने उनकी सहायता की। उसने फिर एक कहानी बतायी जो उसने बहुत साल पहले कभी उसने अपनी जवानी में सुनी थी।

वह बोली — "उनका कहना है कि अगर तुम ड्रैगन की ऑखें खा लोगे तो तुमको दैवीय ताकत मिल जायेगी। और उस दैवीय ताकत से तुम सूरज और चॉद को आसमान में पहुॅचा सकोगे।"

ता चीन और शी चीन ने अपनी यात्रा में कई अजीब कहानियॉ सुन रखी थीं सो वे इस काम को करने के लिये ड्रैगन की ऑखें खाने को भी तैयार हो गये – पर यह तो वे तभी कर सकते थे जब उनको उन ड्रैगन की ऑखें मिल जातीं।

सूरज चॉद की रोशनी में उन लोगों ने ड्रैगन के सिरों को पहाड़ों पर ढूॅढना शुरू किया। उनको उन ड्रैगनों में से एक ड्रैगन का सिर झील के किनारे दो डंडों के बीच में पड़ा मिल गया सो उन्होंने उसकी दोनों ऑखें निकाल लीं और एक एक ऑख दोनों ने खा ली।

जब वह ऑख उनके पेट में घुल गयी तो उनके अन्दर बहुत ताकत आ गयी। पहले तो उनकी टॉगें बढ़नी शुरू हुईं फिर उनके शरीर और फिर उनके सिर और गर्दन। वे बढ़ते ही गये बढ़ते ही गये जब तक कि वे वहॉ के सबसे ऊॅचे पहाड़ से भी ऊॅचे नहीं हो गये।

फिर उन्होंने झुक कर सूरज और चॉद को अपने हाथों में उठाया और आसमान की तरफ ले गये। पर सूरज और चॉद तो इतने दिनों में यह भूल ही गये थे कि उनको आसमान में कैसे ठहरना था सो जैसे ही ता चीन और शी चीन दोनों ने उनको आसमान में छोड़ा तो वे वहॉ न ठहर सके और लुढ़कते हुए धम्म से नीचे गिर पड़े।

एक बार फिर बुढ़िया ने उनकी सहायता की। वह बोली — "तुम सूरज और चॉद को इन पाइन के पेड़ों की किसी मजबूत शाख पर रख दो और फिर उस शाख को पहाड़ की चोटी पर रख दो। वहॉ ये तब तक थोड़ा आराम करेंगे जब तक इनको अपना पुराना घर याद नहीं आता और ये तैरने से नहीं डरते।"

ता चीन और शी चीन ने दो बहुत लम्बे पाइन के पेड़ उखाड़े, उनके ऊपर सूरज और चॉद को रखा और उन पेड़ों को बिना किसी मुश्किल के पहाड़ की चोटी पर ले जा कर लगा दिया।

पर उस ड्रैगन की ऑख से जो उनको ताकत मिली थी उनकी वह ताकत अब धीरे धीरे खत्म हो रही थी। सूरज और चॉद तो सुरक्षित थे पर ता चीन और शी चीन छोटे होते जा रहे थे।

तीनों झील के पास बैठे बैठे धीरज से कुछ होने का इन्तजार करते रहे पर कुछ हुआ ही नहीं। सो कई घंटों के इन्तजार के बाद उन्होंने देवताओं को भेंट दी और भगवान की प्रार्थना की।

जब धुँआ आसमान की तरफ उड़ा तो सूरज और चॉद ने भी पाइन के पेड़ों से ऊपर उठना शुरू किया। वे भी ऊपर उठते ही गये, उठते ही गये जब तक कि वे आसमान में जा कर वहॉ ठहर नहीं गये।

जब तीनों ने सूरज और चॉद को आसमान में देखा तो वे बहुत खुश हुए। सूरज पूरी दुनियॉ में चमक रहा था। शाम को सूरज छिपने लगा तो चॉद आसमान में आ गया।

एक बार फिर से फसलें उगने लगीं और आदमी जानवर और पेड़ पौधे सभी तन्दुरुस्त दिखायी देने लगे।

वह बुढ़िया अपने परिवार में राजी खुशी वापस लौट गयी पर ता चीन और शी चीन झील के पास से जाने में डर रहे थे कि कहीं और दूसरे ड्रैगन फिर से सूरज औीर चॉद को न चुरा लें।

वे लोग वहीं पर रह गये। जब वे मर गये तो झील में एक बहुत ज़ोर का तूफान आया और उन दोनों के शरीर पहाड़ों में बदल गये – ता चीन पहाड़ और शी चीन पहाड़। ये दोनों पहाड़ आज भी वहॉ देखे जा सकते हैं।

हर साल गॉव वाले उनकी याद में वहॉ "सूरज और चॉद नाच" में हिस्सा लेने के लिये जमा होते हैं।

List of the Stories of “China: Myths and Legends-1”

1. Pan Ku's Creation
2. Ten Red Crows
3. Nu Wa Repairs the Sky
4. The Child No One Wanted
5. Rice From Heaven
6. The First Cat
7. Why the Sea Is Salty
8. The Water Ghost and the Fisherman
9. The Merchant's Revenge
10. The Loud-Mouthed Woman
11. Rat's Wedding
12. The Spotted Dear and the Tiger
13. Kuan Yin's Prophecy
14. Kuan Yin
15. Chang Ku Lao's Test
16. Emperor's Commands
17. Donkey's Powers
18. The Sun and Moon Lake

List of the Stories of “China: Myths and Legends-2”

19. Wang Erh and the Golden Hair Pin
20. The Wild Cat's Mistake
21. Liang Yu Ching's Punishment
22. The Child of Mulberry Tree
23. Yo Lung Mountain
24. Dragon Gate Mountain
25. The Silver Pot and the Boiling Sea
26. Five Men Mountains
27. The Story of the Cockscomb
28. The Dumb Flute Player
29. The Pagoda Tree
30. Why an Earthworm Does Not Have Eyes
31. Min River
32. Ting Ling Godess
33. The Little Fox and the Pomegranate King
34. Pai Hua Lake
35. Mad Monk
36. The Island sof Immortals
37. Into the Mouth of the Lion
38. Ma Chen and His Immortal Brush Pen

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022